



श्री

अथसुंदरदासकृत
सवैया

प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ अथसुं
दरविलासतिरव्यते॥ ॥मोजकारिगुरुदेवदया
करि॥शब्दसनायकत्वौहरिनेरो॥ज्यौसविकैप्रगटे
निसिजातसु॥दूरकीयोभ्रमभांनअंधेरो॥काय
कवायकभांनसहूकरि॥हेगुरुदेवहिंवंदनमेरो॥सुंद
रदासकहेंकरजोरिके॥दादूदयालकोहूनिनितचेरो॥
१॥पूरणब्रह्मविचारनिरंतर॥कामनक्रौधनलोभन
मोहे॥श्रौत्रत्वचारसनाअरुघ्राणसु॥देखिकछूक-
हूनेननमोहे॥ज्ञानस्वरूपअनूपनिरूपनजासुगिरा-
सुनमोहनमोहे॥सुंदरदासकहेंकरजोरिकेदादूदया
लहिमोरिनमोहे॥२॥धीरजवंतअडिगजितेंद्रियनि
र्मलज्ञानगयोद्रटआदू॥मालसंतोषक्षिमाभिनके
घट॥लागिरत्वोस्वअनाहूदनादू॥भेषनपक्षनिरंत

रत्नक्षत्र ॥ ओर नहि कछू वाद विवाद ॥ एस बल छन
 हैं जिन मां हिंस ॥ सुंदर के उर हैं गुरु दाद ॥ ३ ॥ भोजल में
 बहि जात हुते जिन ॥ काटिलिये अपने कर आद ॥ ओ
 र सदेह मिटाय दीयो सब ॥ कानन देर सन्याय के नाद ॥
 पूर्न ब्रह्म प्रकास कीयो पुन ॥ छूट गयो यह वाद विवा
 द ॥ ऐसी रूप अंजु करि हम ऊपर सुंदर के उर हैं गुरु दा
 द ॥ ४ ॥ कोई कगोरष कां गुरु या पत कोई कद न दिग
 बर आद ॥ कौ उक कंथर को ऊक भर थर ॥ कौ ऊक
 बीर कोराषत नाद ॥ कौ ऊक हैं हरि दास हमारे जु ॥
 यों करि ठानत वाद विवाद ॥ ओर तो संत सब ही
 सिर ऊपर ॥ सुंदर के उर हैं गुरु दाद ॥ ५ ॥ कोई बि
 भूत जटान पधारिक है यह भेष हमारे हे आद ॥ को
 ई कान फराय फिरे पुन ॥ कोई कसिंगी बजावत
 नाद ॥ कोई ककेसलु चाई करे व्रत ॥ कोई कजंगम के
 सिव वाद ॥ यों सब भूलि परे जित हित ॥ सुंदर
 के उर हैं गुरु दाद ॥ ६ ॥ जोगी कहे गुरु जैन कहे गु
 रु ॥ बोध कहे गुरु जंगम माने ॥ भक्त कहे गुरु न्या
 सी कहे वनवासी कहे गुरु ओर बरवांने ॥ शेष कहे गु

रुसोफिकहेंगुरुयाहीतेंसुंदरहोतहेरानें॥ बाहूक
 हेंगुरुबाहूकहेंगुरुहेंगुरुसोईसबेज्जममानें॥ ७॥
 सोगुरुदेवल्लिपेंनछिपेंकछूसत्वरजोतमतापनि
 वारी॥ इंद्रियदेहमृषाकरिज्ञानतसीतलतासमता
 ऊरधारी॥ व्यापकब्रम्हविचारअखंडितहैतऊपा-
 धिसबेजिनटारी॥ शब्दसुनायसंदेहमिटावत॥ सुं-
 दरवागुरुकीबलहारी॥ ८॥ हेगुरुकोऊरध्यानहमा-
 रे॥ पूर्णब्रम्हबतायदीयेजिन॥ एकअखंडितव्याप-
 कसारे॥ रागरुद्वेषकरेंअबकोनसें॥ जोईहेमूलसो
 ईसबडारे॥ संसयसोकमिट्योमनकोसबतत्वविचा-
 रकट्योनिरधारे॥ सुंदरसुधकीयेमलधोईकें॥ हे
 गुरुकोऊरध्यानहमारे॥ ९॥ ज्यौकपडाधस्त्रीगहि-
 व्योंततकाष्टहिकोंबटईकसिआने॥ कंचनकोजुसो
 नारकसेपुनिलोहकोघाटलोहारहिजानें॥ पाहन-
 कोंकसिलेतसिलावट॥ पात्रकुंभारकेहाथनिपाने
 ॥ तेसेंहिशिव्यकसेंगुरुदेवजु॥ सुंदरदासतबेमन-
 माने॥ १०॥ ॥ छंदमनहर॥ ॥ ऐसेगुरुदेवकों
 हमारीजुप्रनामहें॥ सत्रुहूनमित्रकोऊजाकेसबहें

समान ॥ देह को समत्व छांडि आत्मा ही राम हैं ॥ और
 हू ऊपाधि जाके कब हू न देषीयत ॥ सष के समुद्र में रह
 त आठों जाम हैं ॥ रिद्धि अरु सिद्धि जाके हाथ जोरि आ
 गे श्री ॥ सुंदर कहत ताके सब ही गुलाम हैं ॥ अधिक
 प्रसंसा हम के सें करि कहि सकें ॥ ऐसे गुरु देव कों ह
 मारे मु प्रनाम हैं ॥ ११ ॥ ज्ञान को प्रकास जाके अंध का
 र प्रयो ना स देह अभिमान जिन तज्यो जान सारधी ॥
 सोई सुख सागर ऊजागर बैरागरु ज्यों ॥ जाके बेन सु
 नत बिलात हैं बिकारधी ॥ अगम अगाध अति ॥ को
 ऊन हि जने गति आत्मा को अनुभव अधिक अपारधी
 ऐसे गुरु देव वंदनी कति हं लोक मां हो ॥ सुंदर विराज
 मान सो मत उदारधी ॥ १२ ॥ सोई गुरु देव जाके दूसरी न
 बात हैं ॥ काहू सो न रोष तोष काहू सो न राग दोष काहू सो
 न घेर भाव काहू की न धात हैं ॥ काहू सो न बकवाद का
 हू सो न संगन तो कोऊ पक्ष पात हैं ॥ काहू सो न दुष्ट बे
 न काहू सो न लें न देन ब्रह्म को बिचार कछू और न सु
 हात हैं ॥ सुंदर कहत सोई इसन को महाईस ॥ सोई
 गुरु देव जाके दूसरी न बात हैं ॥ १३ ॥ सद्य शिष्य पल

देसोसतगुरुजानीये॥ लोहकोंज्यों पारसपषांनहूँ प
 लटलेत॥ कंचनछूवत होतजगमें प्रयानीये॥ द्रुमकों
 ज्योंचंदनपलटकेलगायवास॥ आपकेसमानता
 कोंसीतलता आनीये॥ कीटकोंज्यों भ्रंगहूँ पलटके
 करतेभ्रंग॥ सोरुडिजायताको अचरजमानीये॥
 सुंदरकहतयहसगरेमसिधवातसदसिपलदेसो
 सदगुरुजानीये॥ १४॥ गुरुबिनज्ञाननाहींगुरुबिन
 ध्याननहींगुरुबिनआतमाविचारनलहतुहे॥ गु
 रुबिनप्रेमनहींगुरुबिनप्रीतनहीं॥ गुरुबिनसील
 हूसंतोषनगहतुहें॥ गुरुबिनप्यासनहींबुधीकोप्र
 कासनहींभर्महूँकोनासनाहीसंसेईरहतुहें॥ गुरु-
 बिनवाटनाहीकोडीबिनहाटनाहीसुंदरप्रगटलोक
 वेद्योंकहतुहें॥ १५॥ पढ़ेकेनबेठोपासअक्षरनबांच
 सकेबिनहीपढ़ेतेंकेसेंआवतहेपारसी॥ जोंहरिके
 मिलेबिनपरखिनजानेंकोई॥ हाथनगरियेंरहे-
 संसयनटारसी॥ वैदहुनमित्योकोउबूटीकोंबता
 यदेतभेदबिनुपायेवाकेओषदहेछारसी॥ सुंदर
 कहतमुरवरंचहूनदेरव्योआइगुरुबिनज्ञानज्योंही

अंधरेमे आरसी ॥ १६ ॥ गुरुके प्रसाद बुद्धि उत्तम
 दिसा कोंगहें ॥ गुरुके प्रसाद भवदुःख विसराइयें ॥
 गुरुके प्रसाद प्रेम प्रीत हू अधिक बाटे ॥ गुरुके प्रसा
 द रायनाम गुन गाइयें ॥ गुरुके प्रसाद सब जोग की
 जुगति जानें ॥ गुरुके प्रसाद संन्यमें समाधिलाइयें
 ॥ सुंदर कहत गुरुदेव जो कृपा लहोई तिनके प्रसाद
 तत्त्वज्ञान पुन पाइयें ॥ १७ ॥ जगमें न कोई हितका-
 री गुरुदेव सो ॥ बूडत भौ सागर में आयके बंधा वेधीर-
 पार ऊलंगाय देत नाव कों ज्यों पैव सो ॥ पर रूप गारीस
 सब जीवनि के सारे काज कब हून आवे जाके गुन नि-
 को छेव सो वचन सुनाय भय भय सब दूर करे सुंदर
 दिरवाय देत अलष अभेव सो ॥ ओर हूसने हि हमनी
 के करि देष सो धे ॥ जगमें न कोई हितकारी गुरुदेव
 सो ॥ १८ ॥ गुरुतात गुरुमात गुरुबंधु जिन गात गुरुदे
 व नरवशिष सकल संवासो हे ॥ गुरुदिये दिव्य नेन-
 गुरुदिये गुरुवबेन ॥ गुरुदेव श्रवन दे सब दऊचा स्वी
 हे ॥ गुरुदिये हाथ पाव गुरुदिये सीस भाव गुरुदेव पि
 ड माही प्राण आचडा सो हे ॥ सुंदर कहत गुरुदेव जु

ऋपालहोई फिर घाट घंडि करि मोहि निस ता सो हे
 ॥१९॥ कोऊ देत पुत्र धन कोऊ देत बल धन कोऊ देत
 राज साज देव रिषी मुन्यौ हैं ॥ कोऊ देत जं समान को
 ऊ देत रस आन कोऊ देत विद्या ज्ञान जगत में गुन्यौ हैं
 कोऊ देत रिद्धि सिद्धि कोऊ देत नव निधि कोऊ देत ओ
 र कछू तातें सीस धुन्यौ हैं ॥ सुंदर कहत एक दीयो
 जिन राम नाम ॥ गुरु से ऊदार कोई देख्यो हेन सुन्यौ
 हैं ॥२०॥ गुरु के अनंत गुन कापे कहें जात हैं ॥ भोमी
 दू कीरें की तो संख्या कोऊ कहत हैं ॥ भारहू अठार
 द्रुमतिन के जो पात हैं ॥ मेघन की संख्या सो ऊरुषि
 नै कहि बिचार ॥ बूंदन की संख्या ते ऊ आय के बिला
 त हैं ॥ तारें की संख्या सो ऊ कहि हे पुरान मांही ॥ रो
 मनि संख्या पुनि जितने क गात हैं ॥ सुंदर जहां लो जं
 तुति नही को आवे अंत गुरु के अनंत गुन कापे कहें
 जात हैं ॥२१॥ गुरु की तो महिमा अधिक हे गोविंद ते
 ॥ गोविंद के कीये जीव जात हैं रसातल को ॥ गुरु उपदे
 से सो तो छूटे जम फंद ते ॥ गोविंद के कीये जीव बस परे
 कर्मन के गुरु के निवाजे सु फिरत हैं स्वच्छंद ते ॥ गोविं

सुंदरविलास

दकेकीयेजीवबुडतभोसागरमें॥सुंदरकहतगुरु
 काटेदुःखद्वंदते॥औरहंकहांलोकछूमुःषते॥कहो
 बनायगुरुकीतोमहीमाअधीकहेगोविंदते॥२२॥
 असीकोंनभेटगुरुदेवआगेराधीये॥चिंतामनिपा
 रसकलपतरूकांमधेनुऔरहूअनेकनिधिवारि
 वारिनाषिये॥जोईकछूदेषीयेसोसकलविनासवं
 त॥बुधिमेविचारकरिबहूअभिलाषिये॥तार्तेम
 नबचनकर्मकरिकरजोरी॥सुंदरचरनसीसमेल
 दीनामाषीये॥बहूतप्रकारतीनोलोकसबसोधेह
 हस॥असीकोंनभेटगुरुदेवआगेराधीये॥२३॥म
 ह देवनामदेवजु॥रामानंदरुषानंदरूहीयेअनंतानं
 द॥सरसरानंदहूकेआनंदअछेवजु॥रैदासकबी
 रदाससोजादासपीपादासदा
 वहीकीटेवजु॥सुंदरकहतसंतप्रकटजगतमांही
 ॥तेमेगुरुदादूदासलागेहरिसेवजु॥२४॥गुरुदेव
 सर्वोपरिअधिकविराजमान॥गुरुदेवसबहीते
 अधिकगरिष्ठहैं॥गुरुदेवदत्तात्रयनारदसुकादि

हीचतुरस्वजांनपरविनअति॥परेजनिपिंजरेमोह
 कुआ॥पायउत्तमजनमलायलेचपलमनागाय
 गोविंदगुनजीतजूवा॥आपहिआपअज्ञाननलनि
 बध्योविनाप्रभुविमुखकैवारसुवा॥दाससुंदरकह
 पर्मपदतोलहे॥रामहरिरामहरिबोलसुवा॥१॥हक
 तुंहकतुंबोलतोता॥नफससैतांनकोआपनिकेदकर
 ॥क्यादुनीमेंफिरयाषायगोता॥हेगुनःगारमिगुनाही
 करतहे॥षायगामारतबफिरेरोता॥जिनतुजेषाक
 सेंअजबपैदाकीयातूंऊसेक्यौंफरामोसहोता॥दास
 सुंदरकहेसरमतबहीरहे॥हकतूंहकतूंबोलतोता
 ॥२॥भीतुहीभीतुहीबोलतूती॥आबकीबूंदऔ
 जूदपैदाकीया॥नेनसुःषनासिकाकरसंजूती॥व्या
 लऐसाकरेंउहीलीयांफिरे॥जागकेंदेषक्याकरेसू
 ती॥भूलऊसषस्मकोंकांमतेंक्याकीया॥वेगदेया
 दकरमरनिपूती॥दाससुंदरकहेसर्वसरवतोलहे
 ॥भीतुहीभीतुहीबोलतोती॥३॥एकतूंएकतूंबो
 लमेंनां॥अवलबुस्तादकेकदमकीषाकहैहिरसग
 जारसबछोडफेंनां॥यारदिलदारदिलमांहितूंयाद

करहेतुजेपासतुंदेषनेना॥जानकाजानहेजिंदका
जिंदहे॥सधुनकासधुनकछूसमऊसेना॥दाससुं
दरकहेसकलघटमेंरहे॥एकतूएकतूबोलमेंना॥४
॥॥छंदमनहर॥॥कानकेगएतेंकहाकानअसेहे
तमूढ॥नेनकेंगएतेंकहानेनएसेपाइये॥नासिका
गेएतेकहांनासिकासुगंधलेत॥मुःषकेगएतेंअसे
मुषकहांगाईये॥हाथकेगएतेंकहांहाथएसोकाम
होत॥पावकेगएतेंअसेपावकितधाइये॥याहीते
विचारदेषसुंदरकहततोहि॥देहकेगएतेंअसेदेह
कितपाईये॥५॥वारवारकह्योतोहीसावधानक्यौन
होई॥ममताकीमोदसिरकाहेकोंधरतुहे॥मेरोधनमे
रोधाममेरेरुतमेरीबांममेरेपसुमेरेगाम॥भुल्योहिफि
रतुहे॥तूतोसयोबावरोबिकायगईबुधीतेरी॥असो
अंधकूपग्रेहतामेंतूंपरतुहे॥सुंदरकहततोहीनेकहू
नआवेलाजकाजकोंबिगारकेअकाजक्यौंकरतुहे॥
६॥तेरेतोकोंपेंचपरयोगांठिअतिधूरिगई॥ब्रह्मा
आईछोरेक्योंहीछूटतनजबहू॥तेलसोंभिजोईक
रिचीथरालपेटराषेकूकरकेपूछसधेहोतनहीतबहू

सासूदेतसीषबहूकीरीकोंगिनतजाई॥५॥ ५॥
 दिनबीतगएसबहू॥सुंदरअज्ञानीअसो॥छोड्योन
 हिअभिमान॥निकसतप्रानलगचेत्योनहीकबहू॥
 ७॥वालुमाहीतेलनहीनिकसतकाहूविध॥पथर
 नभीजेबहूवर्षतघनहे॥पानीकेमथेतेंकहूंघीवनह
 पाईयत॥कूकसकेकूटेकहूंनिकसतकनहेसंन्य
 हीकीमूठीभरीहाथनपरतकछू॥ऊसरकेबोहेक
 हानिपजतअनहे॥उपदेसआषदसोंकोनविधिलगे
 ताही॥सुंदरअसाधरोगभयोजाकेमनहे॥८॥विरी
 माहीतिरेजानतसनेहीमेरे॥दारासुतविततेरोषोसि
 षोसिषायगे॥ओरहीकुटंबलोगलुटेचहूओरहीते
 मीठीमीठीबातकहीतोसोंलपटाएगे॥९॥ ५॥
 बजबकोईनहीतेरोतबअंतहीकठनबांकी १७०ज
 एगे॥सुंदरकहततातेजूठोईप्रपंचसब॥स्वमेंकीन्या
 ईसबदेषतविलांएगे॥१॥वारूकेमंदिरमांहीबेठीर
 ल्योस्थिरहोय॥राषतहेजीवनकीआसकेऊदिनक
 पलपलछीजतघटतजातघरिघरी॥बिनसतबार

मूसाइतउतफिरेताकीरहीभिन्नकी॥सुंदरकहतमेरी
 मेरीकरिभूलोसठ॥चंचलचपलमायाभईकिंनकिं
 नकी॥१०॥श्रवनलेजाईकरिनादकीलेडारेफासीनेन
 वालेजाईकरिरूपबसकस्योहेनासिकालेजायकरिब
 हूतसुंगावेगंधा॥रसनलेजाईकरिस्वादमनहस्योहे
 ॥चर्महुलेजाईकरिनारीसोंस्पर्शकरे॥सुंदरकोईकसा
 धूठगनितेंडस्योहे॥कामठगक्रोधठगलोभठगमोह
 ठगठगनीकीनगरीमेंजीयआईपस्योहे॥११॥पायो
 हेमनुष्यदेहऔसरबन्योहेआई॥एसीदेहवारवार
 कहोकहापाइये॥भूलतहेबावरेतुंअबकेसियानो
 होई॥रत्ननभ्रमुलसोतोकाहेकूठगाईये॥समझि
 विचारिकरिठगनिकोसंगत्याग॥ठगबाजिदेखीक
 रिमननंदुलाईये॥सुंदरकहततातेसावधानक्युं
 नहोई॥हरिकोभजनकरिहरिमेसमाईये॥१२॥
 घरीघरीघटतछीजतजातछिनछिन॥भीजतही
 गरीजातमाटीकेसोतेलहे॥मुक्तीकेद्वारेआईसाव
 धानक्यौंनहोई॥वारवारचढतनत्रीयाकोसोतेलहे
 ॥करिलेसक्रितहरिभजनअखंडनरयाहीमेंअंतर

परेयामेब्रह्ममेंलहे॥मनुषजनमयहजीतभावेहा
 र॥अबसुंदरकहतयामेजूआकेसोषेलहें॥१३॥देव
 तहीदेषतबूढापोदोरीआयोहें॥जोवनकोगयोराज
 ओरसबभयोसाज॥आपनीदोहाईफेरदमामोवजा
 योहेलकुटिहथियारलीयेनेनकरढाकदयेरचैतवार
 भयोताकोतंबूसोतनायोहें॥दसनगएसमांनोदखा
 नदूरकीयेजोगरीपरीसआनबिछांनोबिछायोहे
 ॥सीसकरकंपतसुसुंदरनिकाखोरिपु॥देषतहीदे
 षतबूढापोदोरीआयोहे॥१४॥देहकोनदेहकछूदे
 हकौममत्वछांडदेहतोदमामोंदियेदेहदेहजातहें
 ॥घटतोघटतघरीपरीघटनासहोत॥घटकेगाएते
 घटकीनफीरबातहें॥पिंडपिंडमांहीपिंडपिंडकोंऊ
 पावतहें॥पिंडपिंडधातपुनपिंडहिकोपातहें॥सुंद
 रनहोयजांसांसुंदरकहतजग॥सुंदरचैतन्यरूपसुं
 दरविष्यातहें॥१५॥ ॥छंदइंदवजय॥ ॥

ग्रीवत्वचाकटिहेंकटकीकचऊपलटेंअजहूरतवां
 मी॥दंतगएसुषकेउषरेनषरेनगएसुषरोषरकां
 मी॥कंपंतदेहसनेहसुदंपतसंपतजंपतहेंनिसजां

मी॥ सुंदर अंत हूँ न तज्यो न भज्यो भगवंत सुलोक
हरां मी॥ १६॥ देह घटी पग मों मी मंडे न ही ओल ठियां
पुन॥ हाथ रुईजू॥ आंषि हूना कपरे सुख ते जल सी
सह लेक टिघी चनईजू॥ ईस्वर कों कब हू न संभार
त दुःष परें तब हूई दईजू॥ सुंदर तोहि विषे सुख वंछ
त॥ घोर गे ऐपें बगे न गएजू॥ १७॥ पाई अमोल कदेह
यहे नर क्युं न विचार करे दिल अंदर॥ काम दुःख को धहु
लो भहु मोहहु लूटत हें दशहु दिशि हंदर॥ तूं अब वं
छत हे सर लोक हि कालहु पाइ परे सुपुरंदर॥ छांडि
कुबुद्धि सुबुद्धि हू दे धरि आत मराम भज्ये क्युं न सुंदर
॥ १८॥ इंद्र निके सुःष मानत हें सठ्या ही ही ते बहू ते दुः
ष पावे॥ ज्यों जल में ऊष मांस ही लीलत स्याद बंध्यो ज
ल बाहिर आवें॥ ज्यों कपि मूठन छांडत हें रस नाव स
बंध पस्यो बिल लावे॥ सुंदर क्यो पही लेन संभारत जो
गुरवाई सुकन विधावे॥ १९॥ कौन कुबुद्धि भई घट अंत
र॥ तूं अपने प्रभु से मन चोरे॥ भूल गयो विषया सुष में
सठ॥ लाल चला गिर ह्यौ अति थोरे॥ ज्यों को उकंचन
छार मिलावत ले कर पाथर सो नग फोरे॥ सुंदर यानर

देहअमोलकतीरलगीनौकाकितवारे॥२०॥दिषनकेन
 रसोभतहंजेसेंआहीअनोपमकेलिकोषंभा॥भीतर
 तोकछूसारनहीपुनी॥ऊपरलीलकअंबरदंभा॥बोल
 तहंपरनांहीकछूसुधज्यौंहिवयारतेंबाजतकुंभा॥रू
 सरहेकपिज्यौंछिनमांहीते॥याहीतेसुंदरहोतअचंभा
 ॥२१॥दिषनकेनरदीसतहें॥परिलछनतोपसुकेसबही
 हैं॥बोलतचालतपीवतषातसुवेधरवेवनजातसही
 हैं॥प्रातगाएरजनीफिरिआवतसुंदरयेनितभारव
 हीहें॥ओरतोलछनआईमिलेंसब॥एककुमीसिर
 शृंगनहीहें॥२२॥प्रेतभयोकिपिसाचभयोकिनिसाच
 रसोजितहीतितडोले॥तूंअपनीसुधभूलगयो॥सुष
 तेकछूओरकीओरहीबोले॥सोईऊपाईकरेजुंमरेप
 चिबंधनतोकबहूनहीषोले॥सुंदरजातनमेंहरिपाव
 तसोतननासकीयोमतिभोलें॥२३॥पेटतेंबाहिरहोत
 हिबालकआईकेंमातुपयोधरपीनों॥मोहबंध्योदिन
 हिदिनओरतरुनभयोत्रयकेरसभीनों॥पुत्रप्रपोत्र
 बंध्योपरिवारसुअमेंहिभांतगयेपनतीनों॥सुंदर
 रामकोनामविसारकेंआपहिआपकोंबंधनकीनों॥२४

॥ मात पिता सुत भाई बंध्यो जु वतिके कहै कहा काम करे हैं ॥ चोरिकरै बट पारिकरें कीरपी चनजी करि पेट भरे हैं ॥ सीत सहै सिरधाम सहै कहें सुंदर सोरन माऊ मरे हैं ॥ बांधिर ह्यो ममता सब सो न रया ही तें बांध्योई बांध्यो फिरे हैं ॥ २५ ॥ तेरी ही चातुरी तो ही ले बोरें ॥ तू ठग के धन और को ल्यावत ॥ तेरो ऊतो घर और ही फोरे ॥ आग लगे सब ही जरि जाई सुत दूद मरी दमरी कर जोरे ॥ हा कम को डरना हीन सूजत सुंदर एक हिवार निचोरे ॥ तू धरचेन ही आपन पाई सुत ॥ तेरे ही चातुरी तो ही ले बोरें ॥ २६ ॥ ॥ छंद मनोहर ॥ ॥ करत प्रपचइ तपंचनी के वस परखो परदारारत भैन आनत बुराई को ॥ परधन हरे परजीव की करत घात मदमांस पाई लवलेसन भलाई को होय गोहि सावत बसुष तेन आवे जाब ॥ सुंदर कहत लेषो लेतराई राई को ॥ इहां तो कीये विलास जमकीन तो ही त्रास उहां तो नही है कछू राज पोपां बाई को ॥ २७ ॥ दुनीयां को दौडता है औरत को लोडता है औजूद को मोडता है वटोई सराई का ॥ सुरगी को मोसता है बकरी को रोंसता है गरीबां

कोंषोंसताहेबेसहेरगाईका॥जुलमकोंकरताहेध
 नीसोंनडरताहे॥दोंजगकोंभरताहेषजांगांबलाई
 का॥होयगाहिसाबतबआविगानजाबकलू॥सुंदर
 कहतगुनेगारहेंषुदाईका॥२८॥करकरआयोजब
 षरषरबाढ्योनीरभरभरबाज्योढोल्हघरघरजान्यो
 हे॥दरदरदोस्योजायनरनरआगेदीनबरबरबक
 तननेंकअलसान्योहे॥सरसरसोधेधनतरतरतो
 रेपांनजरजरकाटतअधिकमोदसान्योहे॥फरफ
 रफूल्योफिरेडरडरपेनमूढहरहरहसतनसुंदरसं
 कान्योहे॥२९॥जन्मसिरान्योजाईभजनविमुखस
 व॥काहीकोभवनकूपबिनमीचमरेहें॥गहतअ
 विद्याजानसकनलनीज्यौंमूढकर्मविकर्मकरेंकर
 तनडरेहें॥आपहीतेजातअंधनर्कनीमेंवारवार
 अजहूनसंकमनमांहीअबकरेहें॥दुषकोसमोह
 अवलोककेंनआसहोई॥सुंदरकहतनरनागपास
 परेहें॥३०॥जूठोजगअंनसननित्यगुरुबेनदेषे
 आपनेंहूनेनतोऊअंधरहेंज्वानीमें॥केतेरावरा
 जारंकभयेरएचलगएमिलगएधूरमांहीआएते

कहांनीमें॥ सुंदर कहत अब ताहीन सूरत आवे
 चै ते क्यों न मूढ चित लाय हिरदां नीमें॥ भूले जन दा
 व जात लोह के सो ताव जात आव जात ए से जे से नाव
 जात पां नीमें॥ ३१॥ जग मग पगत जिस जि भजरा
 मनाम काम क्रोध तन मन घेरि घेरि भारीये॥ फूठ मू
 ढ हठ त्याग जाग भाग सुनि पुं निगुन ज्ञान आनी आन
 वारी वारी डारीये॥ गही ताही जाही से सई ससी ससु
 र नर और वात हेत तात फेरी फेर जारीये॥ सुंदर दरद
 षोई धोई धोई वार वार सार संगरंग अंग हेरि हेरि धा
 रीये॥ ३२॥ ॥ छंद दू मलीये॥ ॥ हठ जोग ध
 रीत न जात भिया हरि नाम विना सुःषधूर परें॥ सठ सो
 गं हरो छिन गत किया चरिचांम विना भूष पूरि जरे॥ भ
 ट भोग परो धन घात धीया अरिकांम किना सुःषजू रि
 मरे॥ मठ रोग करो धन घात हिया पर राम तिनां दुष
 दूर करे॥ ३३॥ गुरु ज्ञान गहे अतिलेई सुधी मन मोहत
 जे सब काज सरे॥ धरि ध्यान रहें पति षोई सुधी रन लोह
 व जेत बल ज परें॥ सुरतां न न हें हत होई रुषी तन छोह
 स जे अब आज मरे॥ पुरथां न लहें मत धोई दुःषी जन

बोहरजेजबराजकरें॥३४॥ ॥छंदमनहर॥ ॥का
 हेकोंफिरतनरभटकतठोरठोर॥डागुलकीदोरदेवी
 देवसबजानीये॥जोगजज्ञजपतपतीर्थव्रतादिकनि
 तिनहंकोफलसोऊमिथ्याईबषानीये॥सकलउपाय
 तजिएकरामरामभजियाहीउपदेससुंनिक्षिदेमही
 आनीये॥नाहीतेंसमुझिकरिसुंदरविश्वासधरि॥ओ
 रकोऊकहेंकलूताकीनहीमानीये॥३५॥ ॥छंदइंद्र
 वजय॥ ॥संतसदाऊपदेसबतावत॥केससबेसि
 रस्वेतभएहें॥तूंममताअजहूनहीछांडतमोतहू
 आयसंदेसदयेहें॥आजकेकालचलेउठमूरषतेरे
 तोदेषतकेतेगयेहें॥सुंदरक्यौंनहिरामसंभारतया
 जगमेकहोकोनरहेहें॥३६॥ ॥इतिउपदेस
 चिंतामणिकोअंगसमाप्तः॥३॥ ॥अथका
 लचिंअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइंद्रव॥ ॥संदिरमा
 लबिलायतहंगज॥ऊठददांमांदिनाइकदोहें॥ता
 तहूमातत्रीयासुतबंधवदेषधोंपामरहोतबिछौहें
 जूठप्रपंचसोराचिरह्योसठ॥काठकीपूतरीज्यौंकपि
 मोहें॥मेरीहिमेरीकहेंनितरसुंदरआंषिलगेकहीको

नकोकोहें॥१॥ एमेरेदेसविलायतहेंगजएमेरेमं
 दीरएमेरेथाती॥ एमेरेमातपितापुनिबंधवसोए
 मेरेपूतसोएमेरेनाती॥ एमेरीकामनिकैलकरेनित॥
 एमेरेसेवकहेंदिनराती॥ सुंदरवेसेंहिछांडगयोसब
 तेलजस्योसबूजीजबबाती॥२॥ भूलोकहेंनरमेरीई
 मेरीतेंदिनचारविश्रामलीयोसठतेरेकहेकछूँद्वैगई
 तेरी॥ जेसेंहीबापदादागएछांडिस्का॥ तेसेंहीतूंतजि
 हेंपलफेरी॥ मारिहेंकालचपेटअचानकहोईगरीक
 मेराषकीढेरी॥ सुंदरलेनचलेकछूँएसंगतुभूलीक
 हेनरमेरीईमेरी॥३॥ केयहदेहजरायकेंछारकीया
 किकीयाकिकीयाकिकीयाहें॥ केयहदेहजमीमही
 षाददीयाकेदीयाकेदीयाहें॥ केयहदेहरहेदिनचार
 जीयाकेजीयाकेजीयाकेजीयाहें॥ सुंदरकालअचान
 कआईलीयाकेलीयाकेलीयाकेलीयाहें॥४॥ दे
 हसनेहनछांडतहेंनरजानतहेंथिरहेयहदेहा॥ छी
 जतजायघटेदिनहीदिनदीसतहेघटकोनितछेहा॥

। . ८५

हा॥ सुंदरजानं ! हे। न.

नेहा ॥ ५ ॥ तूंकछूओरविचारतहेनरतेरोविचारध
 रयोईरहेगो ॥ कोटिउपायकरेधनकेहितभागलिष्यो
 तितनोईलहेगो ॥ भोरकेसांजघरीपलमांजसक ॥ का
 लअचानकआईगहेगो ॥ रासभज्यौनकीयोनहीसक
 कितसंदरयोंपलताईरहेगो ॥ ६ ॥ भूलिगयोहरिनामकी
 तूसठ ॥ देषधोंकोनसंजोगबन्योहे ॥ कालअचानक
 आएगहेकंठपेधोंजूठोहितनोतन्योहे ॥ छारकरें
 सबधांमकोलूटिअनादिकोअसेंहीजीवहन्योहे ॥
 कोऊनहोतसहाईकुटंबअनादिकोसंदरऐसोसुन्यो
 हे ॥ ७ ॥ बीतगएपछलेसबहीदिनआवतहेंअगलेदि
 ननेरे ॥ कालमहाबलवंतबडोरिपुसांधरह्योसिरऊप
 रतेरे ॥ एकघरीमहीमारिगिरावत ॥ लागतताहीक
 छूनहीबेरे ॥ संदरसंतपुकारकहेंसबहंपुनितोहिक
 होंअबटेरे ॥ ८ ॥ सोयरह्योकहागाफलकैकरितोसि
 रऊपरकालदहारे ॥ धामसधूमसलागिरह्योसठ ॥
 आईअचानकतोहिपछारे ॥ ज्योंबनमेंमृगकूदतफां
 दतचित्रगलेनषसोंउरफारे ॥ संदरकालडरेजिनके
 डर ॥ तांप्रभुकोंकहीक्योंनसंभारे ॥ ९ ॥ चैतनक्योंन

अचेतनओंधतकालसदासिरउपरंगाजें॥रोकिरहे
 गढकेसबद्वारनिठूंतवकौनगलिद्वैभाजें॥आईअचा
 नककेसगहेजबपाकरिकेंपुनितोहिजुलाजें॥सुंदर
 कौनसहायकरेंजवसुंडहिमुंडभराभरवजें॥१०॥तूंअ
 तिगाफलहोईरह्योसठकुंजरज्यौंकछूसंकनआनें॥मा
 यनहीतनमेअपनोंबलमतभयोविषयासुःषठानें॥
 षोसतषातसवेदिनबीततनीतअनीतकछूनहींजानें॥
 सुंदरकेहरिकारुमहारिपुदंतउपारिकुंभस्थलभांनें॥
 ११॥मातपिताजुवतीस्तवंधवआईमिल्योइनसेंस
 नबंबंधा॥स्वारथकेअपनेंअपनेंसबसोयहनांहिं
 नजानतअंधा॥कर्मविकर्मकरेतिनकेहितभारधरे
 नितआपनेंकंधा॥अंतविछोहभयोसबसेंपुनया
 हीतेंसुंदरहेजगअंधा॥१२॥ ॥छंदमनोहर॥
 ॥करतकरतधंधकछूयेजानेअंधा॥आवतनिकटदि
 नअगलेचपाकदे॥जेसेंबाजतीतरकुंदाबतहेंअचा
 नकजेसेंबकमछरीकोंलीलतलपाकदे॥जेसेंमसिका
 कीघातमकरिकरतआय॥जेसेंसापसुसककोंयसत
 गपाकदे॥चेतरेअचेतनरसुंदरसंभाररामएसेंतोही॥

कालआयलेईगोटपाकदे॥१३॥मेरोदेहमेरोगेहमेरो
 परिवारसबमेरोधनमालमेंतोबहुविधभारोहू॥मेरेस
 बसेवकहूकसकोऊमेदेनाहीमेरीजुवतीकेमेंतोअधि
 कपियारोहू॥मेरोवंसऊचोमेरोबापदादाअसेभयेक
 रतबडाईमेंतोजगतउज्यारोहू॥सुंदरकहतमेरोमेरो
 करिजानेंसठअसेनहींजानेंमेतो कालहिकोचारोहू
 ॥१४॥जबतेजनमधस्योतबहीतेभूलपरयोबालापन
 मांहीभूलोसमस्योनरुषमें॥जोवनभयोहेंजबकांसव
 सभयोतबजुवतीसोएकमेकभूलिरह्योसरुषमें॥पुत्र
 हप्रपोत्रभएभूल्योतबमोहबांधचिंताकरिकरिभूल्यो
 ॥जानेंनहींदुःषमेंसुंदरकहतसठतीनोंपनमांहीभू
 लो॥भूलोभूलोजाइपरयो कालहीकेसुषमें॥१५॥ऊ
 ठतबेठतकालजागतसोवतकालचलतफिरतकाल
 कालउरुधरयोहें॥कहतसनतकालपातहूपीवतका
 लकालहीकेगालमांहीहरहरहस्योहें॥तातमातबंधु
 कालसतदारागृहकालसकलकुटुंबकालकालजाल
 फस्योहें॥सुंदरकहतएकशमबिनसबकालकालही
 कोकतकीयोअंतकालप्रस्योहें॥१६॥जबतेजनम

लेततबहीतेआयुघटे॥माईसोकहतमेरोबडोहोत
जातहें॥आजओरकालओरदिनदिनहोतओर॥दो
स्योदोस्योफिरतषेलतअरुषातहें॥बालापनबीत्यो
जबजोबनलग्योहेंआई॥जोवनहूबीतेबूढोडोकरो
दिषातहें॥सुंदरकहतअसेंदेषतहीबूझिगयो॥तेल
घटगाएजेसेंदीपकबूझातहें॥१७॥सबकोऊअसेंकहें
कालहमकाटतहें॥कालतोअपंडनाससबकोकरतु
हें॥जाकेभयब्रह्मापुनहोतहेंकंपायमानजाकेभयअ
सुरसुरइंद्रऊडरतुहें॥जाकेभयशिवअरुशेषनागती
नोंलोककेईककल्पबीतेलोमसपरतुहें॥सुंदरकहतन
रगरबगुमानकरें॥तूंतोसठपलपलकनिमेंमरतहों
॥१८॥कालसोनबलवंतकोऊनहीदिषीयत॥सबकों
करतअंतकालमहाजोरहें॥कालहिकोडरसुनिभग्यो
मूसापेकंबरजहांजहांजाईतहांतहांवाकौघोरहेंकाल
भयांनकभयभीतसबकीयेलोकस्वर्गमृत्पतालमें
कालहीकोसोरहें॥कालहीकोकालएकसुंदरअखंड
ब्रह्मवासौंकालडरेजोईचल्योवहीओरहें॥१९॥वरषा
भएतेजेसेंबोलतभंभीरीस्वरघंडनपरतकहूनेकहूने

जानीयें॥ जेसें पुंगी बाजत अषंडस्वर होत पुनि ताहू
 में न अंतर अने करागगां नियों॥ जेसें कोई गुडी को चढा
 वत गगन मांही ताहू की की सुधुनी सुनी वेसें ही बषांनी
 यें॥ सुंदर कहत तेसें काल को प्रचंड वेग रात दिन चल्यो
 जाई अचरज मानीयें॥ २०॥ माया जोर जोर नर राष तज
 तन करि कहत हें एक दिन मेरे कांम आइ हें॥ तो ही तो म
 रत कछु वार नही लागे सठ देष तही देष तब लू ला सो
 बिलाई हें॥ धन तो धर्यो हीर हे चलत न कोडी गहेरी ते
 हाथ निसें जे सो आयो ते सो जाई हें॥ करी ले सकत य
 ह बरीयां न आवें फिरि सुंदर कहत नर पुं निपछताई हें
 ॥ २१॥ बावरो सभयो फिरें बावरी ही बात करें बावरो =
 ज्यो देत वायू लागत बुरा नो हे॥ माया को उपाय जानें मा
 या की चातुरी ठानें॥ माया मे मगन अति माया लपटा
 नो हे॥ जो वन के मदमा तो गिनत न कोऊ ना तो काम व
 स कामनी के हाथ हि बिकां नो हे॥ अतहि सभयो बेहाल
 सृजत न माये काल सुंदर कहत असे सो ओर को दिवां
 नो हे॥ २२॥ जूठो धन जूठो धांम जूठो सष जूठो कां
 म जूठो देह जूठो नाम धरी के भुलायो हे॥ जूठो तात

जूठीमातजूतेस्ततदारात्रांतजूठोहितमांनमांनजू
 ठोमनलायेहे॥जूठोलेनजूठोदेनजूठोमुःषबोलेबे
 नजूठेजूठेकरेफेनजूठीहीकोंधायेहे॥जूठहीमेंअते
 मयोजूठहिमेंपचगयो॥सुंदरकहतसाचकबहूनआ
 योहे॥२३॥ दीर्घाक्षर॥जूठेहाथीजूठेघोराजूठाआ
 गेजूठादोराजूठाबांध्याजूठाछोराजूठाराजारांनीहें॥
 जूठीकायाजूठीमायाजूठाजूठेधंधेलायाजूठामूआ
 जूठेजीयाजूठीयाकीबांनीहें॥जूठासेवेजूठानगेजू
 ठाजूजेजूठाभागेजूठापीछेजूठाआगेजूठेजूठीमांनी
 हें॥जूठालीयाजूठादीयाजूठाषायाजूठापीयाजूठा
 सोदाजूठाकीयाअसाजूठाप्रांनीहें॥२४॥जूठयोवंध्यो
 हेजालताहीतिंग्रसतकालकालविकरालव्यालसब
 हीकोंषातहे॥नदीकोप्रवाहचल्यौजातहेंसमुद्रमांही
 तेसेंजगकालहीकेमुःषमेंसमातहे॥दिहसोममत्व
 तातेंकालकोभैमांनतहेज्ञानउपजेतेवहीकालहूवि
 लातहे॥सुंदरकहतपरिब्रह्महेसदाअखंडआदीम
 ध्यअंतएकसोईवहरातहें॥२५॥ ॥छंदइंद्रवज्र
 ॥ ॥कालउपावतकालषपावतकालमिलावतहेग

हीमाढी॥ कालहलावत कालचलावत कालसिषा
 वत हे सब आढी॥ कालबुलावत कालभुलावत का
 लडुबावत हेवनघाढी॥ सुंदर कालमिटेज बहीपुंनि
 ब्रह्मविचार पढेज बपाढी॥ २६॥ ॥ इति श्रीका
 लचिंतामणिको अंग समाप्तः॥ अंग ३ ॥ ॥ ॥
 अथ देह आत्मा बिछोह कौ अंग प्रारंभः॥ ॥ सुंद
 र इन्द्रवज्र॥ ॥ बोलत हो सुकहांगयो पंषी वेश्रवनांर
 सनां मुःषवे से हीवे से हीना सिकावे से हिं अंषीवे कर
 वे पगवे सब द्वार सवे नषसी सहीरों म अ संषी॥ वैसे
 ही देह परिपुं नी दी सत एक विना सब लागत पंषी॥ सुं
 दर को उन जां नि स केय ह बोलत हो सकहांगयो पंखी
 ॥ १॥ षेल गयो इक षेल सुध्याली॥ बोलत चालत पीव
 त पावत सीचत हे दुम को जे से माली॥ लेत हू देत हू देष
 तरी फुत तोर न तां नव जावत ताली॥ जामही कर्म विक
 र्म की ये सब हेय ह देह परी अबहाली॥ सुंदर सो कित हू
 न ही दी सत षेल गयो इक षेल सोध्याली॥ २॥ मात पि
 ता जुवति सत बंधव लागत हे सब को अति प्यारो॥ लो
 क कुटुंब धरो हित राखत होई न ही हम ते कहुं न्यारो॥ दे

हसनेहतहांलगुजांनहूबोलतहेसुषसब्दऊचारो॥सुं
 दरचैतनशक्तिगईजबवेगिकहेंघरवारनिकारो॥३
 ॥रूपभलोतबहीलगदीसतजोलगबोलतचारुत
 आगे॥पीवतषातसुनेअरुदेषतसोईरहेउठिकेपुं
 निजागे॥मातापिताभईयामिलिबैठत॥प्यारकेंजु
 वतिगरलागे॥सुंदरचैतनशक्तिगईजबदेषतताही
 सबेडरभागे॥४॥ ॥छंदमनोहर॥ ॥कोनभांत
 करतारकियोहेंशरीरयह॥पावककेमांहीदेषोपानी
 कोजमावने॥नासिकाश्रवननेनवदनरसनबेनहाथ
 पावअंगनषशिषकोबनावनों॥अजबअनूपरूपच
 मकदमकओपसुंदरसोभतअतिअधिकसहावनों
 ॥जाहिछिनचैतनशक्तिजबलीनहोई॥ताहीछिनल
 गतहेसबकोअभावनों॥५॥मृतकाकोपिंडदेहताही
 मेजुगतिभई॥नासिकानयनमुषश्रवनबनायेहें॥सी
 सपांवहाथअरुअंगुरीविराजमानअंगुरीकेआगेपु
 निनषहूल्गायेहें॥पेटपीठछातीकंठचिबुकअधरगा
 लदसनरसनवहूबचनसनायेहें॥सुंदरकहतजब
 चैतनासगतिगईवहेदेहजारीवारीछारकरीआए

हैं॥६॥देहतो प्रगटय हज्यो की ल्यों ही जानीयत॥ने
 न के ऊरोषे मांही जाषत न देषीये॥ना क के ऊरोषे मांही
 ने क न सुवासलेत कां न के ऊरोषे मांही॥सुनत न लेषी
 यें॥मूःष के ऊरोषे में न बचन उचार होत॥जीभ हू को
 षट् रस स्वादन विसेषीये॥सुंदर कहत कोउ कौन वि
 धि जानें ताही॥पीरो कारोका हूकार जानो हू न पेषीये॥
 जमात तो पुकारे छाती कूटि कूटि रोवत हैं॥बाप हू कह
 त मेरो नंदन कहांगयो॥भईया हू कहत मेरी बांह आज
 दूर भई॥बहन कहत मेरी वीरदुःष देगयो॥कामनी क
 हत मेरी सीस सिर ताज कहा॥उनत काल हाथ हिमें सो
 धो राल ल्यो सुंदर कहत कोउ ताही नहि जानी सकेंबो
 लत हुतो सोय ह छिन्न में कहांगयो॥८॥रज अरु वीर
 ज को प्रथम संजोग भयो॥चेतना संगति तब कोन भां
 ति आई हैं॥कोऊ एक कहें बीज मध्यहि कीयो प्रवेश
 किं हू क पंचमास पीछे के सुनाई हैं॥देह को विजोग ज
 ब देषत ही होई गयो॥तब कहो कोन कहां जायिके समा
 ई हैं॥पंडित रिषि स्वरत पेस्वर मुनी स्वर कुं॥सुंदर कह
 त यह किं न हू न पायि हैं॥९॥तब लो हीं क्रिया सब होत

हैंविवधभांतिजबलगंधटमांहीचैतन्यप्रकासहे॥दे
हकेअसक्तभयेक्रीयासबथकीजाय॥जबलगंधासा
चलेतबलगआसहे॥स्वासहूथक्योहेजबरोवनलगे
हैंतब॥सबकोऊकहेअबभयोघटनासहे॥काहूनहीदे
धोकिहिवोरकोनकहांगयो॥सुंदरकहतयहीबिडोईत
मासहे॥१०॥देहतोस्वरूपतोलोंजोलोंहेअरूपमांही॥
सबकोऊआदरकरतसनमानहे॥टेठीपांगवांधिबार
बारहीमरोडेमूछबाहूऊसकारेअतिधरतगुमानहे॥दे
सदेसहीकेलोकआयकेहजूरहोई॥बैठकरितषतकं
हावेसुलतानहे॥सुंदरकहतजबचैतनांसगतिगईऊ
हेदेहताकीकोऊमानतानआनहे॥११॥ ॥इतिदेहआ
त्माबिछोहकौअंगसमाप्तः॥ अंग४॥ ॥छु॥ ॥छु॥
॥अथत्रहठांकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइंदवा॥ ॥नेंन
नकीपलंहीपलमेंक्षणआधघरीघटिकाजुगईहें॥जां
मगयौजुगजांमगयौपुंनसाऊगईतबरातभईहें॥आ
जगईअरुकाऊगईपरसोंतरसोंकलूओरठईहें॥सुं
दरएसेंहीआयगईत्रसमादिनहीदिनहोतनईहें॥१॥
कनहीकनकोंविरुलातफिरेंसठजाचतहेंजनहीजन

कों॥ तनही तनकों अतिसोचकरे नरषे तरहे अनही
 अनकों॥ मनही मनकी त्रसनां नमिटी॥ पुंनिधांवत
 हें धनही धनकों छिनहि छिन सुंदर आयु घटी॥ कबहु
 न गयो बनही बनकों॥ २॥ तेरी तो भूषन क्यों ही भगे
 गी जो दस बीस पचास भएसत होई हजार तो लाख म
 गेगी॥ कोटि अरब षरब असंघ प्रथि पति हो न की चाह
 जगेगी॥ स्वर्ग पताल को राज करो त्रसना अधिकी अति
 आगल गेगी॥ सुंदर एक संतोष विना सठ तेरी तो भूष
 क दिन भगेगी॥ ३॥ लाष करो ड अरब षरब निनी लपट
 मत हां लग पाटी॥ जोर हि जोर भंडार भरे सब॥ ओर र
 ही सजमी तर डाटी॥ तो हून तो ही संतोष भयो सठ सुंद
 र ते त्रसनां नहि काटी॥ सूजत नां हिंन काल हितो सिरमा
 रिकें थापमिलाइ तमाटी॥ ४॥ भूषली एद सहू दिसि
 दोर तताही तें तूंक बहून अघै हैं॥ भूष भंडार भरे नहि के
 सें हू जो धन मेर कुमेर लों पै हैं॥ तूं अब आगे ही हाथ प
 सारत याही ते हाथ कछून ही ऐ हैं॥ सुंदर क्यों न ही तो
 ष करे नर पाई कें पाई कि तोई कषे हैं॥ ५॥ भूषन चाव
 तरं क हिराज ही भूषन चाई के विसु बिगोई॥ भूषन वा

ईकेविसुबिगोई॥भूषनचावतइंद्रकराकरऔर
अनेकजहांलगजोई॥भूषनचावतअर्धहीउर्धही
तीनहूलोकगिनेंकहाकोई॥सुंदरजाईतहांदुःषही
दुःषज्ञानविनानकहूंसुःषहोई॥६॥हेत्रसनांहज
हूंनहीधापी॥पेटपसारदीयोजितहीतितनेंयहभू
षकितीएकथापी॥बोरनछोरकछूनहिआवतमें
बहुभांतभलीविधमापी॥दिषतदेहभयेसबजीरन
॥तूनिननौतनआहीअद्यापी॥सुंदरतोहीसदासन
जावतहेत्रसनांहजहूंनहीधापी॥७॥हेत्रसनांहज
हूनअघांनी॥तीनहूलोकआहारकीयौहेंसुसांतस
मुद्रपीयोसबपांनी॥औरजहांतहांताकतडोलतका
ढतआंषडरावतप्रांनी॥दांतदिषावतजीमहलावत
याहीतेमेंयहडाकनीजांनी॥सुंदरषातभयेकितनेंदि
नहेत्रसनांहजहूनअबांनी॥८॥हेत्रसनांकहूछेहनते
रोषावपतालपरेगएनीकससीसगयोअसमानअघे
रो॥हाथदसोदिसिकोंपसरेपुंनिपेटभरेनसमुद्रसुमे
रो॥तीनहूलोकलीएमुषभीतरआंषिहूकानबंधेचहूं
फेरो॥सुंदरदेहधस्यौअतिदीरघहेत्रसनांकहूछेहन

तेरो ॥९॥ हे त्रसनां अब तो कर तोषा ॥ वादग्रथा भटके
 नि सिवा सरदूर कीयो कब हून ही धोषा ॥ तूं हतीयारनि
 पापनि कोठ नि साच कहूं मत मान हूरोषा ॥ तोई मिलेंत
 बतें होई बंधन तूं मरि हेत बही होई मोषा ॥ सुंदर और
 कहा कही ये तुही हे त्रसनां अब तो कर तोषा ॥१०॥ हे त्र
 सनां अब तो मति डोले क्यैं जगमां ही फिरे जषमार तस्वा
 र्थ को न परिज ही जोले ॥ ज्यौ हरिहार गऊ न हीं मान तदू
 ध दोहो कछू सो पुन ठोले ॥ तूं अति चंचल हाथ न आ
 वत नीक सजाई न ही मुःष बोले ॥ सुंदर तोहि कही बेर
 केतिक हे त्रसनां अब तूं मत डोले ॥११॥ हे त्रसनां क
 ही के तो ही था क्यैं ते कोई कान धरी न ही एक हू बोलत बो
 लत पेट ही पाक्यो ॥ हूं कोई बात बनाई कहों जब ते तब
 पीसत ही सब फाक्यो ॥ केते कद्यो सभ ए पर बोधत ते
 अब आगे ही को रथ हाक्यो ॥ सुंदर सीष गई सब ही च
 ली हे त्रसनां कही के तो ही थाक्यो ॥१२॥ हे त्रसना तो ही
 ने कुन लाजा तू ही अमाय प्रदेस पठावत बूडत जाय स
 मुद्र हिजाजा ॥ तूं ही अमाय पहार चढावत वादग्रथा म
 रिजाई अकाजा ॥ ते सब लोक अमाय भली विध भांढ

कीयेसबरकहूँराजा॥ सुंदरतोहीदुषाईकहोंअब
 हेत्रसनांतोहीनेकुनलाजा॥१३॥ ॥इतित्रछाको
 अंगसमाप्तः॥ अंग५॥ ॥अथधीर्जउराहने
 कोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइंद्रवजय॥ ॥पावदी
 येचलनेफिरनेंकहूँहाथदीयेहरिकृत्यकरायो॥कां
 नदीयेसुनियेहरिकेजस॥नेनदीयोतिनमार्गदिषा
 यो॥नाकदीयेमुषसोभतताकरिजीभदईहरिको
 गुनगायो॥सुंदरसाजदियेपरमेस्वरपेटदीयोपर
 पापलगायो॥१॥कूपभरेअरुवावभरेपुनतालभरे
 वरषारितुतीनों॥कोढीभरेघटमाठभरेघरहाटभरेस
 बहीभरिलीनों॥षंदकषासबषारभरेपरिपेटभरे
 नवडोदरदीनों॥सुंदररीतोईरीतोरहेयहकौनषडा
 परमेस्वरकीनों॥२॥ ॥कवत॥किधोपेटचूलोकि
 धोभाठिकीधोभारआहीजोईकछूजोकीयेसुसबै
 जरिजातुहे॥किधोपेटथलकिधोबाविकिधोसाग
 रहेजितोजलपरेतितोसकलसमातुहे॥किधोपेटदे
 तकिधोभूतप्रेतराषसहे॥षाउंषाउंकरेकछूनेकनअ
 घातुहे॥सुंदरकहतप्रभुकोनपापलायोपेटजबही

जनमभयोतवहीकोषातुहें॥३॥विग्रहतोविग्रहक
 रतअतिवारवारतनपुनितनकनकबहूंअघायोहे॥
 घटनभरतक्योहीघट्योहीरहतनितसरीरसिराईमे
 तोकबूवनषायोहे॥देहदेहकहतहीकहतजनमवी
 ल्योपिंडपिंडकाजनिसदिनललचायोहे॥पुदगलग
 लतगलतनअपतहोई॥सुंदरकहतवपुकोनपापला
 योहे॥४॥एकपेटकाजएकएककोआधीनहें॥पाजी
 पेटकाजकोटवालकोआधीनहोई॥कोटवालसोतो
 सिकदारआगेदीनहें॥सिकदारदीवानकेपीछेलग्यो
 डोलेपुन॥दीवानहूजायपातसाहआगेदीनहें॥पात
 साहकहेयाबुदामुजेओरदेईपेटहीपसारेंनहीपेटव
 सकीनहें॥सुंदरकहतप्रभुभ्योहीनहीभरेंपेट॥अक
 पेटकाजएकएककोआधीनहें॥५॥तंतोप्रभुपेटदीयो
 जगतनचायोजिनपेटहीकेलीयेघरघरद्वारफिस्योहे
 ॥पेटहीकेलीयेहाथजोरीआगेठाढोहोईजाईजोईक
 द्योसोईसोईऊनकर्योहे॥पेटहीकेलीयेपुनमेंघसीत
 घामसहेपेटहीकेलीयेजाईरनमांहीमर्योहे॥सुंदरक
 हतईनपेटसबभांडकीये॥ओरगलेछूटेपरिपेटगेल

पस्थोहे॥६॥पेटसोनबलीजाकेआगेसबहारचलेरा
 वअरुंरंकएकपेटजीतीलीयेहें॥कोऊवाघमारतविडा
 रतहेंकुंजरकोंअसेसूरवीरपेटकाजप्रानीदीयेहें॥जं
 त्रमंत्रसाधतआराधतमसानजाईपेटआगेडरतनड
 रअसेहीयेहें॥देवताअस्त्रभूतप्रेततीनोंलोकपुंनिसुं
 दरकहतप्रभुपेटजेरकीयेहें॥७॥प्रातहीऊठतजब
 पेटहीकीचिंतातबसबकोऊजातुआपुआपकेअहार
 को॥कोउअनधातपुंनिअमिषभषतकोऊकोऊधास
 चरतचरतकोऊदारकों॥कोऊमोतीफलकोऊवासरस
 पयपांनकोऊपौंनपीवतभरतपेटभारकों॥सुंदरकह
 तप्रभुपेटहीअमाएसबपेटतुमेंदीयोहेजगतहोंनष्वा
 रकों॥८॥ ॥छंदइंद्रवज्र॥ ॥पेटसोओरनही=
 कोईपापी॥पेटकेकारनजीवहतेबहुपेटहीमांस
 षषेरुसरापी॥पेटहीलेकरचोरिकरावत॥पेटही
 कोंगठरीगहीकापी॥पेटहीपासगरेमहीडारतापेट
 हूडारतकूपरूवापी॥सुंदरकाहेकोंपेटदीयोप्रभु॥पे
 टसोओरनहीकोईपापी॥९॥ओरनकोंप्रभुपेटदिये
 तुम॥तेरेतोपेटकहूंनहीदीसे॥एभटकाईदीयेदस

हूदीस ॥ कोऊकरांधत कोऊकर्पासे ॥ पेटहीकारनना
 चतहेंसबज्योंघरहीघरनाचतकीसे ॥ सुंदरआपन
 षावहूपीवहूकोनकरीइनऊपररीसे ॥ १०॥ ॥ छंदमन
 हर ॥ ॥ पेटनहूतोतोप्रभुबैठेहमरहते ॥ काहेकों
 काहूकेआगेजायकेआधीनहोई ॥ दीनदिनबचन
 उचारमुःषकहते ॥ जिनकोंतोमदअरुगर्वगुमान
 अतितिनकेकठोरबेनकबहूंसहते ॥ तुंमारेइभज
 नसोंअधिकलैलीनअतिसकलकोंत्यागिकेएकांत
 जाईगहते ॥ सुंदरकहतयहीतुमहीलगायोपाप ॥
 पेटनहूतोतोप्रभुबैठेहमरहते ॥ ११॥ पेटहीकेवस
 प्रभुसकलजिहानहे ॥ पेटहीकेवसरंकपेटहीकेवस
 रावपेटहीकेवसअोरषानसकलतानहें ॥ पेटहीकेवस
 जोगीजंगमसन्यासीशेष ॥ पेटहीकेवसवनवासीषा
 तपानहें ॥ पेटहीकेवससिधसाधकसुजानहें ॥ सुं
 दरकहतनहीकाहूकोगुमानरह ॥ पेटहीकेवसप्र
 भुसकलजिहानहें ॥ १२॥ ॥ इतिधीर्जउराहने
 कोअंगसमाप्तः ॥ ॥ अंग६॥ ॥ छुं ॥ ॥ छुं ॥
 अथविस्वासकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंद्रवज्र ॥

॥ होई निचिंत करे मत चिंत ही ॥ चांच दई सोई चिंत करे ॥ गोपाव पसार परयो किंन सोवत ॥ पेट दीये सोई पेट मरेंगो ॥ जीव जिते जल के थल के पुनि पाहन में पहूंचा यधरेंगो ॥ मूष ही मूष पुकारत हेनर सुंदर तूंकहा मूष मरेंगो ॥ १ ॥ धीरज धारि विचार निरंतर तो हीरच्यो सो ते तें आपुही अहे ॥ जेतक मूष लगी घट प्रांन हि ॥ तेति कतूं अनयास ही पैहे ॥ जो मन मेत्र सनां करि ध्यावत तो तिहूं लोक न पात अघैहे ॥ सुंदर तूं मत सोच करे कछू ॥ चंच दई जिंन चूंन ही दईहे ॥ २ ॥ नेकुन धीरज धारत हे नर आतुर होई दसो दिस ध्यावे ॥ ज्यो पक्षे च तोडावत बंधन ज्यो लगिनी रनीर अहार न आवे ॥ जानत नाहीं महामती सुरष जाघर द्वार धनी पहूंचावे ॥ सुंदर आप कीयो घट भांजन सो भरि हे मत सोच उपावे ॥ ३ ॥ भांजन आप घडे जितने भरि हे भरि हे भरि हे भरि हे जु ॥ गावत हे जिन के गुन कोटि रिहे ढरि हे ढरि हे ढरि हे ढरि हे जु ॥ आदि हू अंत हू मध्य सदा हरि हे हरि हे हरि हे हरि हे जु ॥ सुंदर दास सहाय राही करि हे करि हे करि हे करि हे जु ॥ ४ ॥ काहे कोंदोर तहे दस हू दिस तूनर देषि कीयो हरिजू को ॥ बे

ठिरहेदुरिके सुषमूँदि उधारत दांत षवाई हेटू को ॥ ग
 र्भथके प्रतिपाल करि जिनि होई रह्यौ तब ही जव ही जड
 मूको ॥ सुंदर क्यौं विललात फिरे अबराष रिदे विसवास
 प्रभूको ॥ ५ ॥ जादि न ते अमवास तज्यौ नर आई आहार
 लीयो तब ही को ॥ पात ही पात भए इतने दिन जानत ना
 हीन भूलू कही को ॥ दोरत ध्यावत पेट दिषावत तूं सठ
 कीट सदा अनही को ॥ सुंदर क्यौं विसवास नराष तसो
 प्रभु विस्वभरे कब ही को ॥ ६ ॥ षेचर भूचर जे जल के च
 र देत अहार चराचर पोषे ॥ वे हरि जु सब को प्रतिपा
 लत ज्यौं जिहि मांति तिसी विध तोषे ॥ तूं अब क्यौं वि
 सवास नराष त भूलत हे कित धोषे हि धोषे ॥ तो हित हां
 पहुंचाय रहे प्रभु सुंदर बेठिर हें किन ओषे ॥ ७ ॥ ॥ छं
 द मन हर ॥ ॥ काहे को बधूरा भयो फिरत अज्ञानी नर
 तेरो तोरि जके तेरो घर बेठे आय हें ॥ भावे तु स्मरे जाई
 भावे जाई मारु देस ॥ जितनो कभाग लिख्यो तितनो क
 पाई हें ॥ कूप मां ऊभरि भावे सागर के तीर भरि जितनो क
 भाडो नीर तितनो समाई हें ॥ ताही ते संतोष करि सुंदर
 विस्वास धरी जितनो रच्यौ हे घट सोई अमराई हें ॥ ८ ॥ का

हीकोंफिरतनरदीनभयोघरघरदेधीयततेरोतोअ
हारइकसेरहे॥जाकोदेहसागरमेंसुमोसतजोजन
कोताहूकोंतोदेतप्रभुयामेनहीफेरहे॥भूष्योकोऊ
हतनजांनीयेजगतमांहीकीरीअरुकुंजरसबनिही
कोदेरहे॥सुंदरकहतविसवासक्यैंनरांवेसठवार
वारसमुजायकहोकेतीवेरहे॥९॥तिरेतोअधीरज
तूंआगलीहिचिंतकरें॥आजतोभरखौहेपेटकालके
सीहोईहें॥भूषोईपुकारेंअरुदिनउठिषातेजाई॥अ
तिहीअज्ञांनीजाकीमतिगईषोईहें॥ताकोंनहीजाने
सठजाकोनामविस्वभरजहांतहांप्रगटंसबनिदेत
सोईहें॥सुंदरकहततोहीवाकोतोभरोसोनहीएक
विसवासविनयाहीभांतिरोईहें॥१०॥दिषधोसकल
विस्वभरतभरनहार॥चूंचकेसमानचूनसबहीकोंदे
तहें॥कीटपक्षपंथीअजगरमछकछपुनउनकेन
सोदाकोऊनतोकलूषेतहें॥पेटहीकेकाजरातदिवस
भ्रमतसठमेतोजान्योंनीकेकरीतुंतोकोउपेतहें॥मा
नुषसरीरपायकरतहेंहायहायसुंदरकहतनरतेरे
सिररेतहें॥११॥तूंतोभयोबावरोउतावरोफिरतअ

तिप्रभुकोविस्वासगहीकाहेनरहतुहें॥तेरेतोरिजक
 हैंसोआईहेंसहजमांही॥योंहीचिंताकरिकरिदेह
 कोदहतुहें॥जिनयहनषसिषसजिकेसंवास्थोहेतो
 हीअपनेकीयेकीवहलाजकोंवहतुहें॥काहेकोअ
 ज्ञानीकलूसोचमनमांहीकरेंभूषोतूंकदेनरहेंसुंदरक
 हतुहें॥१२॥जगतमेंआईकेंविसाखोहेजगतपतिज
 गतकीयोहेसोईजगतभरतुहें॥तेरेनिसदिनचिंता
 ओरहीपरिहेआईउद्यमअनेकभांतीभांतीकेकरतु
 हैं॥इतउतजायकेंकमाईकरिल्यांऊंकलूनेकुनअज्ञां
 नीनरधीरजधरतुहें॥सुंदरकहतएकप्रभुकेविस्वा
 सबिनंवादहीकोंअथासठपचिकेंमरतुहें॥१३॥ ॥इ
 तिविस्वासकोअंगसमाप्तः॥अंग७॥ ॥धृ॥ ॥धृ॥
 ॥अथदेहमलीनताप्रवप्रहारकोअंगप्रारंभः॥
 देहतोमलीनअतिबहुतविकारभरिताहूमांहीजरा
 व्याधिसबदुःषरासीहें॥कबहुकपेटपीरकबहुंकसि
 रवायकबहुकआंषकांनमुःषमेंविथासीहें॥ओर
 हूअनेकरोगनषशिषपूररहेंकबहुकस्वासचलेंक
 बहूंकषासीहें॥असोयाशरीरताहीआपनोंकेमान

तहें॥ सुंदर कहत या में को न सुख वासी हें॥ १॥ जाश
रीर मांही तूं अनेक सुख मान रह्यौ॥ ताही तूं विचार या
में को न यात मली हें॥ मेद मंजा मांस रगरग मेरगत भ
स्यो पेट हू पितारी सी में ठोर ठोर मली हें॥ हाड निसों भ
स्यो मुष हाड निके ने न ना कहा थपव सो उस बहाड नी
की नली हें॥ सुंदर कहत या ही देषी जिन मूले कोई सीत
र भिंगार भरी ऊपर तो कली हें॥ २॥ ॥ छंद इंद्र वजय
॥ ॥ हाड को पिंजर चाम मढ्यौ सब मांही भर्यौ मल मु
त्र विकारा॥ थूकर लाल परें मुष तें पुं नी व्याधी वहें स
ब ओर हू द्वारा॥ मांस की जीभ सों पाय सबे कछू ताही
तें ता को हें को न विचारा॥ असे सरीर में पै सिके सुंदर
के से के की जीयें सौ च अचारा॥ ३॥ काहे को तूं नर चाल
त ढेढो थूकर लाल भस्यो मुष दी सत आषि मेगी डरना
क में सेढो॥ ओर उद्धार मली न रहें अति हाड के मांस के
भीतर बेढो॥ असे सरीर में वास कियो तब ऐक से दी
सत ब्राह्मन ढेढो॥ सुंदर गर्व कहाइ तनें पर काहे को तूं
नर चाल त ढेढो॥ ४॥ आपुनी आदी विचार तनां ही
जाहि न गर्भ संजोग भयो जब ता दिन बूंद छियाहूनी

ताही॥ द्वादसमासअधोमुःषजूलतबूडरह्योपुनिवा
 रसभांही॥ तारजबीरजकीयहदेहतुंतोअबचालतदे
 षतछांही॥ सुंदरगर्वगुमानकहासठआपुनीआदी
 विचारतनांही॥ ५॥ ॥ इतिदेहमलीनताग्रवप्रहार
 कोअंगसमाप्तः॥ अंग८॥ ॥ ध्रु॥ ॥ ध्रु॥ ॥ ध्रु॥
 अथनारीनिंद्याकोअंगप्रारंभः॥ ॥ छंदमनहर॥
 कामनिकोतनमानोकहीयेसघनवनऊहांकोऊजाये=
 सोतोभूलेहिपरतुहें॥ कुंजरहंगतिकटिकेहरिकोभय
 जामेबेनीकालीनागनीऊफनिकोंधरतुहें॥ कुचहेंपहा
 रजहांकामचोररहेंतहांसाधिकेकटाक्षबांनप्रानकोंह
 रतुहें॥ सुंदरकहतएकओरडरजांमेअतिराक्षसीव
 दनषांउषांउहीकरतुहें॥ १॥ विषहीकीसोंमीमांहीविष
 केअंकुरभएनारीविषवेलिबढीनषसिषदेषीये॥ वि
 षहीकेजरमूलविषहीकेडारपातविषहीकेफूलफल
 लागेजबिसेषीये॥ विषकेतंतुपसारउरऊईआंटी
 मारसबनरब्रषपरलपटहीलेषीये॥ सुंदरकहत=
 कोऊसंततरुवचिगयोंतिनकेतोक्हुंलतालागीनही
 पेषीये॥ २॥ उदरमेंनरकनरकअधद्वारनिमेंकुचनि

मेंनरकनरकभरिछातीहैं॥कंठमेंनरकगालचिंबुक
 नरकबिंबमुःषमेंनरकजीभलालहूचुचातीहैं॥नाक
 मेंनरकआंषकांनमेंनरकवहेंहोथपावनवशिषनर
 कदिषातीहैं॥सुंदरकहतनारीनरककोकुंडयहनर
 कमेंजाईपरेसोतोनरकपातीहैं॥३॥कामनिकेअंग
 अतिमलिनमहांअरुद्धरोमरोममलिनमलीनसब
 द्वारहैं॥हाडमांसमंजामेदचामसोलंपेटराषें॥ठोरठो
 ररक्तकेभरेईभंडारहैं॥सुत्रऊपुरीषआंतएकमेक
 मिलीरही॥ओरहीउदरमांहीविवधविकारहैं॥सुंद
 रकहतनारीनषसिषनिंदारूपताहीजेसराहेंसोतोव
 डोईगेवारहैं॥४॥ ॥छंदकुंडलीया॥ ॥रसिकप्रि
 यारसमंजरीओरसिंगारहीजान॥चतुराईकरिबहू
 तपिधिविषेबनाईआन॥विषेबनाईआन॥लगत
 विषयनिकोप्यारीजागेमदनप्रचंडसराहें॥नषसिष
 नारीज्यौंरोगीमिष्टानषाईरोगहीविस्तारें॥सुंदरये
 गतिहोईजोरसिकप्रीयाधारे॥५॥रसिकप्रियाकैस
 नतहीउपजेबहूतविकार॥तोयामांहीचिंतधरेवहें
 होतनरधार॥वहेहोतनरधार॥बारतोकबूबनलागे

सनतविषयकीबात॥ लहरविषहीकीजागेंज्योंको
 उऊंध्योहतो॥ लेईपुनिसेजबिछाई॥ सुंदरएसीजानसु
 नतरसिकप्रयाभाई॥ ६॥ ॥ इतिनारीनिंदाकोअं
 गसमाप्तः॥ अंग ९॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥
 ॥ अथदुष्टजनकोअंगप्रारंभः॥ ॥ छंदमनहर॥
 अपनेनंदोषदेषंपरकेअगुनपेषेतुष्टकोस्वभावउठि
 निंदाईकरतुहे॥ जेसेंकोईमहलसंवारीराख्येनीकैक
 रीकिरीततहांजाईछिद्रतुंढतफिरतुहे॥ भोरहीतेंसां
 जलगसांजहीतेंभोरलगसुंदरकहतदिनअसेंहीभर
 तुहे॥ पावकेतरेकीनहींसूजेआगभूरषकोंओरसों
 कहततेरेसिरपेंबरतुहे॥ १॥ ॥ छंदइंद्रवज्र॥ ॥ घा
 तअनेकरहेंऊरअंतरदुष्टकहेसुषसोंअतिमीठी॥
 लोटतपोटतव्याघ्रहीज्योंनितताकतहेपुनताहीकी
 पीठी॥ उपरतेंछिरकेजलआनसहेठलगावतजा
 रिअगीठी॥ यामहीकूरकलूमतिजानहूसुंदरआप
 निआंषिनीदीठी॥ २॥ दुष्टकरेनहींकोंनबुराईआप
 नेंकाजसंवारेनकेहितओरकोंकाजबिगारतआई
 ॥ आपनोंकारजहोऊनहोऊबुरोकरओरकोडारत

भाई । आपहूषोवत और हूषोवत षोयदुनो घर देत
 बहाई ॥ सुंदर देषत हीवनी आयत दुष्ट करे न ही कोन
 बुझाई ॥ ३ ॥ ज्यों नर पोषत हें निज देह ही अनविनासक
 र तहिवारा ॥ ज्यों अही और मनुष्य ही काटत वाही कछू
 न ही होत अहारा ॥ ज्यों पुनि पावक जारि सबे कछू आ
 पाहना समये ॥ रधारा ॥ त्यों यह सुंदर दुष्ट स्वभाव हू
 ज तजो ॥ कनक निप्रकारा ॥ ४ ॥ दुर्जन संग भलो जिन
 नों सर्प डसे सुं न ही कछू ताल कवी छू डर जोग जमार
 त तो न ही हानो ॥ आग जरो जल बूडि मरोगिरी जाई गि
 रो कछू मै मत आनो ॥ सुंदर और भले सब ही यह दुर्ज
 न संग भले जिन जनों ॥ ५ ॥ ॥ इति दुष्ट जन कौ अंग
 समाप्तः ॥ अंग १० ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥
 अथ मन को अंग प्रारंभः ॥ ॥ छंद मन हर ॥
 टकि हटकि मन राषत ज्यों छिन छिन सटकि सटकी च
 हूं बोर अब जात हें ॥ लटकि लटकि ललचाय लोलवा
 रवार गटकि गटकि करि विष फल पात हें ॥ फटकि फ
 टकि तार तोरत कर महीन ॥ ॥ क ॥ ॥ छु ॥
 न अघात हें ॥ पटकि पटकि सिर सुंदर जु मां गीहारी

फिटकिफिटकिजाईसधौकोनवातहें॥१॥मनकीप्रती
 तकोउकरेसोदिवानोहेपलहीमेंमरिजायपलहीमेंजी
 वतुहे॥पलहीमेपरहाथदेषतबिकांनोहेपलहीमेंफि
 रेनवषंडहुंब्रह्मंडसबदेव्योअनदेव्योसोतोयातेनही
 छानोहे॥जातोनहींजांनीयतआवतोनदीसेकछूऐ
 सीसीबलाईअवतामोपस्यौपांनोहे॥सुंदरकहतया
 कीगतीहूनलषीपरेमनकीप्रतीतकोउकरेसुदिवानो
 हो॥२॥मनकोस्वभावकछूकह्योनपरतुहेधेरीयेंतोये
 रघोहूनआवतहेंमेरोपूतजोईपरबोधीएसकांननधर
 तुहे॥नीतीनअनीतीदेषेंसुभनअसुभपेपेपलहीमें
 होतीअनहोतीहूकरतुहे॥गुरूकीनसाधुकीनलो
 कवेदहूकीसंककाहूकीनमनेंतोकाहूतेंडरतुहे॥सुं
 दरकहतताहीधीजीयेंसुकांनभांतीमनकोस्वभाव
 कछूककह्योनपरतुहे॥३॥मनसोनकोऊहमदेव्योअ
 पराधीहेकामजबजागेतबगिनतनकोउसंकजानेस
 बजोईकरिदेषतनमाधीहे॥क्रोधजबजागेतबनेकन
 संभारसकेएसीविधीमूलकीअविद्याजिनसाधीहे
 ॥लोभजबजागेतबनपतिनक्योंहीहोईसुंदरकहत

६॥ तेहामें । हि॥ मोहमतवारो निसदिन ही फिर
 तहे । सोन ॥ हूँ हूँ । अः । रार्थ हि॥ ४॥ मनसो
 न ॥ हूँ ॥ ऊँ ॥ ५॥ हि॥ रेषवे कोंदारे ।
 ग २ । होये रसनवे कोंदारे तो रसिक सिरताज हैं । सूं
 गये कोंदारे ते । य २ । यक कोंदारे तो न
 धापे महाराज हे ॥ भोग ही कोंदारे तो त्रपति न ही होई
 क्यों । सुंदर ॥ हूँ ॥ हूँ ॥ हूँ ॥ हूँ ॥ हूँ ॥
 कथोकरे आपुनी ही ॥ नसे ॥ नसे ॥ नसे ॥ नसे ॥
 गा बाज हे ॥ ५॥ मनसोन कोऊ हे अधम या जगत में
 देखे न कुठोर ठोर कहत और की ओर लीन जाई होत हा
 डमांस उरगत में ॥ करत बुलाई सर ओसर न जाने कछू
 धका आय देतरां मनां मसों लगत में, बहाये सर अस्त
 र बहाए सब भेष जिन सुंदर कहत दिन घालत भग
 त में ॥ और उअनेक अंतराई ही करत हे मनसोन =
 कोऊ हे अधम या जगत में ॥ ६॥ मनसोन कोऊ या ज
 तमां । ॥ रं ॥ हे जिन वगेशां कर विधाता इंद्र देव मुनी
 आपनोऊ अधपति ठग्यो जिन चंद्र हैं ॥ और जोगी
 जंगम संन्यासी सैष कौन गिने सब निकों ठगत ठगाये

नस्वच्छंदहे ॥ तापसऋषीस्वरसकलपचिगयो ॥ का
 हूकेन आवे हाथ असे सोया पेबंद हे ॥ सुंदर कहत अब
 कौन विधि धिजेता ही मन सोन को ज्या जगत न चत हे
 रंक कौन चावें अभिळाष धन पाय बेकी निस दिन सोच
 करि असे ही पचत हे ॥ राजा ही नचावे सब भोमी ही को
 राज लेवे ओर उनचावे जोई देह सो रचत हे देवता असु
 र सिद्ध पन्नग सकल लोक कीट प्रसू पंछी कहूके से केव
 चत हे ॥ सुंदर कहत काहू संत की कही न जाई मन के न
 चाएस बजगत न चत हे ॥ ८ ॥ ॥ छंद इंद्र वजय ॥
 केतक द्यौसम एस मुजावत ने कन मानत हे मन मोंदु ॥
 भूलर ह्यो विषयास्तः प्रमेक लू ओर न जानत हे सठ दो
 दु ॥ आंषिन कानन नाक विना सिर हाथ न पावन ही सु
 ष पोंदु ॥ सुंदर ताही गहे कोऊ क्यों करि न कर जाई बडो
 मन लोंडू ॥ ९ ॥ दोरत हे दस हूंदिस को सठ वायु लुग्यौत
 बते भयो बंडा ॥ लाजन कान कछून ही राषत सील स्व
 भाव की फोरत भंडा ॥ सुंदर सीष कहा कहि दिजीये
 ॥ भेदे न ही बांन छेदे न ही गंडा ॥ लाल चलागर ह्यो म
 न वीषर बारे ही वाट अठारहि पंडा ॥ १० ॥ स्वान कहूके

शृंगालकहूं कि विडालकहूं मन की मति ते सी ॥ ठिठक
 हूं कि धोंडूं मकहों कि धोंभांडकहूं के मंडाई दे जे सी ॥ चो
 रकहूं वटपारकहूं ठगजारकहूं उपमाकहूं के सी ॥ सुंद
 र और कहा कहियें अब या मन की गत दीसत एसी ॥ ११
 ॥ कैवेरतुं मन रंक मयो सठ मांगत भीषद सो दिस डूल्यो
 केवेरतुं अंधखो सिर काम निसंग हिडोरन जूल्यो
 ॥ कैवेरतुं मन छीत मयो अति कैवेरतुं सख पाई के फूल्यो
 ॥ सुंदर कैवेर तोहि कह्यो मन को न गली केही मरग भूल्यो
 ॥ १२ ॥ इंद्र निके सुख चाहत हें मन लालचला गिअ में स
 ० यों ही ॥ दीषी मरी बिभस्यो जल पूरन धावत हें मृग मू
 ल्यों ही ॥ प्रेत पिसाच निसाचर डोलत भूष मरे न ही ॥
 ५ तथ्ये ॥ १५ ॥ धूरि ही को न ले कर सुंदर दे तहे
 मन ल्यों ही ॥ १३ ॥ तूं मन क्यों न ही आपसंभारे द्वै सब
 को ॥ रताज ॥ १४ ॥ ज्यौ ॥ मे अंतर शान निचारे
 ज्यौ कलू और विषे सुख वंछत तो यह देह अमोलक
 होरे ॥ १५ ॥ कुषय भजे भगवंत ही आपत रे पुनि और
 ही तारे ॥ सुंदर तोहि कह्यो कितनी वेर तूं मन क्यों न ही
 आपसंभारे ॥ १६ ॥ रिमन तूं भ्रम बो किन छांडे को न स्व

भावपरयोउठिदोरत॥अमृतछां डिचचोरतहाडे
 ज्यौंभ्रमकीहथनिद्रगदेषत॥आतुरहोईपरेगज
 षाडे, वादब्रथाभटकेनिसवासरएकहूसीषलगी
 हीरांडे॥सुंदरतोहिसदा ॐ ॥
 कीनछांडे॥१५॥जोमननारीनिबोनिहारततोमन
 होतहेताहीकोरूपा॥जोमनकाहूसोंक्रोधकरेजब
 क्रोधइहोयजाईतदरूपा॥जोमनमायाहीमाया
 देनिततोमनबूडतमायाकेरूपा॥सुंदरजोमनब्र
 ह्मविचारततोमनहोतहेंब्रह्मस्वरूपा॥१६॥ ॥
 दमनहर॥ ॥कबहूकहसउठेकबहूकरोईदेत
 बहूबकतकहूंअंतहूनलहियें॥कबहूकषाईतो
 अधातनहीकाहूकरिकबहूंककहेमेरेकछूनहीं
 हीये॥कबहूआकासजाईकबहूपातालजाईर
 दरकहतताहीकेसेंकरीगहीयें॥कबहूकआयत
 गेकबहूउतरभागेभूतकेसेचिन्नकरेअसोमनव
 हीयें॥१७॥कबहूतोपांषकोपरेवाकेदिषावेम
 कबहूंकधूरकेचावरकरिलेतहें॥कबहूतोगोवि

कपनहे॥ पापमाने पुंन्यमाने उत्तम मध्यम माने नीचमा
 ने ऊंचमाने माने मेरोतनहे॥ स्वर्गमाने नर्कमाने बंधन
 माने मोक्षमाने सुंदर सकल माने ताते नाम मनहे॥ २१
 ॥ जोई जोई देखे कलूसोई सोई मन आही॥ जोई जोई
 रूने सोई मन ही को भर्महे॥ जोई जोई सूंघे जोई षाई
 जो स्पर्सी होई जोई जोई करे सोई मन ही को कर्महे॥ जो
 ई जोई ग्रहे जोई त्यागे जो अतुरागे जहां जहां जाई सोई
 मन ही को भ्रमहे॥ जोई जोई कहें सोई सकल सुंदर म
 न जोई जोई कल्पे सोई मन ही को धर्महे॥ २२॥ एक ही
 विट पविस्व ज्यों को लोही देषीयत अति ही सघन ताके
 पत्र फल फूल हैं॥ आगले ऊर तपातन एन ए होत जा
 त असें या ही तरु को अनादी काल मूल हैं॥ दस चार
 लोक लोप सरित् हो जहां तहां अरध उरध पुनि सुक्ष्म
 रूस्थूल हैं॥ कोउ तो कहत सत कोउ तो कहें असत्य सुं
 दर कहत भर्म ही को मन मूल हैं॥ २३॥ तो सोन कपूत
 कोउ कीत हून देषीयत तो सोन सपूत कोउ देषीयत
 ओर हे॥ तू ही आप भूले महानी चहते नीच होई तू ही
 आप जनि तो सकल सिर मोर हे॥ तू ही आप भ्रमे त

बजगतभ्रमतदेषेतेरेस्थिरभयेसबठोरहीकोठोरहे
 ॥ तूंहीजीवरूपतुंहीब्रह्महेआकासवतसुंदरकहत
 मनतेरीसबदोरहे ॥ २४ ॥ मनहीकेभ्रमतेजगतयह
 देखायतमनहीकोभ्रमगाएजगतविलातहे ॥ मनही
 केभ्रमजेवरीमेंउपजतसापमनकेविचारेसापजे
 वरीसमातहे ॥ मनहीकेभ्रमतेमरीचिकाकेजलक
 हेमनहीकेभ्रमसीपरूपोसोदिषातहे ॥ सुंदरसकल
 यहदीसेमनहीकोभ्रममनहीकोभ्रमगाएब्रह्महो
 ईजातहे ॥ २५ ॥ मनहीजगतरूपहोईकरिविस्तारयो
 मनहीअलषरूपजगतसेन्यारोहे ॥ मनहीसकल
 घटव्यापकअखंडएकमनहीसकलयहजगतपि
 यारोहें ॥ मनहीआकासवतहाथनपरतकलूमन
 केनरूपरेषब्रधहीनवारोहें ॥ सुंदरकहतपरमार्थ
 विचारेजबमनमिटीजाईएकब्रह्मनिजसारोहे ॥
 २६ ॥ ॥ इतिमनकोअंगसमाप्तः ॥ अंग ११ ॥ ॥ छु ॥
 अथचाणककोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदमनहरा ॥
 ॥ जोईजोईछूटवेकोकरतउपायअग्यसोइसोइद्रव
 करिवंधनपरतुहें ॥ जोगजज्ञपतपतीर्थव्रतादीओ

रजं पाया तले तजार्ई हीमाले गरतु हैं ॥ कांन हू फराई पुं
नी के स हू लुचाई अंग विभूति लगाई सिर जटा ऊधरतु
हैं ॥ विना ज्ञान पाए न ही छूटत हृदय ग्रंथी सुंदर कहत-
यों ही भ्रमी के मरतु हैं ॥ १॥ ॥ सर्वल गु अक्षर ॥ ॥

तप जप करत धरत व्रत जत सत मन बचक्रम भ्रम कष्ट स
हत तन ॥ बल कलप सन असन फल पत्र जल कसतर
सन रसत जत वसत वन ॥ जरत मरत नर गरत परत स
र कहत लहत हय गज दल बल धन ॥ पचत पचत भव
भय न दरत सट घट घट भगटर हतन लषत जन ॥ २॥
जोग करे जाग करे वेद विधित्याग करे जप करे तप करे
यों ही आयु षूटी हैं ॥ जप करे नेम करे तीरथ ऊव्रत करे
पुहमी अटन करे व्रथा स्वासतु दिहें ॥ जीवे को जतन क
रे मन में वासना धरे पची पची यों हिमरे काल सिर षूटी हैं
॥ ओर ऊअने कविधिको टिक उपाय करे सुंदर कहत
विन ज्ञान न हीं छूटी हैं ॥ ३॥ बुधी करि हीन नर रजत स
छाय रह्यो बन बन फिरत उदास होई घर ते ॥ कठन तप
स्या धरी मेघ सीत घांम सहे कंद मूल षाई को ऊकामना
के डर ते ॥ अति ही अज्ञान ओर विविध उपाय करे नि

जस्तुपशूलिकेबंधतजार्डपरतें॥ सुंदरकहतउंबीवो
रकेसेंदीषेमुःषहाथमाहीआरसीनफेरेमूढकरतें॥
४॥ मेघसहेसीतसहेसीसपरघांससहेंकठिनतपस्या
करिकंदमूलपातहे॥ जोगकरेजागकरेतीर्थऊब्रतक
रेपुंन्यनानाविधकरेमनमेंसहातहे॥ ओरदेवीदेवता
उपासनाअनेककरेआंबनिकीहोंसकेसेंआकडोडेजा
तहे॥ सुंदरकहतएकरविकेप्रकासविजुंजेंगनाकी=
जोतीकहारजनिविलातहे॥ ५॥ देषोभाईआंधरेनें=
ज्योंवाजारलूट्योहे॥ कोईफिरेनागेपायगुदरीबनाय
करीदेहकीदिसादिषाईआईलोकधूत्योहे॥ कोईदुधा
हारीकोईफलाहारीतोईकोईअधोमुःषग्लेंग्लि
धूंमधूत्योहे॥ कोईनहीषायलोनकोईमुःषगहेंमों
नसुंदरकहतयोंहीब्रथाभूसकूत्योहेप्रभुसोंतोप्री
तिनाहिंज्ञानसोंपरचेनाहीदेषोभाईआंधरानेंज्यों
वाजारलूट्योहे॥ ६॥ ॥ छंदइंद्रवजय॥ ॥ आसं
नमारीसंवारीजटानधउज्वलअंगविभूतिचढाई॥
याहमकोंकछूदेहिदयाकरिघेरीरहेबहूलोगलुगा
ई॥ कोउकउत्तमभोजनल्यावतकोईकल्पावतपान

मिठाई ॥ सुंदरलेकरिजातभयोसबमूर्षलोकनिया
 सिद्धपाई ॥ ७ ॥ ऊर्धपायअधोमुषद्वैकरीघूटतधुंम
 हीदेहजूलावे ॥ मेघहूसीतहूघांससहेसिरतीनहू-
 कालमहादुःषपावे ॥ हाथकछूनपरेकबहूकनमूर्ष
 कूकसकूटिउडावे ॥ सुंदरवंछेसबसःपकोंधरबूड
 तहंअरुजांऊगागावे ॥ ८ ॥ ग्रेहतज्यौअरुनेहतज्यौ
 पुंनीषेहलगाईकैदेहसंवारी ॥ मेघसहेसिरसीतस
 हेतनुधूपसमेजुपंचागनिवारी ॥ भूषसहेरहीसुं
 षतरेपरसुंदरदाससहेदुःषभारी ॥ डारसनछांडि
 केकासनउपरआसनमारथोपेंआसनमारी ॥ ९ ॥
 जोकोऊकष्टकरेबहुभातिनीजातअज्ञाननहींमनके
 रो ॥ ज्यौंतमपूरीरह्यौधरभीतरकेसेंहूंदूरनहोयअं
 धेरो ॥ लाठिनिमारीयेठेलिनिकारीयेंओरउपायक
 रेबहूतेरो ॥ सुंदरसूरप्रकासभयोतबतोकितहून
 हीदिषायेंनेरो ॥ १० ॥ धारबह्यौषडधारीरह्यौजलधार
 सह्यौगिरधारग्रह्यौहैं ॥ भारसंच्यौधनभारथमेंकर
 भारलह्यौगिरभारपख्यौहैं ॥ भारतव्योषहीभारग
 योजममारदर्दमनतोनमख्यौहैं ॥ सारतज्यौषुटसार

पश्यो कही सुंदर कारज को न सख्यो हैं ॥११॥ कोउ मया
 पय पान करे नित कोउ कथा तहें अन्न अलोंना ॥ कोई
 ककष्ट करे निसवां सर कोई कवेटी के साध तपोना ॥
 कोई कवाद विवाद करे अति कोउ कधारी रहें सुःख मो
 ना ॥ सुंदर एक अज्ञान गए बिनु सिध मये नही दीस
 तकाना ॥१२॥ कोई कअंग विभूति लगावत कोउ कहो
 तनि गट दिगंबर ॥ कोउ कसेत कषाय कवोढत कोऊ
 ककाथरंगे बहु अंबर ॥ कोउ कवन कलसी सजटानष
 कोउ कवोढत हें जुवाघांवर ॥ सुंदर एक अज्ञान गए बि
 नएसब दीसत आही अडंबर ॥१३॥ ॥ छंद मनहर ॥
 आपही के घट मांही प्रगट पभे स्वर हेत कोई छोडी भूले
 नर दूर दूर जात हैं ॥ कोई दोरे द्वारिकां कों कोई कासिजग
 नाथ केई दोरे मथुरा कों हरि द्वार नात हैं ॥ केई दोरे बद
 री कों विषमहार चढे केई तो केदार जात मन में सी हात
 हैं ॥ सुंदर कहत गुरु देव देई दिव्य नेन दूर ही के दूर विन
 निकट दिसात हैं ॥१४॥ ॥ छंद इंद्रवजय ॥ ॥ कोई
 कजात प्रयाग बनारसी कोई गया जगं नाथ ही धावे ॥
 कोई मथुरा बदरी हरि द्वार सक कोई गंगा कुरुषेत्र नाहा

वे॥ कोऊकपुष्करद्वैपंचतीर्थदोरेईदोरेजुझारिकाआ
 वे॥ सुंदरवितगड्यौघरमांहीसुबाहिरदुंदुतक्योंक
 रिपाविं॥१५॥ छांडिभएनरभांडकेदोनांआगेकछून
 हीहाथपस्थोपुंनपिछेबिगारिगयोनिजभोंना॥ ज्यों
 कोईककामनीतमारिचलीसंगओरहीदेवीसलोंना॥
 सोउगयोतजिकेंततकालकालकहेनबनेजुरहीमुःष
 मोना॥ तेसेंहीसुंदरज्ञानविलासबछांडभएनरभांड
 केदोंना॥१६॥ ज्योंकोऊकोसकल्यौनहीमारगतेलक
 लेघरमेंपसजोए॥ ज्योंबनीयागयौबीसकेतीसको
 बीसहूमेंदसहूनहीहोई॥ ज्योंकोऊचौबेछवेकोच
 ल्यौपुंनीहोईदुबेदुईगांठकेषोये॥ तेसेंहीसुंदरओ
 रक्रीयासबरामबिनानिश्रेंनररोए॥१७॥ ज्योंकोउ
 रामबिनानरसूरषओरनिकेगुनजीभभनेंगी॥ आ
 नक्रियागढकेगडवापुंनीहोतहेभैरकछूनवऐंगी॥
 ज्योंहथफेरीदिषावतचावरअंततोधूरीकीधूरिछि
 नेंगी॥ सुंदरभूलभईअतसेंकरिसूतेकीभेसपाडा
 ईजनेगी॥१८॥ होईउदासविचारबिनानरग्रेहतज्यों
 बनजाईरह्योहैं॥ अंबरछांडिवधंबरलेकरिकेतप

कोतनकष्टसह्योहें॥आसनमारिसुआसनहैसुषमों
नगहीमनतो नग्रह्योहें॥सुंदरकोंनकुबधिलगीकही
याभवसागरमांहीबह्योहें॥१९॥भेषधस्योपरिभेदनं
जानतभेदलहेबिनुषेदहीपैहें॥सूषहीमारतनिंदनि
वारितअन्नतजेंफलपन्ननवैहें॥ओरउपायअनेकक
रेंपुनीताहीतेहाथकलूनहीऐहें॥यानरदेहब्रथासठ
षोवतसुंदररामविनापछतैहें॥२०॥आपनेंआपनेंथा
नमुकामसरांहनकोंसवभांतिभलीहें॥यज्ञव्रतादी
कतीर्थदानपुरानकथाजुअनेकचलीहें॥कोटिकओ
रउपायजहांलगतैसुनीकेनरबुझिल्लीहें॥सुंदर
ज्ञानविनानकहूंसूषभूलनकीबहुभांतिगलीहें॥२१
॥कोउकचाहतपुत्रधनादिककोउकचाहतबांजना
यो॥कोउकचाहतधातुरसादिककोउकचाहतपारं
देषायो॥कोउकचाहतजंत्रनिमंत्रनिकोउकचाहतरो
गगमायो॥सुंदररामविनासबहीअमदेखहुया
जगयोंडहकायो॥२२॥काहेकोंतूनरभेषवनावतका
हेकुंतूंदसहृदिसडूले॥काहेकोंतूंतनकष्टकरेअति
काहेकोंतूंमुषतेंकहीफूले॥काहेकोंओरउपायक

रे अब आनक्रीया कर के मत भूले ॥ सुंदर एक भजे भ
 गवत ही तो सुख सागर में नित झूले ॥ २३ ॥ ॥ इति चा
 णक को अंग समाप्तः ॥ अंग १२ ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥
 अथ विप्रीत ज्ञान को अंग प्रारंभः ॥ ॥ छंद मन हर ॥
 एक ब्रह्म मुष सो बनाय करि कहत हैं ॥ अंतःकरण तो
 विकारन सो भरयो है ॥ जे से ठग गोबर को कूपो भरि रा
 षत हैं सेर पंचग्रत ले के ऊपर ज्यौ कस्यो है ॥ जे से कोई
 भाड़े माही प्याज को छिपाय रावें चीथरा कपूर को ले मु
 ष बांधि धर्यो है ॥ सुंदर कहत ऐसे ज्ञानी हैं जगत मां
 ही तीन को तो दोषी करि मेरो मन डर्यो है ॥ १ ॥ देह सो म
 मत्व पुनी ग्रेह सो ममत्व सुत दारा सो ममत्व मन मा
 या मे रहतु हैं ॥ थिर तान लहे जे से कंदुक चोगान मां
 ही कर्म निकै वस मा स्यौ धका को वहतु है ॥ अंतःकर
 न सदा जगत सो रचि रथो मुः ष से बनाय बात ब्रह्म की
 कहतु है ॥ सुंदर अधिक मोही या ही ते अचंभो आही
 भुमी परि पखो को उचंद को गहतु है ॥ २ ॥ मुः ष सौ क
 हत ज्ञान भ्रमे मन इंद्री प्रान मार्ग के जल में न प्रति बि
 बल ही या गांठि में न पैसा को उभयो रहें सा उकार वा

तनिमेंसहररूपैयागनिलहीये॥सपनेमेंपंचामृत
जीमकेंत्रपतिभयोजागेतेमरतभूषपाईबेकोंचही
ये॥सुंदरसभदजेसेंकायरमारतगाकराजाभोजस
मकहांगांगेतेलीकहीये॥३॥संसारकेसुधनिसोंआ
सक्तअनेकअनेकविधिइंद्रिहूलोपमनकबहूनग
सोहे॥कहतहेंअसेंमेतोएकब्रह्मजानतहोताहीते-
छोडीकेंसुभकर्मनकोरह्योहे॥ब्रह्मकीनप्राप्तिपुनिक
र्मसबछूटगयेदोउनतेभ्रष्टहोईअधबिचबह्योहे॥
सुंदरकहतताहीत्यागीयेस्वपचजेसेंयाहिभांतिग्रंथ
मेवशिष्टजीहूकह्योहे॥४॥ज्ञानीकीसीबातकहेमन
तोमलिनरहेवासनाअनेकभरीनेकुननिवारिहें॥जैसें
कोंऊआभूषनअधिकवनायराख्योकलईऊपरकर-
भांतरभंगारिहें॥ज्योंहीमनआवेत्योंहीषेरुतनिसं
कहोईज्ञानसुनिसीषलीयोग्रंथनिविचारीहें॥सुंदर
कहतवाकेअटकनकोआहीजोईवासोंमिलेंजाईता
हीकोंबिगारीहें॥५॥हंसस्वेतवकस्वेतदेषीयेसमान
दोउहंसभोतीचुगेबकमछरीकोंपातहें॥पिकअरु
काकदोउकेसेंकरिजांनेजाईपिकअंबडारिकाकक

रकहिंजातहैं॥ सिंद्धोअरुफटिकपफांनसमदेषीय
 तवहतोकठोरवहीजलमेंसमातहैं॥ सुंदरकहतज्ञा
 नीबाहिरभीतरसुधताकीपटंतरऔरबातनिकीबा
 तहैं॥६॥ ॥इतिविप्रीतज्ञानकोअंगसमाप्तः॥
 अंग१३॥ ॥छु॥ ॥छु॥ ॥अथवचनविवे
 ककोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहरा॥ ॥जाकेघर
 ताजीतुरकिनकोतबेलोबांध्योताकेआगेफेरीफेरीट
 टुवादिषाईये॥ जाकेषासामलमलसिरसाफकेढेर
 परेताकेआगेआनीकरिचोसईषाईये॥ जाकेपंचामृ
 तषातषातसबदिनबीतेसुंदरकहतताहीराबरीषवा
 ईये॥ चतुरप्रवीनआगेसूरषउचारकरेंसूर्जकेआगेजे
 सेऊगनांदिषाईये॥१॥ एकवाणीरूपवंतभूषनब
 सनअंगअधिकविराजमानकहीयतअेसीहैं॥ एक
 वाणीफाटेटूटेअंबरउढाएआनीताहूमांहीविपरी
 तसुनीयतजैसीहैं॥ एकवाणीमृतकसीबहतसिंगा
 रकीयेलोकनीकोनीकीलगेसंतनीकोंभेसीहैं॥ सुंद
 रकहतवांणीत्रिविधजगतमांहीजानेकोईचतुरप्र
 वीनजाकीजैसीहैं॥२॥ राजाकोकुंअरजोस्वरूप

केकुरूपहोईताकोंतोसिलामकरिगोदलेषिलाई
 ए॥आरकोउरैतकोस्वरूपहोईसोभनीकताहूकोंतोदेवि
 करीनिकटबुलाईए॥काहूकोकुरूपकारोकूबरोद्वैअं
 गहीनवाकीबोरदेधीदेधीमाथोईहलाईए॥संदरकह
 तवाकेवापहीकोंप्यारोहोईयेंहीजांनीवानीकोविवेक
 असेंपाईयें॥३॥बोलीयेतोतबजबबोलवेकीसुखहो
 ईनतोमुःषमेंनकरिचुपहोईरहिये॥जोरीयेंतोतबज
 बजोरबोउजांनीपरेंतुकछंदअरथअनुपजामेंलही
 ये॥गाईयेंतोतबजबगाईबेकोकंठहोई॥अवनकेस
 नतहीमनजाईगहीये॥तुकभंगछंदभंगअरथमि
 लेनकलूसंदरकहतएसीवांनीनहीकहीए॥४॥एक

जब बोलत हैं सब को उकांन दे सुनतर वरोन को॥ ताही तें
सुवचन विवेक करी बोलीय तयों ही आकबाक बकितो
रीयें न पोंन को॥ सुंदर समझ ऐसे वचन उचार करो न ही
तो समझि करि बेठो ग्रहि मोन को॥ ६॥ प्रथम ही ये विचा
र ठीम सोन दी जे डार ताही तें सुवचन संभारि करि बो लि
यें॥ जाने न कुहे न हेत भावते सी कही देत कहीयें सुन ब
जब मन मांही तो लीयें॥ सब ही को लागे दुःख को उन ही पा
वें सुख बोलिके ब्रथा ही तातें छति न ही छोलीयें॥ सुंदर
समझ करि कहीयें सरस बात तब ही तो वचन कपाट गही
घोलीयें॥ ७॥ वचन तो उहे जा में पाईयें विवेक हे और तो
वचन एसे बोलत हैं पस जे से॥ तिन के तो बोल वे में ठंग
हून एक हे को उराति दिव सब कत ही रहत असे॥ जे सि
विधि कूप में बकत मानो भेक हें विविध प्रकार करि बोल
त जगत सब घट घट प्रति मुःख वचन अने कहे सुंदर क
हत तातें वचन विचार लेहू वचन तो वहे जां मे पाईये विवे
क हें॥ ८॥ वचन में वचन विवेक करि लीजियें जे से हंस
नीर को तजत हे असार जां नीसार जां नीषीर को निरा
लोक रिपी जियें॥ जे से तधि मथत मथत का

तओररहीपहीसवछालुछांडीदीजीयें॥जेसेमधुम
 क्षीकासवासकोभ्रमरलेततेसेंहीपकरिकरिभिन्न
 भिन्नकीजीयें॥सुंदरकहततातेंवचनअनेकभांतिवच
 नमेवचनविवेककरिलीजीयें॥९॥प्रथमहीगुरुदेव
 सुःषतेउचारकस्यौवेईतोवचनआयलगेनिजहीये
 हें॥तिनकोविवेककरिअंतःकरनमाहीअतिहीअमो
 लनगभिन्नभिन्नकीयेहें॥आप्रकोदरिद्रगयोपरउप
 कारहेतनंगहीनिगलिकेउगलिनगकीयेहें॥सुंदरक
 हतयहवांणीयोंप्रगटभाईओरकोईसूनकरिरंकजी
 वजीयेहें॥१०॥वचनतेंदूरमिलेवचनविरोधहोईवच
 नतेंरागवढेवचनतेंदोषजु॥वचनतेंज्वालुउठेवचन
 सीतलहोईवचनतेंमुदीतवचनहीतेंरोषजु॥वचन
 तेंप्यारोलगेवचनतेंदूरभगेवचनतेंमुरझाईवचनतें
 पोषजु॥सुंदरकहतयहवचनकोभेदअसोवचनतें
 बंधहोतवचनतेंमोषजु॥११॥वचनतेंगुरुशिषबाप
 पूतप्यारोहोईवचनतेंबहूविधहोतउतपातहें॥वच
 नतेंनारीअरुपुरषसनेहअतिवचनतेंदोउआपआप
 मेरिसातहें॥वचनतेंसबआईराजाकेहजूरहोईवचन

तेंचाकरउछोडिकेपलातहें॥सुंदरसुवचनसुनत-
 अतिसुषहोईकुवचनसुनतहीप्रीतिघटिजातहें॥१२
 ॥वचनविवेककीयेंवचनमेंभेदहेएकतोवचनसुन
 कर्महीमिंवहीजाय॥कर्तबहुतविधिस्वर्गकीउमेदहे
 ॥एकहेवचनद्रढईस्वरउपासनाकेतिनमेंतोसकलही
 वासनाकोछेदहे॥एकहीवचनतामेंएकहीअर्षंडब्रह्म
 सुंदरकहतयोंबतावेअंतवेदहें॥वचनतोअनेकप्र
 कारसबदेखीयतवचनविवेककीयेंवचनमेंभेदहें॥१३
 ॥वचनतेंजोगकरेंवचनतेंजज्ञकरेंवचनतेंतपकरिदे
 हकोंदहतुहें॥वचनतेंबंधनकरतहेंअनेकविधिवचन
 तेंत्यागकरिवनमेंरहतुहें॥वचनतेंउरजेरुसुरजेवचन
 हूतेंवचनतेभांतिभांतिसंकटसहतुहें॥वचनतेंजीव
 भयोवचनतेंसीवहोईसुंदरवचनभेदवेदयोंकहतुहें
 ॥१४॥ ॥इतिविवेकवचनकोअंगसमाप्तः॥अंग१४
 ॥छु॥ ॥छु॥ ॥अथनिर्गुणउपासनाकोअंगप्रा०॥
 ॥छंदइंद्रवजय॥ ॥ब्रह्माकुलालरचेयहभांजनकर्म
 निकेवसमोहनभावे॥विष्णुहिसंकटआयसहेंग्रभ
 काहूकोरक्षककाहूसंतावे॥संकरभूतपिसाचनिकेप

तिपानीकपाललीयेंविललावे॥याहीतेसुंदरत्रिगु
नत्यागस्तनिर्मलएकनिरंजनध्यावें॥१॥कोटिकबा
तबनायकहेंकहांहोतभयासबहीमनरंजन॥दा
स्त्रसमृतिरुवेदपुरानबषांनतहेंअतिलांयकेअंजन
पानीमेंबूडतपानीगहेंकतपारपहूंचतहेंमतिभंजन
॥सुंदरताहांलगअंधेकीजेवरीजोलोनधाईएएकनि
रंजन॥२॥भंजनसोजोभंनोमलभंजनसज्जनसोजो
हेंगतिगूँ॥गंजनसोजोइंद्रिगहेंगंजनरंजनसोजोबु
जावेंअबूँ॥भांजनसोजोभस्वोरसमांहीविद्वजुनसो
कितहूनअरूँ॥व्यंजनसोजुबढेरुचसंदरअंजनसो
जुनिरंजनसूँ॥३॥जाप्रभुतेउतपतिभईयहसोप्रभु
हेंउरइष्टहमारे॥जोप्रभुहेंसबकेसिरउपरताप्रभुको
सिरहीहमधारे॥रूपनरेषअलेषअखंडितभिंनरहें
संबकारजसारे॥नामनिरंजनहेंतिनकेपुंनसंदरताप्र
भुकीबलेहारे॥४॥जोउपजेविनसेगुनधारतसोयह
जानहूअंजनमाया॥आवनजायमरेनहीजीवतअचु
तएकनिरंजनराया॥जोंतरतत्वरहेंरसएकहीआ
वतजातफिरेयहछायासोपरब्रह्मसदासिरउपरसुं

दरताप्रभुसोमनलाया ॥५॥ जोउपज्यौकछुआई
 जहांलगसोसबनासनिरंतरहोई। रूपधर्योसुरहेन
 हीनिश्चळतीनहीलोकगएोकहाकोई। राजसतामस
 सात्विकजेगुनदेषतकालग्रसेपुनवोई ॥ आपहिएक
 रहेंजुनिरंजनसुंदरकेमनमानतसोई ॥६॥ देवनिके
 सिरदेवविराजितईस्वरकेसिरईस्वरकहीयें ॥ लाल
 निकेसिरलालनिरंतरषूबनिकेसिरषूबलहीयें ॥ पा
 कनिकेसिरपाकसिरोमनिदेषविचारउहेद्रढगहीयें ॥
 सुंदरएकसदासिरऊपरओरकछूहमकोनहीचहीयें
 ॥७॥ सेसमहेसगनेसजहांलगविछुविरंचिहूकेसर=
 स्वांमी ॥ आपकब्रह्मअर्षडअनावृतबाहेरभीतरअं
 तरजामी ॥ वोरनछोरअनंतकहेंगुनयाहीतेसुंदरहेंघ
 ननामी ॥ असोप्रभुजिनकेसिरऊपरक्योंपरिहेंतिनको
 कहीषामी ॥८॥ ॥ इतिनिर्गुणउपासनाकोअंग
 समाप्तः ॥ ॥ अंग १५ ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥
 अथपतिव्रताकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ लंदइंद्रवजय ॥
 आनकीवोरनिहारतहिजेसेंजातपतिव्रतएकवृति
 कोहोतअनादरअसीहीभांतिनुपीछेफिरेपुनसरस

तिको॥नेकहीमेहरवोहोईजातविसेंअधविचजोंजो
 गजतीको॥रामअदेतेंगएजनसुंदरंएकरतिबिनपाव
 रतीको॥१॥जोहरीकोंतजिआनउपासतसोमतिमंदफ
 जीतहीहोई॥ज्योंअपनेंभरतारहिछांडभईविभचार
 निकामनिकोई॥सुंदरताहिनआदरमानफिरविमुषी
 अपनीपतषोई॥बूडिमरेकिनकूपसंभारकहाजगजी
 वतहेसठसोई॥२॥होईअन्यनभजेभगवंतहीओरक
 छूउरमेनहीराषे॥देवीरुदेवजहांलगहेंडरकेतिनसोंक
 हींदीननभाषे॥जोगहूजज्ञवृतादिक्रियातिनकोंतो न
 हीस्वपनेंअभिलाषे॥सुंदरअमृतपानकीयोतबतीक
 हीकोंनहलाहलचाषे॥३॥एकसहीसबकेउरअंतरता
 प्रभुकोंकहीकाहीनगावे॥संकटमांहीसहायकरेंपुन
 सोअपनेंपतिक्योंविसरावे॥चारपदार्थओरजहांल
 गआठहूसिधनवेनिधपावे॥सुंदरछारपरोतिनकेमु
 षजोहरीकोंतजिआनकोंध्यावे॥४॥पूरनकामसदा
 सुःषधामनिरंजनरामसिरंजनहारो॥सेवकहोईर
 ह्योसबकोनितकीटहिकुंजरदेतअहारो॥भंजनदुः
 पदरिद्वनिवारनचिंतकरेंपुनसांजसंवारो॥असेप्रभू

तजिआनउपासतसुंदरहेतिनकोमुःषकारो॥५॥

॥छंदमनहर॥पतिहीसोंप्रेमहोईपतीहीसोंनैमहोईप
तीहीसोषेमहोईपतीहीसोंरतहे॥पतिहीहेंजज्ञजोगप

तिहीहेंरसभोगपतिहीसोंमिटेंसोंगपतिहीकोजतहे

॥पतीहीहेंज्ञानध्यानपतीहीहेंपुन्यदानपतिहीहेंतीर्थ

स्नानपतिहीकोमतहे॥पतिबिनुपत्यनाहींपतिबिनग

तिनाहींसुंदरसकलविधिएकपतिवृत्तहे॥६॥जलको

सनेहीमीनबिछूरततजेप्रानमनीबिनुअहीजेसेजीव

तनलहीयें॥स्वांतबिदुकेसनेहीप्रगटजगतमाहीए

कसीपदुसरोसुचातउकहिये॥रविकोसनेहीपुनीक

मलसरोवरमेंससीकोसनेहीऊचकोरजेसेंरहीयें॥

तेमेंहीसुंदरएकप्रभुसोंसनेहजोरओरकछूदेष्का

हूवोरनहींवहीयें॥७॥ ॥इतिपतिव्रताकोअंगस

माप्तः॥अंग१६॥ ॥छु॥ ॥छु॥ ॥छु॥

अथविरहउगाहनेकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनह

र॥ ॥पीयकोअंदेसोभारीतोसोंकहोंसुनप्यारीया

रीतोरीगासोतोअजहूनआयेहें॥मेरेतोजीवनप्रान

निसदिनउहेंध्यानमुःषसोनकहोंआननेनऊरलाएहें

॥ जब ते गए बिछोह कलन परत मोही ता ते हूं पूछत
तोही किन वर माये हें ॥ सुंदर विरहनी को सोच सषी वा
रवारं ॥ हम को विसार अब को न के कहाये हें ॥ १ ॥ हम
को तो रे न दिन संकमन माही रहे उनकी तो बात निमें ठि
कहू न पाईये ॥ कब हू संदेस सुनी अधिक उछाह होई क
व हू करोई रोई आं सुनी बहाईये ॥ और निकेर सब स
होई रहे प्यारे लाल आवनिकी कही कही हम को सुनाई
ये ॥ सुंदर कहत ताही काटीये सु को न भांति जोई तरु आ
पने सुहाय तेल गाईये ॥ २ ॥ मो सो कहें और सीही वा सुं
कहे और सीही जा सो कहें ताही के प्रतीत के से होत हें ॥ का
हू सो स मास करें काहू सो उदास फिरे काहू सो तोर सब
स अकेल पोत हें ॥ दगा बाजी दुबधा तो मन की न दूर
होई काहू के अंधे रोघर काहू के उद्योत हें ॥ सुंदर कहत
जाके पीर सो करें पुकार जाके दुःख दूर गयो ता को भई वो
त हें ॥ ३ ॥ हीये और जीये और लीये और दीये और की
ये और को न सु अनुप पाटी पढे हें ॥ सुःख और बेन ओ
र नेन और तन और मन और काया सब जंत्र मांही कढे
हें ॥ हाथ और पाव और सीम हू अवन और न घसिघ

वंत भजे हैं ॥ ३ ॥ चाप उहें कसिए रिपु ऊपर दाप उहे
 दलकार ही मारें ॥ चाप उहें हरि आप दई शिर थाप उहें
 थपि ओर न धारें ॥ जाप उहें जपीयें अजपा नित व्याप
 उहें निज व्याप बिचारे ॥ बाप उहें सब को प्रभु सुंदर पा
 पहरें अरुताप निवारे ॥ ४ ॥ भौन उहे भयना ही न जा म
 ही गों न उहे फिर होई न गों ना ॥ वेन उहे विसरे विषयार
 सरो न उहे प्रभु सौ न हीरो न ॥ मोन उहे जु लीये हरी बोल
 तलो न उहे सब ओर अलो न ॥ सोन उहे गुरु संत मिले
 जब सुंदर वांकर हें न ही को न ॥ ५ ॥ कार उहे अविका
 र हें नित सार उहे जु असार ही नाषे ॥ प्रीति उहे जु प्रती
 त धरे उर नीत उहे जु अनीत न भाषे ॥ तंत उहे लगि अं
 त न दूटत संत उहे अपने सतराषे ॥ नाद उहे सुनि बा
 द तजे सब स्वाद उहे रस सुंदर चाषे ॥ ६ ॥ स्वास उहे जु
 उस्वास न छांडत नास उहे फिर होई न नासा ॥ पास उहे
 सत पास लगे जम पास कटे प्रभु के नित पासा ॥ बास उ
 हे ग्रह बास तजे वन वासन ही तिही ठोहर वासा ॥ दास
 उहे जु उदासर हें हरि दास सदा कही सुंदर दासा ॥ ७ ॥
 औत्र उहे श्रुति सार कने नित नेन उहे निज रूप निहारे ॥

नाकउहेहरिनाकहीराषतजीमउहेजगदीसउचारे
 ॥ हाथउहेकरियेहरीकोकृतपावउहेप्रभुकेपंथधारे
 ॥ सीसउहेकरीस्यामसमर्पनसुंदरयोसबकारजसा
 रे ॥ ८ ॥ सोवतसोवतसोईगयोसठरोवतरोवतकैवे
 ररोयो ॥ गोवतगोवतगोईधस्यौधनषोवतषोवतते
 सबषोयो ॥ जोवतजोवतबीतगायेदिनबोवतबोवत
 तेविषबोयो ॥ सुंदरसुंदररामभज्योनहीढोवतढो
 वतबोऊहीढोयो ॥ ९ ॥ दिषतदेषतदेषतमारगबूऊत
 बूऊतबूऊतआयो ॥ सूऊतसूऊतसूऊपरीसबगाव
 तगावतगोविंदगायो ॥ सोधतसोधतसूद्धभयोपुनी
 तावतजावतकंचनतायो ॥ जागतजागतजागपस्योज
 बसुंदरसुंदरसुंदरपायो ॥ १० ॥ ॥ इतिशब्दसा
 रकोअंगसमाप्तः ॥ अंग १८ ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥
 अथभक्तिज्ञानमिश्रितकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइ
 व्रजय ॥ ॥ बैठतरामहिऊठतरामहिबोलतरामही
 रामरह्योहें ॥ जीमतरामहीपीबतरामहीधामहीरा
 महीरामगयोहें ॥ जागतरामहीसोवतरामहीजोवत
 रामहीरामलह्योहें ॥ देतहूरामहीलेंतहूरामहीछुंद

ररामहीरामरयोहें॥१॥ओत्रहूरामहीनेत्रहूरामही
 वक्रहूरामहीरामहीगाजे॥सीसहूरामहीहाथहूराम
 हीपावहूरामहीरामहीछाजे॥पेटहूरामहीपीठहूराम
 महीरोमहूरामहीरामहीवाजे॥अंतररामनिरंतररा
 महीसुंदररामहीरामविराजे॥२॥भोमीहूरामहिआ
 हूरामहितेजहूरामहीवायूहिरामें॥व्योमहूरामही
 चंदहूरामहीसूरहूरामहीसीतहीधामें॥आदींहूराम
 हीअंतहूरामहीमध्यहिरामेंहिपुर्षनवामें॥आज
 हूरामहिकालहूरामहीसुंदररामहीरामहीथामें॥३
 ॥देषहूरामअदेषहूरामहीलेषहूरामअलेषहूरामें
 ॥एकहूरामअनेकहूरामहीशेषहूरामअसेषहूता
 में॥मोनहूरामअमोनहूरामहीगोनहूरामहीठांम
 कुठामें॥बाहेररामहीभीतररामहीसुंदररामहिहें
 जगजामें॥४॥दूरहूरामनिजीकहूरामहिदेसहूराम
 प्रदेसहूरामें॥पूरबरामहीपछिमरामहीदछनरा
 महीउत्तरधामें॥आगेहूरामहीपीछेहूरामहीव्या
 पकरामहीहेंबनग्रामें॥सुंदररामदसोदिसपूरनस्व
 र्गहूरामपतालहूतामें॥५॥आपहूरामउपावतरा

महीभंजनरामसंवारनवामें॥द्रष्टृहूरामअद्रिष्टृ
 रामहीद्रष्टृहूरामकरेंसबकामें॥वर्णहूरामअवर्ण
 हूरामहीरक्तनपीतनस्वेतनस्यामैं॥सुन्यहूरामअसू
 न्यहूरामहीसुंदररामहीनामअनामैं॥६॥ ॥इति
 भक्तिज्ञानमिश्रितकोअंगसमाप्तः॥ अंग१९॥६॥
 अथविप्रजेसब्दकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदसवैया॥
 अवनंदेषेसुनेपुनिनेनहुजिभासूंधेनासिकाबोले॥
 गुदाषाईइंद्रिजलपीवैबिनहिहाथसमेरहितोले॥उ
 चेपावमुंडिनीचेकुतिनलोकमेबिचरतडोले॥सुंदर
 दासकहेसनज्ञानीमलीभांतियाअर्थहिषोले॥१॥
 अंधातीनलोककूंदेषेबेरासूनेबहूतविधिनाद॥नक
 दाबासकमलकीलेवेगुंगाकरेबहूतसेवाद॥तुंठापक
 रिउठावेपरवतपंगुलकरेनिरतअहलद॥जोकोउमा
 कोअर्थबिचारेसुंदरसोईपावेस्वाद॥२॥कुंजरकोंकि
 रीगलबेठीसिंघहिषायअघानोस्याल॥मछुरिअ
 ग्निमांहिसूषपायोजलमेबोहौतहोतिबेहाल॥पंगुच
 ठोपरवतकेउपरिमरतकहीदेविडरांनोकाल॥जा
 कोअनुभवहोयसुजांनेसुंदरएसाउलटाध्याल॥३॥

बुंदमाहेसमुद्रसमानोराइमांहीसमानोमेर॥पानीमांहीं
 तुंबकाबुडीपाहनंतरतनलागीबेर॥तिनलोकमेंभया
 तमासासुर्यकियोसकलअंधेर॥मुरषहोयसोअर्थहि
 पावेसंदरकहेसबदमेंफेर॥४॥मछरिवंगलाकुंगहि
 षायोमुसेषायोकारोसाप॥सुयेपकरिवलाईघाईता
 केमुवेगयोसंताप॥बेटिअपनीभईयाषाईबेदेअपनो
 षायोवाप॥संदरंकहेसुनोहोसंतोतिनकौकोउनलाग्यो
 पाप॥५॥देवमाहींतेदेवलप्रगत्येदेवलमांहिप्रगत्येदेव
 ॥सिष्यगुरुउपदेशनलाग्योराजाकरीरंककीसेवाव
 ध्यापुत्रपंगुइकजायोनाकोघरषोवनकीटेका॥सुंदर
 केहेतसोपंडितग्याताजेकोउयांकोजानेभेबा॥६॥क
 मलमांहितेंपानीउपज्योपानिमाहितेंनीपज्योसूर॥
 सूरमांहिसिनलताउपजीसीतलेतामेसुषभरपूर॥ता
 ॥१॥ हे नक्षत्र ॥ १६ ॥ १०० ॥ सु
 ६१ ॥ १०० ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥
 हंसचढ्योअहाके रंगरुडचढ्यो नीहरिकीपीठ
 ॥वेलचढ्योहेसिवकेऊपरसोहंमदिठोअपनीदृष्ट
 ॥देवचढ्योपातिकेऊपरजर्षिचढोढायनकिरपीठ॥

सुंदर एक आचंभाहुवापानीमाहिजरेअगीठ ॥ ८ ॥
 कपराधोबिकुगहिंधोवेमाठिबपरिघठेकुंभार ॥ सू
 ईबिचारिदरजीहीसीवेसोनातावेपकरसोनार ॥ लक
 रिबढईकुंगहिछीलेषालसुबेठिधमेंलुहार ॥ सुंदरदा
 सकहेसुनज्ञानीजेकोईयाकोकरेबिचार ॥ ९ ॥ १
 हिवहूतसूषपायोताघरमांहिबसेअबकौन ॥ लागि
 सबैमीठाईषारीमीठेलागोएकबहेलुन ॥ परवतउडे

हीउलटीस्यामरंगलाग्यो नमरउलटिकरीहूबोस्वे
 त॥ससियरउलटिराहुकोंग्रासोसरजउलटकरीग्रा
 सोकेत॥सुंदरसूगराकोंतजिभाग्योनुगरासेतिवांध्यो
 हेत॥१३॥अगनीमथनकरिलकरिकाठीसोवहलक
 रिप्रानआधार॥पानीमथिकरिधिवनीकासोसोघृत
 वायोवारभवार॥दुधदर्हीकीइछाभागीजाकूंमथतस
 कलसंसार॥सुंदरअबतोभयेसूपारेचिंतारहिनए
 कलगार॥१४॥पत्रमांहीजोलीगहिरायेजोगिमीक्षांभा
 गनेजाई॥जागेजगतसोवहीगोरषएसासब्दसनावे
 आई॥भीष्याफरेबहुतकरिताकोंसोवहिभीष्याचेले
 ई॥सुंदरजोगिजूगजूगजीविताअवधुंतकीदूरबला
 ई॥१५॥परधनहरेकरेपरनिंदापरधीकोंरोषधरमां
 ह॥मांसषायमदिरापुनीपीवेताहिमुक्तिकोसंसेना
 ह ॥हैकर्म त्यागेत ॥ १॥१॥
 ई॥एसीकरेसोसंतकहावेसुंदरऔरउपजिमरिजां
 ह॥१६॥निरदर्हीहोईतरेपसूधातिकदयावंतबुडेभ
 १॥१॥लोभीलंगेसबनकूप्यारोनरलोभीकोंवाहर
 नाहां॥मिथ्यावादिमिलेब्रह्मकूंसंलोकहेतेजमपुर

जाही॥सुंदरधूपमांहिसीतलताजरतरहेसोवेवे
 छाई॥१७॥बठईचरषाभलोसंवास्योफिरनेलाग्यो
 निकिभात॥बहुसासुकोंकहिसमझावेतुमेरेद्विगवे
 ठिकात॥ताकोतारनटूटेकबहुपुनिघटेनहिदिनरा
 त॥सुंदरविधिसंबनेजूलाहाषासानिपजेउचिजा
 त॥१८॥घरघरफीरेकुंवारीकन्याजनेजनेसूकरती
 संग॥वेस्यासोतोभईपतिव्रताएकपुरुषकेलागिअं
 ग॥कलजूगमाहीसतजुगथाव्योपापिउदेभ्रमको
 भंग॥सुंदरकहतअरथसोपावेजोनीकेकरितजे
 अनंग॥१९॥विप्ररसोईकरनेलाग्योचोकाभीतर
 बेठोआई॥लकरीमांहेचुलादियोरोटीउपरतवा
 चढाई॥षिचरिमांहिहंडियारांधीसालनआकधं
 तुराषाई॥सुंदरजि
 नकीगोअघाई॥२०॥बैलउलट
 स्तूमांहीभरिगुनअपार॥भांतिभांतिकोसौदाकी
 योआईदिसांतरयासंसार॥नायकनीपुन
 डोलेमोहिमील्योनीकोभरथार॥पुंजीजायसाह
 कौंसौपीसुंदरसिरतेंडार्योभार॥२१॥बनिमाएक

बनजकूआयोपरेतावराभारिभेदी॥भलीवस्तुक
 छूलीनीदिनीषेचीगढरियाबांधीअैठी॥सौंदाकी
 योचलिपुनीघरकूलेषाकीयोबारितरबैठी॥सुंदरसा
 हषुसीअतिहूवाबैरुगयोपुंजीमैपैठी॥२२॥पेहराइ
 तघरमुसोसाहकोरक्षाकरनेलग्योचोर॥कोतवाल
 काठोकरिबांध्योसूजेनहिसांऊअरूभोर॥राजागा
 मछोडकेभाग्योहुवोसकलजगतमासोर॥परजासु
 षिभईनगरिमेंसुंदरकोईजूलमनजोर॥२३॥राजा
 फिरेबीपतकोमाख्योघरघरटुकडामगिषीषपावपि
 यादोनीसदीनडोलेघोराचालिसकेनवीषआकअरं
 डकिलकरिचूषेछांडेबहुतरसभरेईष॥सुंदरकोउ

६ ॥ तिरी ॥ तुंगीलबैठी सारिमांड ॥ सुंदर
 कहै सीष सून मोरी अबतू धर धर फिरवो छांड ॥ २६ ॥
 पंथी माही पंथ चलि आयो सोवह पंथ लिख्यो नहि जा
 ई ॥ वाहि पंथ चल्यो उ पंथी निरभे देस पहंच्यो आई ॥
 तांहां दूकाल परे नहि कबहू सदा कर भक्षर द्यो वहरा
 ई ॥ सुंदर दूषिन को उदिसे अक्षय मूष मेरे हेस माई ॥
 २७ ॥ एक अहे रिबन मै आयो षेलन लाग्यो भलिसि
 कार ॥ कर मेधनु क कमर मे तरकस सावज घेरिवारं
 वार ॥ माख्यो सिंघ व्याघ्र पुनी माख्यो मारि बहूर मृगन
 की डार ॥ ऐसे सकल मारि धर लायो सुंदर राजहि की
 योजु हार ॥ २८ ॥ सक के बचन अमृत मई ऐसे को
 किलाधार रहै मन मांही ॥ सारो सूनै भागवत कबहू
 सार सतो उपजावे नाहीं ॥ हंस चुगे मुगता फल अर
 थ ही सुंदर मान सरोवर नाहीं ॥ काक कवि स्वर निषे
 जे ते ते सब दोर करे कहि जाई ॥ २९ ॥ नष्ट होई द्विज
 अष्ट किया करि कष्ट किये नहि पावै ठौर ॥ महिमा
 सकल गईति न केरी रहत सब न सिर मोर ॥ जित ती
 त फिरे नहि कलू आदरति न कौ को उन घाले क्यौर

तीनोहे॥ सुंदर कहत एसो कोउ एक सरवीर सीस के
 उतार के सज सजाई लीनो हैं॥ २॥ घर माही सूर मा कहा
 वत सकल हे पावरो पिर हे रिन माही रज पूत कोउ हय
 गय गाजत जुरत जहां दल हे॥ बाजत झंझाउ सहनाई
 सिंधू राग पुनी सुनत ही कायर की छूटी जात कल हे॥ ऊ
 लकत बरछी तरवार वहे मार मार करत परत फल फल
 हे॥ ऐसे जुद्ध मे अडिग सुंदर सभट सोई घर माही सू
 र मा कहा वत सकल हे॥ ३॥ सूर मा के देवीयत सीस
 बिनु धर हे असन बसन बहु मूषन सकल अंग संप
 ति विविध भांति मर्यो सब धर हे॥ अवनन गारो सुनी
 छिनक मे छंडि जात ऐसे नही जानै कछु मेरे उहां मर
 हे॥ मन मे उछाहरन माही टूक टूक होई निर मे नि स
 कवा के रच हन डर हे॥ सुंदर कहत कोऊ देह को ममत्व
 नाहीं सूर मा को देवीयत सीस बिनु धर हे॥ ४॥ ऐसे सू
 र वीर धीर मीर जाय मारि हे ऊऊ बे को चाव जा के ता कि
 ता कि करे धाव आगे धरि पाव फिर पीछे न संभार हे॥ हा
 थ लीये हथीयार तीछन लगाये धार वार नही लागे सब
 पिसुन प्रहार हे॥ वोट नही राखे कछु लोट पोट होई जाई

चोटनहीचूकेसिसरिपुकोउतारहे॥सुंदरकहतता
हीनेकहूनसोचपोचसोईसूरवीरधीरमीरजायमारी
हे॥५॥सोईसूरवीरधीरस्यांमकेहजूरहेअधिकअ
जानबाहूमनमेंउछाहकीयेदीयेगजगाहमुःषवरष
तनूरहे॥काढेजबकरवालबालसबठाढेहोईअति
विकरालुपुनिदेषतकरूहे॥नेकनउसासलेतफौज
कूंफिट्ठाइदेतषेतनहीछांडेमारिकोरचकचूरहे॥सुंद
रकहतताकीकीरविप्रसिद्धहोईसोईसूरवीरधीर=
स्यांमकेहजूरहे॥६॥असोसूरवीरकोउकोटिनमेंए
कहाज्ञानकोकवचअंगकाहुसोनिहोईभंगटोपसीस
ऊलकतपरमविवेकहे॥तीनेताजीअसावारलीये
समसेरसारआगेहीक्रोंपावधरेभागनेकीटेकहे॥
छूटतबंदूकबांनमचेजहांघमसांनदेयीकेषिसुनंद
लमारतअनेकहे॥सुंदरसकललोकमाहीताकेजे
जेकारअसोसूरवीरकोउकोटिनमेंएकहे॥७॥सा
धूकोसंग्रामहेअकसूरवीरतेंसूरवीररिपुकोनभुं
नुदेषिचोटकरेमारेतबताकीताकीतरवारतीरसों
॥साधूआठोंजांमबेठोमनहीसोंजुद्धकरेजाकेमुह

माथोनहीदेषीयेवंशरीरसों॥सूरवीरभूमीपरदूरही
 तेदोरिलगेसाधूसुनीकोंपकरिराषेधरधीरसों॥सुंद
 रकहततहांकाहूकोनपावटिकेसाधूकोसंग्रामहेंअ
 धिकसूरवीरसों॥८॥साधूसोनसूरवीरकोउहमजां
 न्यौहेंपेंचकरडीकमानज्ञानकोलगायोबांनमाख्यौम
 हाबलमनजगजिनरान्यौहें॥ताकेअगवाणीपंच
 जोधाउकतलकीयोओररह्योपख्योसबअरिदलभा
 न्यौहें॥असोकोउसभटजगतमेंनदेषीयतजाकेआ
 गेकालहूसोकंपिकेपरान्यौहें॥सुंदरकहतताकीसो
 भातिहूंलोकमांहीसाधूसौंनसूरवीरकोईहमजां
 न्यौहें॥९॥कांससोप्रबलमहाजीतेजिनतीनलोक
 सोतोएकसाधूकेविचारआगेहाख्योहें॥क्रोधसोक
 रालजाकेदेषतनधीरधरेसोउसाधूसमाकेहथ्यार
 सोंबिहाख्योहें॥लोभसोसुभटसाधूतोषसोंगिरायदी
 योमोहसोनृपतिसाधूज्ञानसंप्रहाख्योहें॥सुंदरक
 हतएसोसाधूकोईसूरवीरताकीसबहीपिसुनदलमा
 ख्योहें॥१०॥वेरीसबमारिकेनचितहोयसूतोहेंमारे
 कामक्रोधसबलोभमोहपीसडारेइंद्रिद्रुकतलकरि

कीयोरजपूतोहे॥मास्यौमहामतमनमारेअहंकार
 रमारेमदमछरउअसोरनरूतोहे॥मारीआसात्रछा
 पुनिपापनिसापनिदेउसबकोप्रहारकरिनिजपदप
 हूंतोहे॥सुंदरकहतएसोसाधूकोईसूरवीरवेरीसबमा
 रीकेनचिंतहोयसूतोहे॥११॥साधूसूरवीरवेईजगत
 मेंआयेहेंकीयेजनमनहाथइंद्रिनकोंसबसाथपेरी
 घेरीआपनेईनाथसोंलगायेहें॥ओरउअनेकवेरीमारे
 सबजुद्धकरिकामक्रोधलोभमोहबोदकेंबहायेहें॥की
 योहेंसंग्रामजिनदीयोहेंभगाईदलअसेमहारुभटसु
 ग्रंथनिमेंगाएहें॥सुंदरकहतओरसूरयोहिषपिगए
 साधूसूरवीरवेईजगतमेंआएहैं॥१२॥असेकोंनसूर
 वीरसाधूकेसमानहेंमहामतहाथीमनराष्योहेपकरि
 जिनअतिहीप्रचंडजामेबहुतगुमानहें॥कामक्रोधलो
 भमोहबांधेचास्यौपापपुंनिछूटनेनपावेनेकप्रानपील
 वानहें॥कबहूजौकरेजोरसावधानसांरुसारेसदाएक
 हाथमेंअंकुसगुरुज्ञानहें॥सुंदरकहतओरकाहूकेन
 वसहोईअसेकोंनसूरवीरसाधूकेसमानहें॥१३॥॥
 इतिसुरातएकोअंगसमाप्तः॥अंग२१॥॥छु॥

अथसाधूकोअंगप्रारंभः॥ ॥ छंदइंद्रवजय॥

साधूकोसंगसदाअतिनीको॥ प्रीतिप्रचंडलगेपरब्रह्म
 हींओरसबेकछूलागतफीको॥ सुद्धहृदेमनहोईस्नि
 र्मलद्वैतप्रभावमिटेसबजीको॥ गोष्ठिरुज्ञानअनंतच
 लेजिहांसुंदरजेसेप्रवाहनदीको॥ ताहीतेजानकरोनि
 सवासरसाधुकोसंगसदाअतिनीको॥ १॥ हेजगमां
 हीबडोसतसंगाजोकोईजाईमिलेंउनसोंनरहोतपवि
 त्रलगेहरिरंगा॥ दोषकलंकमबेमिटिजाईकैहोतउत्त
 गा॥ ज्यौंजलओरमलीनमहाअतिगंगमित्योहोई
 जातहेंगंगा॥ सुंदरसुद्धकरेंततकालजुहेजगमाही
 बडोसतसंगा॥ २॥ साधूकेसंगतेसाधूहीहोईज्यौंल
 टअंगकरेअपनेसमतासन्नभिन्नकहेनहीकोई॥
 ज्यौंद्रुमओरअनिकनिभांतिनचंदनकीठिगचंदन
 होई॥ ज्यौंजलछुद्रमिलेंजबगंगहीहोईपवित्रउहे
 जलसोई॥ सुंदरजातस्वभावमिटेसबसाधूकेसं
 गतेसाधूहीहोई॥ ३॥ संतनिकेजुप्रभावहेअसो
 जोकोउआवतहेउनकेठिगवाहीसनावतशब्दसंदे
 सो॥ ताहीकेतोसीहीओषदीलावतजाहीकोरोगही

जानतजेसो॥कर्मकलंकहिकाटतहेंसबसुद्धकरेपु
नीकंचनतेसो॥सुंदरवस्तुविचारतहेनितसंतनिको
जुप्रभावहेअसो॥४॥जोपरब्रह्ममिल्योकोउचाहें
ततो नितसंतसमागमकीजें॥अंतरमेदिनिरंतरहोय
केलेउनकोअपनोमनदीजे॥वेमुःषद्वारउचारकरेंकछू
सोअनयाससुधारसपीजें॥सुंदरसूरप्रकासभयोज
बओरअज्ञानसवेतमछीजें॥५॥जादिनतेसतसंग
मिल्योतवतादिनतेभ्रमभाजगयोहें॥ओरउपायथ
केसबहीतवसंतनिअद्वयज्ञानदयोहें॥पोतप्रवाल
हीक्यौंकरिछूवतअेकअमोलकलालरयोहें॥कोन
प्रकाररहेरजनितमसुंदरसूरप्रकासभयोहें॥६॥सं
तसदासबकोहितवंछितजानतहेनरबूडतकाढेंदेउ
पदेसमिटार्ईसबेभ्रमलेकरिज्ञानजहाजहीचढें॥जे
विषयासुषनाहीनछांडतज्यौंकपिमूर्तीगहेंसठगाढें
॥सुंदरवेदुःषकेंसुःषमानतहाटहिहाटविकावतआ
ढें॥७॥सोअनयासतरेभवसागरजोसतसंगतमेंच
लिआवे॥ज्यौंकणिहारनभेदकरेकछूआईचढेंति
हीनावचढावे॥ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यहूसूद्रमलेछ

चंडालही पार लगावे ॥ सुंदरवार कछून ही लागत या
 नर देह असे पद पावे ॥ ८ ॥ संतनिकी गति क्यौं को उजा
 ने ज्यौं ही मषाई पीवे अरु वाढे ही ते से ही ये सब लोक व
 षाने ॥ ज्यौं जल में ससिके प्रति बिंब ही आपस माजल
 जंतु प्रमाने ॥ ज्यौं षगळां ह धरा पर दी सत सुंदर पंषि उ
 ढे असमाने ॥ त्यों सठ देह निके कत देषत संतनिकी गति
 क्यौं को उजाने ॥ ९ ॥ जो कछू साधू करे सोई छाजे ज्यौं ष
 परा कर ले घर डोलत मागत सी ष ही तो न ही लाजे ॥ जो
 सुः ष से ज पठे बर भूषन लावत चंदन तो अति राजे ॥
 जो को उ आय कहें सुः ष तें कछू जानत ता ही बयार ही बा
 जें ॥ सुंदर संसय दूर भयो सब जो कछू साधू करे सोई
 छाजे ॥ १० ॥ एस बजान हू साधू के लछन को उ कनिंदत
 को उ क वंदत को उ क देत हें आई के भछन ॥ को उ क आ
 य लगावत चंदन को उ क डारत धूरित तसन ॥ को उ क
 हेय ह मूर ष दी सत को उ क हेय ह आं हि बिचछन ॥ सुंद
 र का हू सौरागन द्वेषन एस बजान हू साधू के लछन ॥ ११
 ॥ तात मिले पुनि मात मिले सुत भ्रात मिले जुवत

ई॥ यहलोकमिले सरलोकमिले विधिलोकमिले वै
 सुख २॥ संदर और मिले सबही सुष संत समाग
 दुर्लभ ३॥ १२॥ ॥ छंद मनहर ॥ ॥ देव हू भये ते
 इंद्र हू ते कह ॥ ॥ ते ते जें व हूरि आई य तु
 ॥ मानुष भये ते कहा भूपति भए ते कहा दूज हू भए ते
 ॥ ॥ ईय पुहं उहू पे ॥ ॥ ॥ ॥
 कहा पनंग भये ते कहा क्यों अघाई य तु हे ॥ कूटिबे को
 संदर एक साधू संग जिन की कृपा ते अति सुष पाई य तु
 हे ॥ १३॥ इंद्रानि अंगार धरि चंदन लगायो अंग वाही दे
 षी इंद्र अतिकाम वस भयो हे ॥ सुकरी हू कर दम कीच म
 हुं लोटि करि आगे जाई सूकर को मन हरि लयो हे ॥ जे
 सो सूष सुकरे को ते सो सुःष भववा को ते सो सुःष नरप
 सपं धिन कौ दयो हे ॥ संदर कहत जा के भयो ब्रह्मानंद सुः
 ष सोई साधू जगत में जीती करि गयो हे ॥ १४॥ धूलि जे
 सो धन जा के सू लिसों संसार सुष भूलि जे सो भाग देखें
 अंत जे सीयारी हैं ॥ पाप जे सी प्रभु ताई साप जे सो सन
 मान बडाई बिछुन जे सी नाग निसीनारी हे ॥ अग्नि जे
 सो इंद्र लोक विघ्न जे सो विधि लोक कीर्तिकलंक जे सी

सिधिसीठगारीहे॥वासनानकोईवाकीअसीमति

सुंदरकहतताहीवंदनाहमारीरेहें॥१५॥अ

सोकोउसाधूसोतोरामजीकोंप्यारोहेकामहीनक्रोध
जाकेलोभहीनमोहताकेमदहीनमल्लरनकोउनविका
रोहे॥दुःखहीनसुःखमानेपापहीनपुंन्यजानेहरषन
सोकआनेदेहहीतेन्यारोहें॥निंद्यानप्रसंसाकरेरागही
नदोषधरेलेंनहीनदेनजाकेकलूनपसारोहे॥सुंदरक
हतताकीअगमअगाधगतिअसोकोउसाधूसोतोर
मजीकोंप्यारोहे॥१६॥आठोजांमजमनेमआठोजांमर
हेप्रेमआठोजांमजोग्यजज्ञकीयोबहूदानजू॥आठो
जांमजपतपआठोजांमलीयोवृतआठोजांमतीर्थमे
करतहेस्नानजू॥आठोजामपूजाविधिआठोजाम=
आरतिहूआठोजामदंडव्रतसमर्नध्यानजु॥सुंदरक
हतजिनकीयोसबआठोजांमसोईसाधूजाकेउरएक
भगवानजु॥१७॥साधूहीकेसंगतेस्वरूपज्ञानहीत
हेजेसेंआरसीकोमेलकाहतसीकलिगरमुषमेनफे
रीकोऊवहेवाकोपोतहे॥जेसेबैदनेंनसेसलाकमेलि
सुधकरेपटलगएतंतहांजौंकीत्यौंहीजोतहे॥जेसें

वायूवाटरविषेरकेंउडाईदेतरवितोआकासमांहीस
 दाईउद्योतहे॥सुंदरकहतअमछिनमेंविलाईजातसा
 धूहिकेसंगतेस्वरूपज्ञानहोतहे॥१८॥संतजनआयेहे
 सोपरउपकारकौंमृतकंदादुरजीवसकलजीवायेजिन
 वर्षतबांनीसुषमेंधकीसीधारकौं॥देतउपदेसकेउस्वा
 र्थनलवलेसनिसदिनकर्तहेंब्रह्महिबिचारकौं॥और
 उसंदेहसबमेटतनिमषमांहीसूर्जमिटआईदेतजेसेंअं
 धकारकौं॥सुंदरकहतहंसवासीसुःषसांगरकेसंत
 जनआएहेंसोपरउपकारकौं॥१९॥संतनिकेसमकहो
 औरकहादीजीयेंहिराहीनलालहीनपारसनचिंता
 मनीऔरउअनेकनगकहोकहाकीजीये॥कामधेनं
 सुरतरुचंदननदीसमुद्रनौकाहूजिहाजबेठकबहूक
 छीजीये॥पृथ्वीआपतेजवायूव्योंमलोंसकलजडचंद
 सूरसीतजलतपतगुनलीजीये॥सुंदरविचारहमसो
 धेसबदेषेलोकसंतनिकेसमकहोऔरकहादीजीये
 ॥२०॥संतनिकीमहीमातोश्रीसुःषसुनाईहेजिनतन
 मनमानदीनोसबमेरेहेतऔरउममत्वबुधीआपनी
 उठाईहे॥जागतउसोवतउगावतहेंमेरेगुनकरत

भजनध्यान दूसरीन काई है ॥ तिनके मे पीछे लग्यो फिर
 तहां निस दिन सुंदर कहत मेरी उन ते बड़ाई है ॥ वहे
 मेरे प्रीय में हों उनके आधीन सदा संतनिकी महीमा
 तो श्री मुःष मुनाई है ॥ २१ ॥ साधू की परीषा को उके से
 करि जानें हैं जगत व्योहार सब देषत है ऊपर को अंतः
 नर्क की तो नेक न पहीचानें हैं ॥ छाजन के भोजन के हल
 न चलन कछू और की उक्तीया के तो मध्य बंधान है ॥
 आपने ई अवगून आरोये अज्ञानी जीव सुंदर कहत
 ताते निंदा ही कौठान हैं ॥ भाव मे तो अंतर हेराति अरु
 दिन के सो साधू की परीषा को उके से करि जानें ॥ २२ ॥ सं
 तनिकी निंदा करे सो तो महानी चहे ऊही दगा बाज उही
 कुष्टी जु कलंक सख्यौ ऊही महा पापी वा के नष सिष की
 चहे ॥ ऊही गुरु द्रोही गौ ब्राह्मण हननहार ऊही आत
 मा को घाती हिंसी वा के बीच हे ॥ ऊही अथ को समुद्र ऊ
 ही अग को पहार सुंदर कहत वा की बुरी भांत मी चहे ॥
 ऊही हेम लेख ऊही चंडाल बुरे ते बुरे संतनिकी निंदा क
 रे सो तो महानी चहे ॥ २३ ॥ संतन को निंदा को सत्याना
 स जाई है परि हे बिजुरी ता के ऊपर सो अचानक धूरि उ

डिजायकहू ठोरनहीपाईहे॥पीछेकेउयुगमहानरक
 मेपरेजाईउपरतेजमहूकीमारबहूषाईहे॥ताकेपीछे
 भूतप्रेतथावरजंगमजोनीसहेगोसंकटतबपीछेपछ
 ताईहे॥सुंदरकहतओरभुगतेअनंतदुःखसंतनिकौनि
 देताकौसत्यानासजाईहे॥२४॥कूपमेंकोमीडकसोंकू
 पकौंसरावतहेराजहंससोंकहतकेतोतेरोसरहे॥मस
 काकहतमेरीसरभरकौनउडेमेरेआगेगरुडकीकेती
 एकजरहे॥गुवरीलगोलीकोंछुटाईकरिमनेमोदम
 धूपकौनिंदतसुगंधजाकौघरहे॥अपनीनजानेग
 तिसंतनिकोनामधरेसुंदरकहतदेषोअसेमूढनरहे
 ॥२५॥कोउसाधूभजनीकहूतोलयलीनअतिकबहू
 प्रारब्धकर्मधकाआईदयौहे॥जेसेंकोउमारगमेच
 लतेआधुडिपरेफेरीकरिउठेतबउहेपंथलयौहे॥जे
 सेंचंद्रमाकीपुनिकलाछीनहोईगईसुंदरसकललो
 कहूतीयाकौनयोहे॥देवहूकोदेवातनगयोतामेक
 हाभयोपीतरकोमोलसोतोनाहींकछूगयोहे॥२६॥
 संतनिकोगुनगहेसोतोबडभागीहेताहीकेभगति
 भावउपजेहेअनायासजाकौमतिसंतनिसौसदाअ

नुरागी है ॥ अति सुःख पावेता के दुःख सब दूर होई और
 ही का हू की जिन निंदा सुःख त्यागी है ॥ संसार की पास का
 टी पाई है परम पद सत्संग ही तेज के असीम तिजागी
 है ॥ सुंदर कहत ता को तुरत कल्याण होई संतनिको गु
 न गहे सोई बड भागी हैं ॥ २७ ॥ संतनिकी सेवा करे सो
 ई निस्तार है जोग जज्ञ जप तप तीर्थ वृता दीदान साधन
 सकल नहिया कीसर भर है ॥ और देवी देवता उपास
 ना अनेक भांति संकसब दूर करिति न ते न हर है ॥ सब
 ही के सीस पर पाव दे मुगति होई सुंदर कहत सो तो ज
 न में न मर है ॥ मन वच काय करि अंतर न राखे कछू संत
 निकी सेवा करे सोई निस्तार है ॥ २८ ॥ संत जन नि सदि
 न ले बोई करतु है प्रथम सुजस लेत सील हू संतोष लेत
 क्षमा दया धर्म लेत पाप ते डरतु हैं ॥ इंद्रनी कौंधेरी लेत
 मन ही कों फेरी लेत जोग की जुगतिले त ध्यान ईधरतु
 है ॥ गुरु को बचन लेत हरी जी को नाम लेत आत्मा को
 सो धिले त भोजन लेत रतु हैं ॥ सुंदर कहत जग संत कछू
 लेत न ही संत जन नि सदिन ले बोई करतु है ॥ २९ ॥ संत
 जन नि सदिन दे बोई करतु हैं साचो उपदेस देत भली भ

लीसीषदेतसमतासुबुधीदेतकुमतिहरतुहे॥मारग
 दिषाईदेतभावहुभगतिदेतप्रेमकीप्रतीतिदेतअभरा
 भरतुहे॥ज्ञानदेतध्यानदेतआतमाविचारदेतब्रह्मको
 बताईदेतब्रह्ममेचरतुहें॥सुंदरकहतजगसंतकछूदेत
 नाहींसंतजननिसदिनदेवोईकरतुहें॥३०॥ ॥इतिसा
 धूकोअंगसमाप्तः॥अंग२२॥ ॥७७॥ ॥७७॥
 अथज्ञानीकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइंद्रवजय॥ ॥जा
 केअदेमहीज्ञानप्रकासतताकोस्वभावरहेक्योंहीछानों
 ॥नेनमेवेनमेसेनमेंजानीयेऊठतबैठतहीअलसानों
 ॥ज्योंकछूभक्षकीयोउदगारतकेसेंहीराधीसकेनअ
 घानों॥सुंदरदासप्रसिद्धदिषावतधानोकेषेतपरार
 तेंजानों॥१॥ज्ञानप्रकासभयोजिनकेउरवेघटक्योंही
 छिपेनरहेगेंभोडलमाहीदुरेनहींदीपकजद्यपिवेमुः
 षभोनगहेंगे॥ज्योंघनसारहीगोप्यछिपावततोही
 सगंधहीतग्यलहेंगे॥सुंदरओरकहाकोउजानतबू
 ठेकीबातबटाउकहेंगे॥२॥बोलतचालतबैठतऊठ
 तपीवतघातहूसूंघतस्वासे॥ऊपरतोव्यवहारकरेस
 बभीतरस्वप्नसमानजुभासें॥लोकरितीरपतालकों

साधतमारतहेपुनफेरअकासे॥सुंदरदेहक्रियासब
 देशतकोऊकपावतज्ञानीकोआसे॥३॥बैठेतोबैठेचले
 तोचलेपुनीपीछेतोपीछेहीआगेतोआगे॥बोलेतोबो
 लेनबोलेतोमोनेहीसोवैतोसोवेरुजागेतोजागे॥षाईतो
 षाईनहीतोनहीजुग्रहेतोग्रहेपुनित्यागेतोत्यागे॥सुंदर
 ज्ञानिकीएसीदशायहजानेनहींकछूरागविरागे॥४॥
 देशतहेपेकछूनहीदेशतबोलतहेनहीबोलबषाने॥
 सूंघतहेनहीसूंघतघ्रानसुनेंसबहेनसुनेंयहकाने॥
 भक्षकरेअरुनाहीभषेकछूभेटतहेनहीभेटतप्राने॥ले
 तहेदेतहेलेतनदेतहेसुंदरज्ञानिकीज्ञानिहीजाने॥५॥
 काजअकाजभलेनबुरोकछूउत्तममध्यमद्रष्टनआवे
 ॥कायकवायकमानसकर्मसुआपविषेनतिहूठहरा
 वे॥हूंकरीहोनकीथौनकरोअबयौंमनइंद्रनिकोंवर
 तावे॥दीसतहेव्यवहारविषेनितसुंदरज्ञानीकीकोउ
 कषावे॥६॥देशतब्रह्मसुनेपुनिब्रह्महीबोलतहेसोईब्र
 ह्महीबानी॥मोमीहूनीरहीतेजहूवायूहूव्योमहूब्रह्म
 जहांलगभानी॥आदीहूअंतहूमध्यहूब्रह्महीहेसबब्र
 ह्मयहेमतिठानी॥सुंदरज्ञेअरुज्ञानहूब्रह्महेआपहूब्र

हमहीजानतज्ञानी॥७॥बेठतकेवलऊठतकेवलंबोल
तकेवलबातकहीहैं॥जागतकेवलसोवतकेवलजो
वतकेवलद्रष्टीलहीहैं॥भूतहूकेवलभव्यहूकेवलव
र्ततकेवलब्रह्मसहीहे॥हेसबहीअर्धमुर्धसकेवल
सुंदरकेवलज्ञानउहीहे॥८॥केवलज्ञानभयोजिनके
उरतेअर्धउर्धसलोकनजाही॥व्यापकब्रह्मअखंड
निरंतरवाविनओरकहूंकलूनाही॥ज्यौंघटनासभये
घटव्यौंमसलीनभयोपुनहेनभमांहीत्यौंपुनीमुक्तिज
हांवपुछाडतरसुंदरमोक्षसिलाकहूकाही॥९॥आदी
हूतो नहिअंतरहेनहीमध्यवारीरभयोअमकूपा॥भा
सतसेकलूओरकोओरईज्यौंरजुमेअहीसीपमेस्त्पा
॥देषीमरीचिउठ्यौविचविभ्रमजानतनाहीउहेरवि
धूपा॥सुंदरज्ञानप्रकासभयोजवएकअषंडितब्रह्म
अनूपा॥१०॥ ॥छंदमनहर॥ ॥जाहीकेविवेकज्ञा
नताहीकेकुसलभयोजाहीवोरजाईवाकोंताहीवोर
सुःषहें॥जेसेंकोईपायनीपेजारकोंचढाईलेंतताकों
तो नकोउकाटेषोभरेकोदुःषहे॥भावेकोउनिंदाकरे
भावेतोप्रसंसाकरेवेतोदेषेआरसीमेंआपनोईमुः

षहे॥ देहको व्योवारसवमिथ्याकरजानतहे सुंदर कह
 त एक आतमांहीरुषहे॥११॥ अंतःकरनजाके तमगुन
 छार्इरह्यो जडता अज्ञानवाके आलसभैवासहे॥ रज
 गुनको प्रभाव अंतःकर्नजाके विविध कर्मवाके कामना
 कोवासहे॥ सत्वगुन अंतःकरनजाके देषीयत क्रयाक
 रिसुद्धवाके भक्तिको निवासहे॥ त्रिगुण अतीत साक्षी
 तुरियास्वरूप जान सुंदर कहत वाके ज्ञानको प्रकास
 हे॥१२॥ तमोगुन बुधी सो तोत वाके समान जे सेंताके
 मध्यसुरज की रचहू न जोतहे॥ रजोगुन बुधी जे सें आ
 रसीको उंधो वोरताके मध्यसूर्ज की कछूक उद्योतहे॥
 सत्वगुन बुधी जे सें आरसी की सूधी ओरताके मध्यप्र
 ति बिंबसूर्जको पोतहे॥ त्रिगुण अतीत जे सें प्रतिबिंब
 मिटी जात सुंदर कहत एकसूर्ज ही होतहे॥१३॥ सब से
 उदासी होई काढि मन भिन्न करेता को नाम कह्यत प
 र्म विरागहे॥ अंतःकर्नहु की वासनानि वर्त्त होई ताको
 मुनी कहत हैं उहे वडो त्यागहे॥ चित्त एकई स्वर सनें क
 हन न्यारो होई उहे भक्त कह्यत उहे प्रेममार्ग हे॥

भ्रमभागहे ॥१४॥ कोउ नृप फूलनिकीसेजपरिसू
 तो आईजबलगजाग्यो तोलों अति सुषमान्यो हे ॥ नी
 दजब आई तब बाही को स्वपन भयो जब पस्यो नर
 क के कुंड में यों जान्यो हे ॥ अति दुःष पावे परनिक
 स्यो नक्यों ही जाई जागि जब पस्यो तब स्वपन बषान्यो
 हे ॥ यह जूठ वह जूठ जाग्रत स्वपन दोउ सुंदर कहत
 ज्ञानी सब भ्रम भान्यो हे ॥१५॥ स्वमे मेरा जा होई स्व
 पने में रंक होई स्वपने में सुःष दुःष सत्य करि जाने हे ॥
 स्वमे में बुधी हीन मूढ न समजे कछू स्वप्न में पंडित बहू
 ग्रंथ निबषांने हे ॥ स्वमे में कामी इंद्र निके वस परस्यो स्व
 पने में जति होई अहंकार आने हे ॥ स्वमे में जाग्यो जब
 सम ऊपरी हे तब सुंदर कहत सब मिथ्या करि माने हे ॥
 ॥ विधिन निषेद कछू भेदन अर्भेद पुनी क्रीया सो कर
 त दीसे यों ही नित प्रत हे ॥ काहू को निकट राषे काहू को
 तो दूर राषे काहू सो निरेन दूर एसी जाकी मर्त हे ॥ रा
 ग हून दोष को उ सो कन उ छाह दोउ एसी विधि रहें क
 हूं रतिन विरती हे ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥
 ने सुंदर ज्ञानी की कछू अदभूत गती हे ॥१७॥ कामी हे

नजतीहेनसूंमहेनसतीहेनराजाहेनरंकहेनतनहे
 नमनहे॥सोवेहेनजागेहेनपीछेहेनआगेहेनग्रहे
 हेनत्यागेहेनघरहेनवनहे॥स्थीरहेनडोलेहेनमोनि
 हेनबोलेहेनबंधेहेनघोलेहेनस्वामीहेनजनहे॥वे
 सोकोउहोवेजबवाकीगतीजानेंतवसुंदरकहतज्ञा
 नीज्ञानसुधधनहे॥१८॥ ॥इतिज्ञानीकोअंगस
 साप्तः॥ ॥अंग२२॥ ॥ध्रु॥ ॥अथसारव्यज्ञा
 नकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहरा॥ ॥छितीजल
 पावकपवननप्तमीलिकरीसब्दरुसपरसरूपरस
 गंधजूश्रोत्रत्वक्चक्षुघ्राणरसनारसकोज्ञानवाक
 पाणीपादगुदाउपस्थहिबंधजू॥मनबुधित्व
 हंकारएचोवीसतत्त्वपचीसमोजीवतत्त्वकरतहेद्वं
 धजू॥षट्वीसमोहेब्रह्मसुंदरसुनिहकर्मव्यापक
 अर्षडएकरसनिरसंधजू॥१॥श्रोत्रदिगत्वक्वा
 यूलोचनप्रकासरविनासिकाअस्वनिजिह्वावरुन
 बंधानीये॥वाकअग्निहस्तइंद्रचंद्रउपेंद्रवलमेदु
 प्रजापतिगुदामृत्फहूकोंठांनीये॥मनचंद्रबुधीवि
 धित्ववासुदेवआहीअहंकाररुद्रकोप्रभावक

रिमानीये॥ जाकी सता पाई सब देवता प्रकासत हैं सुंदर
 सो आत माही न्यारो करि जानीयें॥ २॥ ॥ छंद इंद्र वज्र
 य॥ ॥ श्रौत्र स्नेह द्रव्य देवत हेर सनार सघान स्तंभ पि
 यारो॥ कोमलता त्व कजान तहे पुन बोलत हे सुषराब्द
 कचारो॥ पाणी ग्रहे पद गौन करे मल मुत्र तजे उभयो
 अध द्वारो जाके प्रकासे प्रकासत हैं सब सुंदर सो ईर हे
 घट न्यारो॥ ३॥ बुधि भ्रमे मन चित भ्रमे अहंकार भ्र
 मे कहा जानत नाही॥ श्रौत्र भ्रमे त्व कघान भ्रमे रस
 नां द्रव्य देवी दसो दिस जाही॥ वाक्य भ्रमे कर पाद भ्र
 मे गुद द्वार उपस्थ भ्रमे कहू काही॥ तेरे भ्रमा ए भ्रमे स
 बही पुनी सुंदर तू क्यों भ्रमे उन मांही॥ ४॥ बुद्धि को बु
 द्धि स्तुति को चित अहं को अहं मन को मन को मन बो
 ई॥ नेन को नेन हे बेन को बेन हे कान को कान तु चालक
 होई॥ घ्रान को घ्रान हे जीभ को जीभ हे हाथ को हाथ
 पगे पग दोई॥ सीस को सीस हे प्रान को प्रान हे जीव को
 जीव हे सुंदर सोई॥ ५॥ ॥ छंद मन हर॥ ॥ प्रहृ३॥
 के से के जगत य हर न्यो हे जगत गुरु मो सो कहो प्रथ
 म ही को न तत्व की नो हे॥ पुष्प के प्रकृति के महत त्व अ

हंकार किधों उपजायत मरजसतीनोहे ॥ किधोव्यो
 मवायु तेज आपकै अवनी कीन कीधों पंचविषय प
 सार करीलीनोहे ॥ किधों दस इंद्रि किधों अंतःकर्ण की
 न सुंदर कहत किधों सकल बहीनोहे ॥ ६ ॥ ॥ छंद मन
 हर ॥ ॥ उत्तर ॥ ॥ ब्रह्म ते पुरुष अरु प्रकृति प्रगट भई
 प्रकृति ते महत त्व पुन अहंकार हे ॥ अहंकार हूते तीन
 गुन सत्वरजतमत म हूते महा भूत विषय पसार हैं ॥ र
 ज हूते इंद्रि दस प्रथक प्रथक भई सत्त्व हूते मन आदी
 देवता विचार हे ॥ असे अनुक्रम करी सीषकों कहत
 गुरु सुंदर सकल यह मिथ्या भ्रम जार हे ॥ ७ ॥ ॥ प्रश्न
 ॥ मेरो रूप सोमी हे के मेरो रूप अपहे के मेरो रूप तेज
 हे के मेरो रूप पो न हे ॥ मेरो रूप व्योम हे के मेरो रूप इंद्रि
 दस अंतःकर्ण हे के बेटी हे के गोन हे ॥
 अहंकार महत त्व प्रकृति पुरुष किधों बोले हे के मोन हे
 मेरो रूप स्थूल हे के संन्य आह ॥
 रु मेरो रूप को न हे ॥ ८ ॥ ॥ उत्तर ॥ ॥ तू तो कछु सोमी
 नाहीं आप तेज वायू नाहीं व्योम पंचविषे नाहीं सो तो
 भ्रम रूप हे ॥ तू तो कछु इंद्रि अरु अंतःकरण नाहीं त

गुनतूतो नही न तो छांही धूपहे ॥ तू तो अहंकार नाही पु
 नी महत्तत्त्व नाही प्रकृती पुरुष नाही तू तो स्व अन्नूपहे ॥
 सुंदर विचार ऐसे सिष सों कहत गुरु नाही नाहीं कहत
 रहे सो तेरो रूपहे ॥ ९ ॥ तेरो तो स्वरूपहे अन्नूप चिदानं
 व्यन देह तो मलीन जड या विवेक की जीये ॥ तू तो नि
 ह संग निराकार अविनासी अज देह तो विनास वंत ताही
 नही धी जीये ॥ तू तो षठ उर मीर हित सदा एकर संदेह के
 विकार सब देह सिर दी जीये ॥ सुंदर कहत यों विचार =
 आपु भिन्न जानी परकी उपाधी कहा आप षे चली जीये
 ॥ १० ॥ देह ही नरकरूप दुःख को नवार पार देह ही स्वर्गरू
 प जूठो सुःख मान्यो हे ॥ देह ही कौं बंध मोक्ष देह ही अप्रो
 क्ष प्रोक्ष देह ही के कीया कर्म सुभार सुभठान्यो हे ॥ देह
 ही मे और देह पुसी कै विलाष करे ताही को सम ऊ विना
 आत मा बंधान्यो हे ॥ दोउ देह ते अलिप्त दोउ कौ प्रकास
 कहे सुंदर चैतन्य रूप न्यारो करि जांन्यो हे ॥ ११ ॥ देह हले
 देह चले देह ही सों देह मिले देह षाई देह पीवे देह ही भर
 त हे ॥ देह ही हिमारे गरे देह ही पावक जरे देह रन मां ही
 जूरे देह ई परत हे ॥ देह ई अनेक कर्म करत विविध भां

तीचमककीसतापाईलोहजोंफिरतहे॥आतमचैत
 न्यरूपव्यापकसाक्षीअनूपसुंदरकहतसोतोजन्मे
 नमरतुहे॥१२॥देहयहकिनकोदेहपंचभूतनिकोपंच
 भूतकोनतेहेतामसअहंकारते॥अहंकारकोनतेहे
 जासोमहतत्वकहेमहतत्वकोनतेहेप्रकृतिसंसारते॥
 प्रकृतीसोकोनतेहेगुणहेजाकोनामपुर्वसोकोनतेहे
 ब्रह्मनिराधारते॥ब्रह्मअवजान्योहमजान्योहेतोनि
 श्चेकरनिश्चेहमकीयोहेतोचुपमुःषद्वारते॥१३॥ए
 कघटमाहीतोसुगंधजलभरीराख्यौएकघटमाहीतोदु
 र्गंधजलभर्यौहे॥एकघटमाहीपुनीगंगोदकराख्यौ
 आनीएकघटमाहीतोआनीभदीराउकराख्यौहे॥एकघृ
 तएकतेलएकमाहीलगुनीतसबहीमेंसविताकोप्रति
 बिंबपर्यौहे॥तेसेहीसुंदरउंचनीचमध्यएकब्रह्मदे
 हभेददेषीमिन्नमिन्ननामधर्यौहे॥१४॥भोमपरअ
 पअपहूकेपरपावकहेपावककेपरपुनीवायूहूबह
 तहे॥वायूपरव्योमव्योमहूकेपरइंद्रीदशइंद्रनिकेपर
 अंतःकरनरहतुहे॥अंतःकरनपरतीनोगुनअहंका
 रअहंकारपरमहतत्वकोलहतुहे॥महतत्वपरमूल

मायामायापरब्रह्मताहीतेंपरातपरसुंदरकहतुहें॥

१५॥ भूमतोविलीनगंधगंधतोविलीनअपअपहूवि
लीनरसरसतेजघातहे॥ तेजरूपरूपवायूहीसपर्स-
लीनसोसपर्सव्योमशब्दतमहीविलातहे॥ इंद्रिदसर
जमनदेवताविलीनसत्त्वतीनगुनअहंममतत्वगलि
जातुहे॥ महतत्वप्रकृतिरुप्रकृतिहूषुर्षलीनसुंदरपुर्ष
जाईब्रह्ममेंसमातुहे॥ १६॥ आतमाअचलसुधएक
रसहेसदादेहविवहारनिमेदेहहीसौजानीये॥ जेसें
ससीमंडलअभंगनहीभंगहोईकलाआवेजाईघट
बढसोवषांनीये॥ जेसेद्रुमसंधिरनदीकेतटदेवीय
तनदीकेप्रवाहमांहीचलतेसोमानीये॥ तेसेंआतमा
अनंतदेहकोंप्रकासकरेसुंदरकहतयोंबिचारीअम
मांनीये॥ १७॥ आतमावारीरदोऊएकमेकदेवीयत
जबलगअंतःकर्नमेंअज्ञानहेजेसेंअंधीयारीरेनंध
रमेंअंधेरोहोईआंधनिकोतेजज्यौंकोत्योहीविदमान
हे॥ जद्यपिअंधेरेमांहीनेनकौनसूजेकलूतद्यपिअंधे
रेसौंअलेपसोवषांनीये॥ सुंदरकहततोलेंएकमेक
जानीयतजोलेंनहींप्रगटप्रकासज्ञानमानहें॥ १८॥ दे

सुषपतिऋदेमें विलीन होई जात सब जाग्रत स्वपन की
 तो सुधिन लहतु हे ॥ तीन हूँ अवस्था कोई साक्षी न बजने
 आपतुरीया स्वरूप यह सुंदर कहतु हे ॥ २५ ॥ ॥ छंद
 इंद्र वजय ॥ ॥ सोमी तेँ सूक्ष्म अप को जान हूँ अप तेँ
 सूक्ष्म तेज को अंगा ॥ तेज तेँ सूक्ष्म वायू वह नित वायू
 तेँ सूक्ष्म व्योम उतंगा ॥ व्योम तेँ सूक्ष्म हे गुन तीन तिहूँ
 तेँ अहं महत त्व प्रसंगा ॥ ताहू तेँ सूक्ष्म मूल प्रकृति जु मू
 ल तेँ सुंदर ब्रह्म अ संग ॥ २६ ॥ ब्रह्म निरंतर व्यापक अ
 ग्नि अ रूप अ षंडित हे सब मांही ॥ ईश्वर पाव करा सि
 प्र चंड जु संग उपा धिली ये वर तांई ॥ जीव अनंत म सा
 ल चिराक सदीप पतंग अनेक दिषांई ॥ सुंदर द्वैत उपा
 ध मिटे जब ईश्वर जीव जु देक लूना ही ॥ २७ ॥ ज्यों नर पा
 व कलोहत पावत पाव कलोह मिले सदिषांही ॥ चोट अ
 नेक परे धन की सिर लोह वधे कलू पाव कना ही ॥ पाव क
 लीन मयो अपने धर सीत लोह मयो तव तांही ॥ त्यों
 यह आतम देह निरंतर सुंदर भिन्न रहें मिली मांही ॥ २८
 ॥ आत्म चैतन्य सत्त्व निरंतर भिन्न रहे कहूं कि मन होई
 ॥ हे जड चैतन्य अंतःकर्तु सद् अ सध लीये गुन दोई ॥

देह अस्फुटमलीनमहाजडहालनचालसकेपुनवोई॥
 सुंदरतीनविभागकीयेविनभूलिपरेअमतेसबकोई
 ॥२९॥ ॥लुंदइंद्रवजय॥ ॥ब्रह्मअरूपअरूपीपावक=
 व्यापकजुगलनदीसतरंग॥देहदारतेप्रगटदेधीयतअं
 तःकर्नअग्निहूयअंग॥तेजप्रकासकल्पनातौलगिज्यो
 लगरहेऊपाधीप्रसंग॥जहांकेतहांलीनपुनहोईसुंदर
 दोईसदाअभंग॥३०॥देहसरावतेलपुनिमारुतबाति
 अंतःकर्नविचार॥प्रगटजोतियहचैतनदीसेजातेभये
 सकलउजीयार॥व्यापकअग्निमथनकरिजोएदीपक
 बहुतभातिविस्तार॥सुंदरअद्भुतरचनातेरीतुंहीएक
 अनेकप्रकार॥३१॥तिलमेंतेलदुधमेंघृतहेदारमाही
 पावकपहीचान॥पुहपमांहीज्युंप्रगटवासनाईषमांही
 रसकहतबषान॥पोसतिमांहीअफीमनिरंतरवनस्थ
 तिमेंसहतप्रमान॥सुंदरभिन्नमित्योपुनीदीसतदेहमा
 हीयोंआतमजान॥३२॥जाग्रतसुषुप्तोपतितीनों
 अंतःकर्नअवस्थापावे॥प्रानचलेजाग्रतअरुस्वमसु
 षोपतिमेकछूवेनरहावे॥प्रानगएतेरहेनकोउसक
 लदेषतांथाटबिलावे॥सुंदरआतमनित्यनिरंतरसो

तो कित हूं जायन आवे ॥ ३३ ॥ पंद्रह तत्व स्थूल कुंभ में
 सूक्ष्म लिंग मख्यौ ज्यौं तोय ॥ यहं जीव उहां आभा दी
 से ब्रह्म इंदु प्रति बिंब दोय ॥ घट फुटे जलगयो विलेकै
 अंतः कर्न कहै न ही कोय ॥ तब प्रति बिंब मिले ससी ही
 मही सुंदर जीव ब्रह्म होय ॥ ३४ ॥ ॥ छंद मन हर ॥

॥ जैसे व्योम कुंभ के बाहेर अरु भीतर हुको उनर कुंभ कूं
 हजार को सलेगयो ॥ ज्यौं हि व्योम इहां लुही उहां पुनी हे
 अषंड इहां न विछोहन तो उहां मिलाप कै भयो ॥ कूंभ तो
 नयो पुराणो होई के विन सिजाई व्योम तो न हे पुरांनो न
 तो कलू है नयो ॥ तैसे ही सुंदर देह आवै रहै ना स होई आ
 त्मा अवल अविनासी हे अनामयो ॥ ३५ ॥ देह के संजोग
 हिते कटुक मधुर स्वाद देह के संजोग कहै पाटो पारौ लो
 न कौं ॥ देह के संजोग कहै मूषते अनेक बात देह के संजोग
 हि पकरि रहै मौं न कौं ॥ सुंदर देह के संजोग दुःख माने सुख
 माने देह के संजोग गयो दुःख सुख कौं न कौं ॥ ३६ ॥ आपु
 की प्रसंसा सुनि आप हि षु साल होई आपु हि की नीद्या सु
 नि आप सु रजाई है ।

बतहें ॥ आपु हि को दुःख मानी आपु दुःख पाई हे ॥ आपु

हि कीरसाकरे आपुहि कीघातकरे आपुहि हत्यारोहो
 ईगंगाजोई नहोइ है ॥ सुंदर कहत ऐसे देहहि को आपु
 मानी नीजरूप भूलिके करत हाई हाई है ॥ ३७ ॥ ॥
 इति सांख्यज्ञानको अंग समाप्तः ॥ ॥ अंग २३ ॥ ७३ ॥
 अथ अपने भावको अंग प्रारंभः ॥ ॥ छंद इंदव जय ॥
 ॥ एक ही आपनो भाव जहां तहां बुद्धिके जोगते विभ्रम
 भासे ॥ जो यह क्रूर तो क्रूर वही पुनीया के सिषे ते उहां पु
 नीया से ॥ जो यह साधू तो साधू उहां पुनीया के हसे ते उहां
 पुनीया से ॥ जो सोई आप करे मुःष सुंदर ते सोई दर्पन मां
 ही प्रकासे ॥ १ ॥ ॥ छंद मनहर ॥ ॥ जे से स्नान काच के स
 दन मध देषी और भूकी भूकी मरत करत अभिमानजू
 ॥ जे से गज फटिक सिला सो अरितो रे दंत जे से सिंघ कू
 प मां ही उज कभुलान जु ॥ जे से कौउ फेरी घात फिरत सु
 देषे जग ते से ही सुंदर सब ते रोई अज्ञानजू ॥ आपनो
 ही भर्म सो तो दूसरो दिषाई दैत आप के विचारे को उदू स
 रो न आनजू ॥ २ ॥ नीच ऊच भलो बुरो सज्जन दुर्जन पु
 नी पंडित मूर्ख सत्रु मित्र रंकराव है ॥ मान अपमान पुन्य
 पाप सुष दुःष दोऊ स्वर्ग न कबंध मोक्ष हू कोचाव है ॥ देव

ता असुरभूतप्रेतकीटकुंजरऊपसुअरूपंछीस्वान
 सूकरविलावहे॥ सुंदर कहत यह एकई अनेकरूप
 जोई कछू देषीयेसौ आपनोई भाव्यहे॥ ३॥ याहीके
 जागतकामयाहीकेजागतकोधयाहीकेजागतलोभ
 येहीमोहमातोहे॥ याहीकोतोयाहीबेरीयाहीकोतो
 याहीमित्रयाकोयाहीसुषदेतयाहीदुःषदाताहे॥ या
 हीब्रह्मायाहीरुद्रयाहीविष्णुदेषीयतयाहीदेवदेत
 यक्षसकलसंगाताहे॥ याहीकोप्रभावसोतोयाही
 कोंदिषाईदेतसुंदरकहतयेहीआतमाविध्याताहे॥
 ४॥ याहीकोतोभावयाकोंसंकउपजावतहेयाहीको
 तोभावयाहीनिसंककरतुहे॥ याहीकोतोभावयाको
 भूतप्रेतहोईलगेयाहीकोतोभावयाकीकुमतिहरतु
 हे॥ याहीकोतोभावयाकोंवायूकोबधुराकरेयाही
 तोभावयाहीथिरकंधरतुहे॥ याहीकोतोभावयाकों
 धारमेंबहाईदेतसुंदरयाहीकोभावयाहीलेतरतुहे॥
 ५॥ आपहीकोभावसोतोआपकोंप्रगटहोत
 आरोपकरीआपमनलायोहे॥ देवीअन्यदेवकोउभ
 वकोंउपासेताहीकहेमेतोपुत्रधनइनहीतेपायोहे॥

दूधपिबायेनु आपनें भावतें विठलजान्यौ ॥ आपने
 भावतें चारभुजापुनी आपने भावतें सिंधसोमान्यौ ॥
 सुंदर आपने भावको कारन आपही पूर्णब्रह्मपिछान्यौ
 ॥१०॥ आपने भावतें होई उदासजु आपने भावतें प्रेम
 सोरोवे ॥ आपने भाव मिल्यो पुनी जानत आपनें भाव
 तें अंतरजोवे ॥ आपने भावरहे नित जाग्रत आपने
 भाव समाधिमे सोवे ॥ सुंदरजे सोई चावहे आपने तो
 सोई आपत हांत हां होवे ॥११॥ आपने भावतें मूलप
 र्यो ममदेहस्वरूप भयो अभिमानी ॥ आपने भावतें
 चंचलता अति आपने भावतें बुद्धिधिरानी ॥ आपने
 भावतें आपविसारत आपने भावतें आत्मज्ञानी ॥
 सुंदरजे सोई भावहे आपनो ते सोई होई गयो यह प्रानी
 ॥१२॥ ॥ इति आपने भावको अंगसं॥ अंग २४ ७
 ॥ अथ स्वरूपविस्मरको अंगप्रारंभः ॥ ॥ छंद इंद्रव
 जय ॥ ॥ जाघटकी उनहारहे जे सिहि ताघटचैतन्यते
 सोई दीसे ॥ हाथीकी देहमे हाथी सोमानत चीटीकी दे
 हमे चीटी करीसे ॥ शिंघकी देहमें शिंघ सोमानत की
 सकी देहमे मानत कीसे ॥ जेसी उपाधी भई जहां सुंद

रतेसोईहोईरथ्योनषसीसैं॥१॥जेसेहीपावककाठके
जोगतेंकाठसोहोईरथ्योईकठोरा ६। ॥ जेदे।
गतचोरसकाठमेंलागतचोरा॥आपनोरूपप्रकासक
रेजबजारकरेतबओरकोओरा॥तेसैंहीसुंदरचैतन्य
आपसुंआपकौंजानतनाहींनबोरा॥२॥ ॥छंदमन
हर॥ ॥प्रश्न॥ ॥आपहीकौंआपभूलगयोसोतोका
हेतेंअरजअमरअविगतअविनसीअजकहतसक
लजनश्रुतिअवगाहेतें॥निर्गुननिर्मलअतिसुद्धनि
र्वधनितएसैंहीकहतओरग्रंथनिकेथाहेतें॥आपक
अषंडएकरसपरिपूरनहेसुंदरसकलरमिरथ्योब्रह्म
ताहेतें॥सहजसदाउद्योतयाहीतिंअचंभाहोतआपु
हीकौंआपभूलगयोसोतोकाहेतें॥३॥ ॥छंदमन
हर॥ उत्तर॥ आपहीकौंआपभूलगयोसकषचाहेतें
जेसेंमीनमांसकौंनिगलिजातलोमलगिलोहको=
कंदकनहीजानतउमाहेतें॥जेसेंकपिगागरमेंसूठ
बांधिराषेसठछांडनहीदेतसोतोस्वादहीकेवाहेतें
॥जेसेंसुकनारीयरचूचमारीकटकतसुंदरसहतदुः
षदेषयाहीलाहेतें॥देहयैंसंजोगपाईइंद्रिनकेवस

परयो आपही को आप भूलि गयो सुख चाहै ते ॥४॥ ॥

छंदइंद्रवजय ॥ ॥ देष हूचै तनमानत के सो ॥

दूपीये अति छाकत नाही किछु सद्ध हे भ्रम असे सो ॥ ज्यों

कोई षाई रहै ठग मूरी ही जानें नही किछु कारन ते सो ॥

ज्यों कोई बालक संकट पावत कं पिउते अरु आनत भे

सो ॥ ते से ही सुंदर आप को भूलि स देष हूचै तनमाने हे

के सो ॥५॥ भूलि गयो भ्रम ते ब्रह्म आपे ज्यों कोई कूप में

जांकी अलापत ऐसी ही भांति सुकूप आलापे ॥ ज्यों जल

हालत हेल गि पों न कहै भ्रम ते प्रति बिंब हिकां पे ॥ देह के

प्रा न के जे मन के कत मानत हे सब मोहि कों व्यापे ॥ सुंदर

पेच परयो अति से करि भूलि गयो भ्रम ते ब्रह्म आपे ॥६॥

॥ ज्यों दूज को उकलां डि महा तम भूद्र भयो करि आप को

मान्यो ॥ ज्यों को उभू पति सो बत से जर करं कभयो स्वयं ने

मही जान्यो ॥ ज्यों को उरूप की रासी अस्यंत कु रूप करे भ्रम

म भै चक आन्यो ॥ ते से ही सुंदर देह सो होय केया भ्रम आप

प ही आप भुलान्यो ॥७॥ अकई आप कवस्त निरंतर वि

स्वन ही यह ब्रह्म विलासे ॥ ज्यों नट मंत्र नि सो द्रष्ट बांध

त हे कछू और ही और ही भासे ॥ ज्यों रजनी मही दूजय

भर्मभयोहे।

१७६

॥तेसेंहीसुंदरनिजस्वरूपकोंविसा

॥आपकरील्योहे॥११॥भू

लिकेस्वरूपकोअनाथसोकहतुहेदीनदीनछ

होई

न भन्नामाहीदेहकेसंजोगपराधीन=

सोरहतुहे॥सीतलगेघांमलगेभूषलगेसोकमोहमा

नअतिषेदकोलहतुहे॥अंधभयोपंगुभयोमूकहूब

धीरभयोएसेमानीमानीभर्मनदीमेंबहतुहे॥सुंदरअ

धिकमोहीयाहीतेअचंभाआहीभूलिकेस्वरूपकोअ

नाथसोकहतुहे॥१२॥जेसेंकोईकहेमेतोस्वप्नेमेंऊठ

योजागिकरिदेवेउहीमनुषस्वरूपहे॥जेसेंकोईराजा

पुनीसोवतभिषारीहोईआंषउधरेतोमहाभूपनिको

भूपहे॥जेसेंकोउभर्महूतेकहेमेरोसिरकहांभर्मकेग

येतेजानेसिरतदरूपहे॥तेसेंहीसुंदरयहभर्मकरि

भूल्योआपभर्मकेगएतेयहआतमाअनुपहे॥१३

॥जेसेंकोईपोसतीकीपागपडीभौमीपरहाथलेकेंक

हेएकपागमेंतोपाईहे॥जेसेंसीधसलीमनोरथनिको

कीयोधरकहेमेरोधरगयोगागरीगिराईहे॥जेसेंका

हूं भूतल ग्यो बकत हे आक बाक सुद्धि सब दूर भई ओ
 रे मति आई हे ॥ ते से ही सुंदर यह भर्म करि भूलो आप
 भर्म के गए ते यह आतमा सदाई हे ॥ १४ ॥ आप ही चैत
 न्य यह इंद्रि न चैत न्य करि आपु ही मगन होई आनंद व
 ढायो हे ॥ जे से नर सीत काल सो वतनि हाली वोढ आप
 ही तपत होई आप सुःष पायो हे ॥ जे से बाल लकरी को
 घौरा करि डाक चढे आप असवार होई आप ही कुदायो
 हे ॥ ते से ही सुंदर यह जड को संजोग पाय आप सुःमानि
 मांनि आप ही भुलायो हे ॥ १५ ॥ कहूं भूल्यो काम रत कहूं
 भूल्यो साधी जत कहूं भूल्यो ग्रेह मध्य कहूं बन बासी
 हे ॥ कहूं भूल्यो नीच मान कहूं भूल्यो मोह बांधी कहूं तो
 उदासी हे ॥ कहूं भूल्यो मोन धरे कहूं बकवाद करे कहूं
 भूल्यो मके जाय कहूं भूल्यो कासी हे ॥ कहत सुंदर अ
 हंकार हू ते भूल्यो आप एक आवेरो ज अरु दूजे आवे
 हासी हे ॥ १६ ॥ में बहूत दुःष पायो में बहूत सुःष पायो
 मे अनंत पुंन्य कीये मेरे अति पाप हैं ॥ मे कुलीन विद्या
 वंत पंडित प्रवीन महा मे तो भूढ अकुलीन मे रोनीच
 बाप हैं ॥ मे हों राजा मेरी आण फिरे चहू चक्र मां ही मे

सोरंकद्रव्यहीनमोहीतोसंतापहें॥सुंदरकहतअहं
 कारहीतेजीवमयोहंकारगणेशहएकब्रह्मआपहें
 ॥१७॥देहईरूपपुष्टलगेदेहईदूबरीलगेदेहईकोंसीत
 लगेदेहहीकोंताकतो॥देहईकोंतीरलगेदेहईकोंतोप
 ॥देहईकोंक॥देहईकोंगंधाबरो॥देहईस्वरूप
 लगेदेहईकुरूपलगेदेहईजोवनलगेदेहवृधडावरो॥
 देहईसोबाधीहेतआपविषेमानीलेतसुंदरकहतए
 सोबुधीहीनबावरो॥१८॥ ॥छंदइंद्रवजय॥ ॥आप
 हीचैतनब्रह्मअषंडितसोअमतेकलूअन्नपरेषे॥ढूढ
 तताहीफिरेजितहीतीतसाधतजोगबनावतमेषे॥ओ
 रउकष्टकरेअतिसंकरप्रतक्षआत्मतत्वनपेपे॥सुंदरभू
 लआननिजरूपहीहेकरकंकनदर्पनदेपे॥१९॥शूत्रग
 ॥मेलीमयोद्वजब्राह्मनहोयकेब्रह्मनजान्यो॥क्ष
 त्रियहोयकेक्षित्रधर्योसिरहयगयपयदलसोमन
 ॥वैश्यमयोवपुकीवयदेष्टतजूठप्रपंचवनिजही
 ठान्यो॥सूद्रमयोमिलिसूद्रसरीरहिसुंदरआपनहीप
 हीचान्यो॥२०॥ज्यौरविकौरविढूढतहेकहूंतममिलेत
 नसीतगमाउं॥ज्यौंससिकोंससिचाहतहेपुनीसीत

लङ्कैकरीतमबुजांऊं॥ज्यौकोउसांनभएनरदेरतहेघर
 मेंअपुनेघरजांऊं॥सौंयहसुंदरभूलिस्वरूपहीब्रह्मक
 हेकबब्रह्महीमांऊं॥२१॥आपुनदेष्टतहेअपनोमुःष
 दर्पनकाटलग्योअतिथूला॥ज्यौंद्रगदेष्टततेरहिजात
 मयोजबहीपुतरीपरिफूला॥छायअज्ञानरह्योअति
 अंतरजानिसकैनहीआत्ममूला॥सुंदरयोउपज्योमन
 केमलज्ञानविनानिजरूपहीमूला॥२२॥देहस्वरूप
 मयोमुःषबोलेदीनहूओविललातफिरेनितइंद्रिनके
 वसछिरकछोले॥सिंघनहीअपनोबलजानतजंबु
 कज्यौंजितहीतितडोले॥चैतनताविसराईनिरंतरले
 जडताअमगांठनषोले॥सुंदरभूलगंयोनिजरूपहीदे
 हस्वरूपमयोमुःषबोले॥२३॥देहस्वरूपमयोअभि
 मानीमिसर्षीयासुषसेजसुःषासनहयगजभौमीमहा
 रजधानी॥होंदुःषीयादिनरेनभरौदुःषभोहिविपतिप
 रीनहिछांनी॥हौअतिउत्तमजातिबडोकुलहोअतिनी
 चक्रियाकुलहानी॥सुंदरचैतन्यतानसंभारतदेहस्व
 रूपमयोअभिमानी॥२४॥गर्भविषेउतपतिभईजब
 जन्मलियोसिसुसुद्धनजानी॥बारुकुंवारकिसौरजु

वादिकवृद्धमयोअतिबुद्धिनिसानी॥जेसीहीभांतिमई
 वपूकीगतितेसोईहोईरह्योयप्रानी॥सुंदरचैतनतान
 संभारतदेहस्वरूपभयोअसिमानी॥२५॥ज्योंकोईत्या
 गकरेअपनोंधरबाहीरजायकेमेषबनावे॥मूंडमुंडाय
 केकानफरायविभूतिलगायजटाउबढावे॥जेसोईस्वां
 गकरेवपूकोपुनितेसोहीमानतेसोहोयजावे॥त्योंयह
 सुंदरआपनजानतभूलिस्वरूपहीओरकहावे॥२६॥
 ॥इतिस्वरूपविस्मर्णकोअंगसमाप्तः॥अंग२५॥छु
 ॥अथविचारकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहर॥ ॥प्र
 थमअवनकरिचित्तएकाग्रहृदरीगुरुसंतआगमकहें
 ॥दुतियमननवारवारहीविचारिदेखेंजोई
 कछूसुनेताहीफेरीकेसंभारीयें॥तृतीयप्रकारनिदध्या
 सहीजुनीकेकरीनिहसंगविचारतआपुनपोतारीयें॥
 साक्षातकारयाहीसाधनकरतहोईसुंदरकहतद्वैतबु
 धीकोनिवारीयें॥१॥देखेंतोविचारकरिसुनेतोविचार
 करीबोलेतोविचारकरीकरेतोविचारहें॥षाईतोविचा
 रकरीपीवेतोविचारकरीसोवेतोविचारकरीकरतोही
 बारहें॥बैठेतोविचारकरिउठेतोविचारकरीचलेतोवि

चारकरीसोईमतसारहें॥देईतोविचारकरीलेईतोविचार
 करीसुंदरबिचारकरयाहीनिरधारहें॥२॥एकहीविचार
 करीसुषदुःषसमजनेंएकहीविचारकरीमलसबधो
 ईये॥एकहीविचारकरीसंसारसमुद्रतरेंएकहीविचार
 करीपारंगतिहोईहे॥एकईविचारकरिबुधिनानाभाव
 तजेएकईविचारकरिदूसरोनकोईहे॥एकहीविचार
 करिसुंदरसंदेहमिटेएकईविचारकरिएकब्रह्मजो
 ईहें॥३॥ ॥छंदइंद्रविजय॥ ॥रूपकोनासमयोकर
 छूदेर्षयेंरूपतोरूपहीमाहीसमावे॥रूपकेमध्यअ
 रूपअषंडितसोतोकहूंकछूजाईनआवे॥बीचअ
 ज्ञानमयोनंवतत्वकोवेदपुरानसवेकोउगाहे॥सो
 ईविचारकरेजवसुंदरसोधतताहीकहूँनहिपवे॥४
 ॥भोमीसोतोहीगंधकोंछांडतनीरसोतोरसतेनही
 न्यारो॥तेजसूतोमलरूपरह्योपुनीवायूसपर्ससदा
 रूपियारो॥व्योमरुशब्दजुदेनहीहोवनअसेंहीअंतः
 कर्नबिचारो॥एनवतत्वमिलेंइनतत्वनिंसुंदरभिन्नस्व
 रूपहमारो॥५॥क्षीनरुपुष्टशरीरकोधर्मजुसीनुहुउ
 छजराम्भ्रतठाने॥भूषतृषागुनप्रानकोंव्यापतसोक

रुमोहउभेमनअने॥बुधिविचारकरेनिसवासुरचि
 त्तचितेंसुअहंअभिमाने॥सर्वकोप्रेरकसर्वकोसाधी
 जुसुंदरआपकोन्यारोहीजाने॥६॥एकहीकूपतेन
 हीसीचतईषअफीमहीअंबअनारा॥हेतउहे॥
 द्रनेकनिमिष्टकटूकनिषाटाअरुषारा॥सोहीउपा
 धीसंजोगतेआत्मदीसतआहीमित्योसविकारा॥का
 ढलीयेंसुविवेकविचारसोसुंदरसुद्धस्वरूपहेन्यारा॥७
 ॥रूपपराकोनजानिपरेकछूठतहेजेहीमूलतेछानी
 ॥नाभिविषेमिलिसप्तर्षी॥जे॥४॥
 घानी॥नादसंजोगअदेपुनिकंठजुमध्यमयाहीविचा
 रतेजानी॥अक्षरभेदमिलेमुःषद्वारसुबोलतसुंदर
 वैषरीबानी॥८॥ज्योंकोईरोगभयोनरकेघटवैदक
 हेंयहवायूविकारा॥कोउकहेग्रहआईलगेतातेपुं
 न्यकीयेकछूहोईऊवारा॥कोईकहेयहचूकपरीकछू
 देवनिदोसकीयोनिरधारा॥तेसेहीसुंदरतंत्रनिकेम
 तभिन्नहीभिन्नकहेजुविचारा॥९॥जेविषयतमपूरर
 हेतिनकोरजनिमहीबादरछायो॥कोउममुक्षकीये
 गुरुदेवतेहेंभयेयुक्तजुशब्दसुनायो॥ ६ ॥

उनके पुनतारनिसों रजु सर्प दिषायो ॥ सुंदर सूर प्रकास
तही म्रम दूर भयो रजु को रजु पायो ॥ १० ॥ कर्म सुभा सुभ
की रजनी पुनी अर्धति मोमय अर्ध उजारी ॥ भक्तिसो तो
यह अरु न उदय अंत निसा दिन संधि विचारी ॥ ज्ञान सो
भानु उदे निसवां सर येद पुरान कहें रजु पुकारी ॥ सुंदर ज्ञा
न प्रभाव वषां न तयोनि हचे सम के विधिसारी ॥ ११ ॥

॥ सुंदर मन हर ॥ ॥ देह ई सो आपमानि देह ई सो हो ई र
ह्यो जडता अज्ञान तम सूद्र सो ई जानाये ॥ इंद्रिन के व्या
पारनि असंतनि पुन बुद्धि तमो रजो दूहं करि वै स्पृह प्र
मानीये ॥ अंतः कर्म माही अहंकार बुधी जाके रजो गुन
वर्द्धमान क्षत्री पही चांनीये ॥ सत्य गुन बुद्धि एक आत
मा विचार जाके सुंदर कहत वही ब्राह्मन वषां तीये ॥ १२

॥ आतमा के विषे देह आई करि ना सहोई आतमा अ
षंड सदा एक ई रहतु है ॥ जे से साप कंच की कौं लीये रहे
कोउ दिन जीरन उतार करि नौ तु नग रहतु है ॥ जे से द्रुम हू
के पत्र फूल फल आई होत निन के गये ते द्रुम ओर उल
हतु है ॥ जे से व्योम मांही अम्र होई के विलाई जात एसो
हि विचार करि सुंदर कहतु है ॥ १३ ॥ षरी की डरी सो अंक

लिषतविचारीयतलिषतलिषतवहीडरीधसिजातुहें
 लेषोसमजोहेंजबसमुझपरीहेतबजोईकलूसहीभयो
 सोईठहरातुहें॥दारहीसोंदारमथिप्रगटपावकभयोव
 हेदारजरिपुनिपावकसमातुहे॥तेसेंहीसुंदरबुद्धिब्र
 ह्मकोबिचारकरीकरतकरतवहबुद्धिदूविलातुहे॥१४
 ॥आपकोसमजुदेपोआपुहीसकलमांहीआपहीमेस
 कलजगतदेषीयतुहे॥जेसेंव्योमव्यापकअषंडपरिपू
 रनहेबादलअनेकनानासूपलेषियतुहे॥जेसेंमोमाघ
 टजलतरंगपावकदीपवायूमेंबधूरासोईविस्वरेषीय
 तुहे॥अैसेंहीबिचारतबिचारहूलीनहोईसुंदरहीसु
 दररहितपेरीयतुहें॥१५॥देहकोसंजोगपाईजीवगमे
 नामभयोघटकेसंजोगघटाकासहीकहायोहे॥ईस्वर
 हीसकलविगटमेंविगजमानमठकेसंजोगमटाका
 सनामपायोहे॥महाकासमांहीसबघटमठदेषीयत
 बाहीरभीतरएकगगनसमायोहें॥तेसेंहीसुंदरब्रह्म
 ईस्वरअनेकजीवत्रिविधिउपाधिमेदग्रंथनिमेंगायो
 हें॥१६॥॥प्रष्ट॥॥देहदुःषपावेकिधोः॥
 किधोंप्रानदुःषपावेकिधोंलहतनअहारकौं॥मनदुः

षपावेकिधोंबुधिदुःषपावेकिधोंचित्तदुःषपावेकिधों
 दुःषअहंकारकों॥गुनदुःषपावेकिधोंभूत्रदुःषपावे
 किधोंप्रकृतिदुःषपावेकिधोंपुर्षआधारकों॥सुंदरपृ
 छतकछूजाननपरततातेकोंनदुःषपावेगुरुहोया
 विचारकों॥१७॥ ॥कवितउत्तर॥ ॥देहकोंतोदुःष
 नाहींदेहपंचभूतनिकीइंद्रीनकोंदुःषनाहींदुःषनाहींप्रा
 नकों॥मनहूकोंदुःषनाहींबुद्धिहूकोंदुःषनाहींचित्तहू
 कोंदुःषनाहींनाहींअभिमानकों॥गुननिकोंदुःषनाहीं
 भूत्रहूकोंदुःषनाहींप्रकृतिकोंदुःषनाहींदुःषनपुमानकों
 ॥सुंदरविचारएसेंशिषकोंकहतगुरुदुःषएकदेषीयन
 बीचकेअज्ञानकों॥१८॥प्रथवीभांजनअंगकनकक
 टकपुनिजलहीतरंगदोउदेखिकरिमानयि॥कारनका
 र्जएतोप्रगटहीथूलरूपताहीतेनजरमांहीदेषाकरि
 आनीहे॥पावकपवनव्योमएतोनहीदेषीयतदीप
 कवधूराअभ्रप्रतक्षवषांनीये॥आतमाअरूपअ
 तिसूक्ष्मतेसूक्ष्महेंसुंदरकारनतातेदेहमेंनजानी
 यें॥१९॥जैनमतउहेजिनराजकोंनमृत्तिजायदान
 तपसालसत्तभावनातेतरीयें॥मनवचकायसुद्धस

बसोंदयालु रहे दोषबुधि दूर करि दया उर धरीयें ॥ जो
 धनामन बजब मन को निरोध होई बांध के बिचार सो
 ध आतमा को करीयें ॥ सुंदर कहत ऐसे जीव तही मुक्त
 होई मूए ते मुक्त कहता को पर हरीयें ॥ २० ॥ देह बोर दे
 ॥ यें तो देह पंचभूतनि को ब्रह्मा अरु कीटलग देह ई प्र
 धान हे ॥ प्रान बोर देषीयें तो प्रान सब ही को एक सुधा पुं
 नित्र पादो उच्चापत समान हे ॥ मन बोर देषीयें तो मन को
 स्वभाव एक संकल्प विकल्प करे सदाई अज्ञान हे ॥ आ
 तमा विचार कीये आतमा ई दीसे एक सुंदर कहत को
 उदुसरो न आन हे ॥ २१ ॥ ॥ इति विचार को अंग स० ॥
 अंग २६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ अथ ब्रह्मनिःकलंक को अंग प्र
 ः ॥ ॥ छंद मन हर ॥ ॥ एक को उदाता गाय ब्राह्मन
 कौं देत दान एक को उदया हीन मारत न संकहे ॥ एक को
 ईत पस्वीत पस्या मांही सावधान एक को उकाम क्रीडा
 कामनि को अंत हे ॥ एक को ऊरूप वंत अधिक विराज
 मान एक को उकोढी कोढ चूवत करं कहे ॥ आरसी से प्रति
 बिंब सब ही को देषीयत सुंदर कहत ऐसे ब्रह्म नि कलंक
 हे ॥ १ ॥ रविके प्रकास ते प्रकास होत नेत्रनिकों सब को उ

सुभासुभकर्मकोकरतुहें॥ कोउजग्यदानतपजपने
 मव्रतकोउड्द्राविसकरिकोउध्यानकोधरतुहें॥ को
 उपरदारापरधनकोतकतजार्दकोउहिंस्थाकरिकरि
 उदरभरतुहें॥ सुंदरकहतब्रह्मसाक्षीरूपएकरस
 याहीमेंउपजिकरिवाहीमेंभरतुहें॥ २॥ जेसेजलज
 तुजलहीमेंउतपनहोयजलहीमेंविचरतजलकेआ
 धारहे॥ जलहीमेंक्रीडाकरिविविधविवहारहोतका
 मक्रोधलोभमोहजलमेंसंहारहे॥ जलकौनलगेकलू
 जीवनकेरागदोषउनहीकेक्रियाकर्मउनहीकीलारहे
 ॥ तेसेहीसुंदरयहब्रह्ममेंनगतसबब्रह्मकुनलागे
 कलूजगतविकारहे॥ ३॥ स्वेदजजरायुजड्डजउद्भ
 जपुंनिचारषानतिनकेचोरासीलषजंतुहें॥ जलचर
 थलचरव्योमचरमिन्नमिन्नदेहपंचभूतनिकीउपजि
 षपतुहें॥ सीतधांमपवनगगनमेंचलतआर्दगगन
 अलिमजामेमेघहूअनंतहे॥ तेसेहीसुंदरयहमृष्टिस
 बब्रह्ममांहीब्रह्मनिकलंकसदाजानतमहंतहे॥ ४॥
 ॥ इतिब्रह्मनिःकलंककौअंगसमाप्तः ॥ ॥ अंग २७
 ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ अथआत्सअनुभवकोअंगप्रारंभः

॥ छंदद्रवजय ॥ ॥ हे दिल में दिलदार सही अधीयां उ
 लटी करी ताही चितैये ॥ आब में षाक में वाद में आतस
 जान में सुंदर जां निज नैये ॥ नूर में नूर रहे तेज में तेज रहे जो
 ति मे जोति मिले मिलि जैये ॥ क्या कहिये कहते नबने क
 छू जो कहिये कहते ईल जैये ॥ १ ॥ जो कहो हे सब मेव ह
 एक तो सो कह के सोहे आंषि दिषैये ॥ जो कहो रूप न रेष
 दी से कछू तो सब जूठ के माने ई क ईये ॥ जो कहूं सुंदर ने न
 निमाऊ तो ने न हू बे न गये पुन हैये ॥ क्या कहिये कहते नब
 ने कछू जो कहिये कहते ईल जैये ॥ २ ॥ होत बिनोद जु तो
 अमि अंतर सो सुष आप में आप ही पैये ॥ बाही रको
 उमग्यो पुनी आवत कंठ ते सुंदर फेर पठैये ॥ स्वाद निवे
 र निवे र यो न जात मांनु गुड गुंगे ही नित बवैये ॥ क्या कहि
 ये कहते नबने कछू जो कहिये कहते ईल जैये ॥ ३ ॥ व्यौ
 म को व्यौम अतंत अषंडित आदीन अंत सुमध्य कहां
 हे ॥ को परमान करे परि पूरन है त अहै त कछून जहां हे ॥
 कारन कारज भेद नही कछू आप में आप ही आपत हां
 हे ॥ ४ ॥ सुंदर दी सत सुंदर मांही सु सुंदर ता कहि कौन उ
 हां हे ॥ ४ ॥ ॥ छंद इंदवर ॥ ॥ एक के दोई न एक न दोई ऊ

एकिइह उहागइहाहे॥सुन्यकेस्थूलनभून्यनथूल
 जिहीकीतहीनजेहीनतेहीहे॥मूलकीडालनमूलनडा
 लबहीकीमहीनबहीनमहीहे॥जीवकेब्रह्मनजीवनब्र
 ह्मतोहेकेनहीकछूहेननहीये॥५॥एककहूंतोअनेकसो
 दीसतएकअनेकनहीकछूएसो॥आदीकहूंतहांअंत
 हूआवतआदीनअंतनमध्यसोकेसो॥गोप्यकहूंतोआ
 गोप्यकहांयहगोप्यअगोप्यनउभोनबेसो॥जोईकहू
 सोईहेनहीसुंदरहेतोसहीपरिजेसाकोतैसो॥६॥छं
 दमनहर॥॥एककोंकहेजोकहूंकहूंप्रकासतहंदोउ
 कोकहेजुकोउदूसरोउदेषीये॥अनेककहेजुकोउअ
 नेकअभासेताहीजकेजेसोभावतेसोताकोंईविसेधी
 ये॥वचनविलासकोंउकेसेहीबषानेकहोव्यौममाही
 चित्रकहोंकेसेकरिलेधीये॥अनभवकीयेएकदोएन
 अनेककछूसुंदरकहतज्यौहेस्यौहीताहीपेधीये॥७
 ॥वचनईवेदविधिवचनईरा॥१॥उ ॥८॥
 रुवचनपुरांनजु॥वचनईओरग्रंथवचनईव्याकर्न
 नई ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥
 वचनई ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥

चनकेपरेहेसोवचनमेंआवेनहीसुंदरकहतवहीअनु
भवप्रमानजु॥८॥इंद्रिनहीजान
कोप्रांनहूनजानीसकेस्वासआवेजाईहे।मनहूनजानिस
केसंकल्पविकल्पकरेबुधिहूनजानिसकेसुन्योसुवताईहे
॥चित्तअहंकापुनिएहूनहीजानीसकेवाब्दहूनजानिस
कैअनुमानपाईहे॥सुंदरकहतताहीकोउनहीजानीस
।वाकरदेधीयेसुएसीनहीलाईहे॥९॥ ॥

॥श्रीअनजानतचक्षुजानतजानतनाहीजुसुंघत
घ्राने॥ताहीसपरसतुचानसकेपुनिजानतनाहीनजीम
बषाने॥मननजानतबुधिनजानतचित्तअहंकारक्योंप
हीचाने॥सुंदरवाब्दहूनजानिसकेनहीआतमआपको=
आपहीजाने॥१०॥सूरकेतेजतेसूरजर्द
तेचंद्रउजासे॥तारेकेतेजतेतारेउदीसतबिजुलतेजते
बिजुचकासे॥दीपकेतेजतेदीपकदीसतहीरकेतेजतेह
रोईभासे॥तेसेहीसुंदरआतमाजानहूआपकेज्ञानते=
आपप्रकासे॥११॥कोउकहेंयहअष्टिस्वभावतेकोउक
हेंयहकर्मतेअष्टी॥कोउकहेंयहकालउपावतकोउक
हेंयहईस्वरतिष्ठी॥कोउकहेंयहअसेंहीहोवतक्योंक

ह्योतिनलावसोसुनायोहे॥सूढजिनग्रहीतिनदगलेकी
बांहकहीदंतजिनग्रह्योतिनमूसरदिषायोहे॥कानजि
नग्रह्योतिनसूपसोबनायकह्योपीठजिनग्रहीतिनदि
दे ॥ १५॥जेसोहेतेसोहिताहीसुंदरसुअक्षीजा

नं दिषाऊगरोमचायोहे॥१६॥न्यायशा-

स्त्रविशेष ॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

॥कथोहे॥विशेषिकशास्त्रपुनीकालवार्दिहेम॥

॥सांध्यशास्त्र

॥ह्योहे॥सुंदरकहतषट्शास्त्रमांहीभयोवादजके
नुभवज्ञानवादमेंनवह्योहे॥१७॥प्रज्ञानमानंदब्रह्मए

॥१८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

हिअथर्वणयोलहे॥एकएकवचनमेंतानपदहेंप्रसि
५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

॥इंद्रनिकेभोगजबचाहेतबआयरहें
॥दिवलोकइंद्रलो

कविधिलोकशिवलोकवैकुण्ठकेसुःखलोगाणितानंद
 गायोहे॥अक्षयंअषंडएकरसपरिपूरनहेताहीतिपूर्ण
 नंदअनुभवतेपायोहे॥याहीकेअंतरभूतआनंदज
 हांलोंओरसुदरसमुद्रमांहीसर्वजलआयोहे॥१९॥ए
 कतोमायाविलासजगतप्रपंचयहचारषांनिभेदपाय
 हैतभासरह्योहे॥दूसरोविषेविलासइंद्रिनिकीविषेयं
 चशब्दस्पर्सरूपरसगंधरह्योहे॥तीसरोवाक्यविलास=
 सोतोसववेदमांहीबर्निकेजहांलगिवचनतेकरह्योहे॥चो
 थोब्रह्मकोविलासतिहूंकोअभावजहांसुंदरकहतवह
 अनुभवतेलह्योहे॥२०॥जीवतहिदेवलोकजीवतहीइं
 द्रलोकजीवतहीजनतपसत्यलोकआयोहे॥जीवत
 हीविधिलोकजीवतहीशिवलोकजीवतवैकुण्ठलोकजौ
 अकुण्ठगांयोहे॥जीवतहीमोक्षसिलाजीवतहीमिस्त
 मांहीजीवतहीनिकटपरमपदपायोहे॥आतमाकोअ
 नुभवजिनकीजीवतभयोसुंदरकहततिनसंसयमि
 टायोहे॥२१॥
 व्योमभ्रमतिनकोशर
 मअंतःकर्णभ्रमतिनहीकेदेवतामोभ्रमतेबषांन

सतरजतमभ्रमपुनिअहंकारभ्रममहतत्वप्रकृतिपु

थिं॥ २० ॥

नुभवकीयें एक आतमां ही जानियें ॥ २१ ॥ भौंमी हू विरल

न होई अपहू विलीन होई तेज हू विलीन होई वायू जो वह

तु हे ॥ औंम हू विलीन होई त्रिगुन विलीन होई शब्द हू वि

लीन होई अहं जो कह तु हे ॥ महतत्व लीन होई प्रकृति वि

लीन होई पुर्ष विलीन होई देह जो गहतु हे ॥

लोक कहिये सलीन होई आतमा के अनुभव आतमा

रहतु हे ॥ २३ ॥ माया की अपेक्षा ब्रह्मरात्रि की अपेक्षा

दिन जड की अपेक्षा करी चैतन बखानियें ॥ अज्ञान अ

पेक्षा ज्ञान बंध की अपेक्षा मोक्ष द्वैत की अपेक्षा सो तो

अद्वैत प्रमानीये ॥ दुःष की अपेक्षा सुःष पाप की अपेक्षा

पुनजूठ की अपेक्षा ताही सत्य करि मानीये ॥ सुंदर सक

लय हवचन वि

नीये ॥ २४ ॥ आतमा कहत गुरु सुद्ध निर्वधनित सत्य

करि माने सो तो शब्द हू प्रमाने हे ॥

षंड परि पूरन हे औंम उपमा ते उपमान सो प्रमान हे ॥ जा

की सता पाई सब इंद्रिय चैतन्य होई याही उपमा ते उपम

नउप्रमानहै॥ अनुभवजानेंतबसकलसंदेहमिदेसुंदर
 कहतयहप्रतक्षप्रमानहै॥ २५॥ एकघरदोयघरती
 नघरचारघरपंचघरतजेतबछटोघरपाईहैं॥ एकए
 कघरकेआधारएकएकघरएकघरनिराधारआपही
 दिपाईहैं॥ सौतोघरसाक्षीरूपघरघरमेंअनूपताहूघर
 मध्यकोउदिनठहराईयें॥ ताकेपरेसाक्षीनअसाक्षीन
 संदरकछूवचनअतीतकहूंआईहेनजाईहै॥ २६॥ ए
 कतोअवनज्ञानपावकज्यौंदेधीयतमायाजलपरसत
 वेगबुजीजातहै॥ एकहेमननज्ञानबिजुलीज्यौंघन
 मध्यमायाजलबरषततामेंनबुजातहै॥ एकनिदध्या
 सज्ञानबडवाअनलजेसेंप्रगटसमुद्रमाहीमायजल
 षातुहै॥ अनुभवसाक्षातज्ञानप्रलयअग्निसमसुंदर
 कहतद्वैतप्रपंचविलातहै॥ २७॥ भोजनकीवातसुनी
 मनमेंसुदीतभयोमुःषमेंनपरेज्योलोमेलियेनग्रासहै
 ॥ सकलसामग्रीआनिपाककौंकरनलागोमननकर
 तकबजीमहोएआसहै॥ पाकजबभयोतबभोजन
 कर्नबेठोमुःषमेंमेलतजाईयहैनिदध्यासहै॥ भोज
 नपूरनकरित्रपतिभयोहेजबसुंदरसाक्षातकारअनु

भवप्रकासहे ॥२८॥ श्रवनकरतजबसबसोंउदा

ईचित्तएकाग्रहआनिगुरुमुषसुनिये ॥ बेठिकेए
कांतठोरअंतःकर्नमाहीमननकरतफेरउहेज्ञानगुनि
॥ ब्रह्मअपरोक्षजांनीकहतहेअहंब्रह्मसोहंसोहंहो
ईसदानिदध्यासधुनीये ॥ सुंदरसाक्षात्कारकीटहीते
होईअंगयहअनुभवयहेस्वस्वरूपमनिये ॥ २९ ॥ जब
जग्यासहोईचित्तएकठोरआनीमृगज्योंसुनतनाद
श्रवनसोंकहीये ॥ जेसेस्वांतिबूंदहूकोंचात्रुकरटतपु
निअसेंहीमननकरेकबबूंदलहीये ॥ रात्रिकोंचकोर
जेसेचंद्रमाकोधरेध्यानअसेंजानिनिदध्यासद्रढक
रिग्रहीये ॥ यहैअनुभवयहेकहीयेसाक्षात्कारसुंदर
पारेतेंगलपानीहोईरहीये ॥ ३० ॥ काहूकोंपूछतरंकध
नकेसेंपाईयतकानदेकेसुनतश्रवनसोईजांनीये ॥ उन
कह्योधनहमदेप्योहेफलांनीठोरमननकरतभयोक्
बघरआंनीये ॥ फेरिजबकह्योधनगड्योतेरेघरमां
हीषोदनलग्योहेतबनिदध्यासठानीए ॥ धननिकस्यो
हेजबदरिद्रगयोहेतबसुंदरसाक्षात्कारतृपतिबषां
नीये ॥ ३१ ॥ चकमकटोकेतेचमतकारहोतकछुअ

सेही अवर्न ज्ञान तब ही लों जानीये ॥ कफ मन लगे जब
 प्रगटे पावक ज्ञान सिलगत जाई वह मन न बषांनीये ॥
 बंद्ध मान भए काठ कर्म नी कौं जरावत इही निदध्यास
 ज्ञान ग्रंथ निमै गानीये ॥ सकल प्रपंच यह जरी कै समा
 ई जात सुंदर कहत वह अनुभव प्रमानीये ॥ ३२ ॥ ॥
 ॥ इति आत्म अनुभव को अंग समाप्तः ॥ अंग २८ ॥
 ॥ अथ ज्ञान को अंग प्रारंभः ॥ छंद मन हर ॥ ॥
 अवन सुनत मुःष्यो लंत वचन घ्रांन सूंघत फूलन रूप
 देषत द्रगन हे ॥ त्वकंस पर्सर सरस नाग्र सत कर ग्रहत
 असन अरु चलत पंगन हे ॥ करत गवन पुनि बैठत भव
 न सेज सोवत रवन पुनी वोढत नगन हे ॥ जो जो कछू वि
 वहार जानत सकल भ्रम सुंदर कहत ज्ञानी गगन मग
 न हे ॥ १ ॥ कर्म न विकर्म करे भावन अभाव धरे सुमहं-
 अस्त भपरे याते नंधर कहे ॥ वसती न सुंन्य जाके पाप
 हून पुंन्य ताके अधिक न नूंन्य वाके स्वर्ग न नर कहे ॥ स
 षदुःष सम दोऊ नीच हून ऊंच को उएसी विधिर हे सोऊ
 मिल्यो न फर कहे ॥ एक ही न दोय जाने बंध मोक्ष भ्रम
 माने सुंदर कहत ज्ञानी ज्ञान में गर कहे ॥ २ ॥ अज्ञानी

कोंदुःषकासमूहजगजानीयतज्ञानीकोजगतसब-
 आनंदस्वरूपहे॥नेनहीनकोंतोघरबाहरनसूजेक
 लूजहांजहांजायतहांतहांअंधकूपहे॥ १॥
 कासअंधकारमयोनासवाकेजहांरहेतहांसूर्जकी
 पहे॥सुंदरअज्ञानीज्ञानीअंतरबहुतआहं
 रातिवाकेदिवसअनूपहे॥३॥ज्ञानीअरुअज्ञानीकी
 क्रियासबएकसीहीअज्ञआसाओरज्ञानीआसननिरा
 सहे॥अज्ञजोईजोईकरेअहंकारबुधिधरे
 रबिनुकरतउदासहे॥अज्ञसुःषदुःषदोउआपविषेमा
 निलेतज्ञानिसुःषदुःषकौनजानेमेरेपासहे॥अज्ञकौ
 जगतयहसकलसंतापकरे
 विलासहे॥४॥ज्ञानीलोकसंग्रहकौंकरतव्योहारविधि
 अंतःकरणमेतोस्वप्नकीसीदोरहे॥देतउपदेसनाना
 भांतिकेवचनकहीसबकोउजानतसकलसिरमोरहे
 ॥हलनचलनपुनीदेहसोंकरतनितज्ञानमेगरकगति
 लीयेनिजठोरहे॥सुंदरकहतजेसेंदंतगजराजसुःषषा
 ईबेकेओररुदिषाईबेकेओरहे॥५॥इंद्रनिकोज्ञान
 जाकेसोतोहेपसुसमानदेहअभिमानषानयानहं

लीनहैं॥ अंतःकर्णज्ञानकलूकविचारजाके मनुष्यो
हारसप्तकर्मनी आधीनहै॥ आतमाविचारज्ञानजाके
निसवासरहै॥ सोईसाधूसकरुही बातमें प्रवीनहै॥
एकपरमात्माको ज्ञानअनुभवजाके सुंदर कहत वह
ज्ञानी भ्रमछीनहै॥ ६॥ धोषोनरहतको उज्ञानको प्रका
सते जाही ठोर रबिको उद्योत मयो ताही ठोर अंधकार
भागि गयो ग्रहवनवासते॥ न तो कलूबनते उलटि आ
वे घरमांही न तो चचनचलि जाई कनक आवासते॥ जे
से पंषी पंषटुटी जाई ठोर पखो आई ताही ठोर गिरर
हो उडवे की आसते॥ सुंदर कहत मिटि जाई सब दोड
दुषधोषोनरहतको उज्ञानके प्रकासते॥ ७॥ जेसे को
उदे सजाई सापाकहें ओर सीही समझनको उवासी क
हें क्या कहतु है॥ कोउ दिन रहे करि बोलि सीषे उनही की
फेरी समझवे तब सब कोलहतु है॥ तेसे ज्ञान कहते सु
नत विपरीत लागे आप आपनोई मत सब को गहतु है
॥ उनही के मत करि सुंदर कहत ज्ञानतवही ते ज्ञान ठह
राई के रहतु है॥ ८॥ एक ज्ञानी कर्मनिमें तत पर देषी
यत भक्तिको प्रभावनाहीं ज्ञानमें गर कहें॥ एक ज्ञानी

भक्तिको अत्यंत प्रभावलीये ज्ञानमांही निश्चेकरिकर
 मसोंतर कहें ॥ एक ज्ञानी ज्ञानही में ज्ञानको उचार करे
 भक्ति अरु कर्म इन दुहुं तें फर कहें ॥ कर्म भक्ति ज्ञान तिनों
 वेद में बंधा न कहें सुंदर बत योगुरुता ही में लर कहें ॥
 ९ ॥ जे से पंषी पग निसों चलत अब नि आइ ते से ज्ञानी दे
 ॥ जे से पंषि बुच करि चुगत अहा
 रुपु निते से ज्ञानी उर मे उपासना धरतु हैं ॥ जे से पंखी पंष
 निसों उडत गगन मांही ते से ज्ञानी ज्ञान करि ब्रह्म मे चर
 तु हैं ॥ सुंदर कहत ज्ञानी तीनों भांत देषीयत असी विधि
 जानें सब संसय हरतु हैं ॥ १० ॥ ॥ छंद इंद्र वजय ॥ ॥ ए
 क क्रिया करि ऋषि नियावत आदी रु अंत लोम मत्व बं
 ध्यो हे ॥ एक क्रिया करि पाक करे जब भोजन लोकं छू
 अन्न रंध्यो हे ॥ एक क्रिया मल त्यागत हेल गुनीत करे क
 हुं ना हीं फंध्यो हे ॥ त्यों यह कर्म उपासना ज्ञान हैं सुंदर ती
 न प्रकार संध्यो हे ॥ ११ ॥ दोउ जने मिलि चो पर पेलत सा
 रि धरे पुनि दारत फासा ॥ जीतत हे सुसुषी मन में अ
 तिहारत हे सोई भरे उउसासा ॥ एक जनो दोउ वोर ही षि
 लत हारन जीत करे जुत मासा ॥ ते से अज्ञानी के द्वैत भ

योत्रमसुंदरज्ञानीकेएकप्रकासा॥१२॥सवैया॥
 ॥जीवनरेसअविद्यानिद्रासुषसिज्यासोयोकरिहे
 त॥कर्मषवासपुटभरिआईतातेबहुविधिभयोअचे
 त॥भक्तिप्रधानजगायोकरगहीआलसभस्योजभाई
 लेत॥सुंदरअबनिद्रावसनाहींज्ञानजागर्नसदास्वचे
 त॥१३॥ज्ञानीकर्मकरेनानाविधअहंकारयातनको
 षोवे॥कर्मनिकोफलकछूनबांवे॥अंतेःकर्मवासनाधोवे
 ज्योंकोउषेतीकोजोततलेकरिबीजभूनिकेबोवे॥सुंदर
 कहेसनोदृष्टांतहीनागोनाहाईसकहानिचोवे॥१४॥
 ॥इतिज्ञानकोअंगसमाप्तः॥ ॥अंग१९ ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥
 ॥अथनिरसंसेकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदर्मनोहर॥ ॥भा
 वेदेहछूटिजाहूकासीमहीगंगात्रटभावेदेहछूटिजाओ
 क्षेत्रमघहरमे॥भावेदेहछूटिजाओविप्रकेसदनमध्य
 भावेदेहछूटिजाओस्वपचकेधरमे॥भावेदेहछूटोदे
 सआर्यअनारजमे॥भावेदेहछूटिजाओवनमेंनगर
 में॥सुंदरज्ञानीकेकछूसंसयरहेजुनाहींस्वर्गनरकस
 बभागीगयोभरमे॥१॥भावेदेहछूटिजाओआजहीप
 लकमांहीभावेदेहरहोचिरकालजुगअंतजु॥भावेदेह

छूटिजाओग्रीधमपावसक्रतुसर्दससीरसीतछूटतव
 संतजु॥ भावेंदसनायनहूभावेउतरायनहूभावेदेहस
 र्पसिंधवीजलीहनतजु॥ सुंदरकहतएकआतमाअ
 रबंडजांनीयाहीभांतिनिरसंसेभयेसबसंतजु॥२॥

॥ छंदइंद्रविजय॥ ॥ केयहदेहगिरोवनपर्वतकेयह
 देहनदीमेंबहोजु॥ केयहदेहधरोधरतीमहीकेयहदे
 हक्रसांनदहोजु॥ केयहदेहनिरादरनिंदहुकेयहदेह
 सराहकहोजु॥ सुंदरसंसयदूरभयोसबकेयहदेह
 चलोकिरहेजु॥३॥ केयहदेहसदासुखसंपतिकेयह
 देहविपतपरेजु॥ केयहदेहनिरोगरहोनितकेयहदे
 हहीरोगचरोजु॥ केयहदेहहुतासनपेठहूकेयहदेह
 हिमोरगरोजु॥ सुंदरसंसयदूरभयोसबकेयहदेह
 जीवोकेमरोजु॥४॥ ॥ इतिनिरसंसेकोअंगसमाप्तः॥

॥ अंग३०॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ अथप्रेमज्ञानीकोअंग
 प्रारंभः॥ ॥ छंदइंद्रविजय॥ ॥ प्रीतकीरीतकछूनही
 राषतजातनपातनहीकुलगारो॥ प्रेमकेनेमकहो नही
 दीसतलाजनकांनलग्योसबषारो॥ लीनभयोहरिसों
 अमिअंतरआठहूजांमरहेमतवारो॥ सुंदरकोउक

जं केर गोकुलगं मकोपेडोईन्यारो॥१॥ ज्ञान
दीयोगुरुदेवक्रपाकरीदूरिकीयोभ्रमषोलिकिवारो॥
ओरकीयाकहीकोनकरेअबचित्रलग्योपरिब्रह्मपिया
रो॥पावविनाचलवोकेहिठाहरंपंगुभयोमनमितहमा
रो॥सुंदरकोउकजांनीसकेयहगोकुलगंमकोपेडोईन्या
रो॥२॥एकअबंधितज्योनभव्यापकबाहीरभीतरहेइ
कसारो॥द्रष्टिनमुष्टिनरूपनरेषनस्वेतनपीतनरक्तन
कारो॥चक्रितहोईरहेअनुभवविनजांहालगिनाहीन
ज्ञानउजारो॥सुंदरकोईकजांनीसकेयहगोकुलगं
मकोपेडोईन्यारो॥३॥हंहविनाविचरेवसुधापरजाघ
टआतमज्ञानअपारो॥कामनक्रोधनलोभनमोहन
रागनदोषनमारोनथारो॥जागेनभोगनत्यागनसंग्र
हदेहदिसानढंक्वोनउधारो॥सुंदरकोउकजांनीसके
यहगोकुलगंमकोपेडोईन्यारो॥४॥लक्षअलक्षअ
दक्षनदक्षनपक्षअपक्षनतूलनभारो॥जूठनसाच
अवाचनवाचनकंचनकाचनदीनउदारो॥जानअ
जाननमानअमाननसानगुमाननजीतनहारो॥सुं
दरकोउकजांनीसकेयहगोकुलगंमकोपेडोईन्या

रो॥५॥ ॥ इति प्रेमज्ञानीको अंगसमाप्तः॥ अंग ३९

॥ छु ॥ ॥ छु ॥ ॥ अथ अद्वैतज्ञानको अंगप्रारंभः॥

॥ छंदद्वंद्वविजय ॥ ॥ होतुमकोनहो ब्रह्मअषंडितदे
हमेक्यौनहीदेहकेनेरे॥ बोलतकेसेकहोनहीबोलत
जानीयेकेसेअज्ञानहेतेरे॥ दूरकरोअमनिअवधारि
कहोगुरुदेवकहोनितटेरे॥ होतुमएसेंतूहंपुनिअसे
ईदोएनहिनहीद्वैतहेतेरे॥ १॥ हंकछुओरकेतूंकछु
ओरकीहेकछुओरकिसोकछुओरे॥ होंअरुतूंयहहे
कछूसोपुनबुद्धिविलासभयोऊकओरे॥ होंनहीतूंन
हीहेकछूसोनहीबुजेविनाजितहीतितदोरे॥ हंपुनि
तूंपुनिहेकछूसोपुनिसुंदरव्यापिरह्योसबठोरे॥ २॥
उत्तममध्यमओरसुभासभभेदअभेदजहांलगजो
हे॥ दीसतभिन्नतबोअरुदर्पनवस्तुविचारतएकहिलो
हे॥ जोसुनियेअरुद्रष्टीपरेपुनीवाबिनओरकहूंअब
कोहे॥ सुंदरसुंदरव्यापिरह्योसबसुंदरमेपुनिसुंदरसो
हे॥ ३॥ ज्यौवनएकअनेकअनेकभयेदुमनामअनंत
निजातिहून्यारी॥ वापीतडागरूकूपनदीसबहेजलए
कसुदेषोनिहारी॥

राकमसालहूबारी॥सुंदरब्रह्मविलासअषंडितभेद
 अभेदकीबुधिसुटारी॥४॥एकशरीरमेंअंगसएवहू
 एकधरापरीधामअनेका॥एकसिलामहीकोरकीयेस
 बचित्रबनईधरेइकठेका॥एकसमुद्रतरंगअनेकहुके
 सेंकेकीजीयेनिन्नविवेका॥द्वैतकछूनहीदेषीयेसुंदरब्र
 ह्मअरवंडितएककोएका॥५॥ज्यौंमृतकायटनीरतरंग
 हीतेजमसालकीएजुबहुता॥वायूबधूरनिगांठपरि
 बहूबादलव्योमसुव्योमसुव्योमजुसूता॥वृक्षसुबीज
 हेबीजसुब्रह्महेपूतसोबापहेबापसुपूता॥वस्तुविच
 रतएकहीसुंदरतानेसुवानेतोदेषीयेसूता॥६॥भौंमी
 हुचैतन्यअपहुचैतन्यतेजहुचैतन्यहेजुप्रचंडा॥वा
 यूहीचैतन्यव्योमहूचैतन्यशब्दहूचैतन्यपिंडब्रह्मांडा
 ॥हेमनचैतन्यबुद्धिहूचैतन्यचित्तहूचैतन्यआहीउ
 ढंडा॥जोकछूनामधरेसोईचैतनचेतनसुंदरब्रह्मअ
 षंडा॥७॥एकअषंडितब्रह्मविराजतनामजुदोकरि
 विस्वकहावे॥एकईग्रंथपुरानबषानतएकईदतव
 सिष्ठसुनावे॥एकईअर्जुनउद्धवसौंकहीकछरुपा
 करीकेसमुजावे॥सुंदरद्वैतकछूमतिजांनहूएकई

व्यापकवेदवतावि॥८॥ ॥छंदमनोहरा॥ ॥सिष्यपु
 लेगुरुदेवगुरुकहेपुछसीष्यमेरेएकसंसयहेकौनपु
 छेअबही॥तूमकह्योएकब्रह्मअजहूमेकहूएकएक
 तोअनेकताकौइहतोअमसबही॥अमईहकोनको
 हेअमहिकोअमअयोअमहिकोअमकैसेतुनजानेक
 बही॥कैसेकरिजांनोअभूगुरुकहेनिश्चेधरीनिश्चेए
 सेजांन्योअबएकब्रह्मतबही॥९॥ब्रह्महेठोरकोठोरदू
 सरोनकोउऔरबस्तूकोविचारकियेवस्तूपहिचानिये
 ॥पंचततीनगूनविस्तरेविविधभांतिनामरूपजहांल
 गैमिथ्यामायामानीये॥सेषनागआदिदेकेवैकुण्ठगौ
 लोकपुनीबचनविलाससबभेदअमभांनिये॥नतो
 कोउउरजोनसूरजोकहोसोकोनसुंदरसकलएहउबा
 वाईजांनिये॥१०॥प्रथमहीदेहमेतेबाहेरकोचोकी
 पखोइंद्रियव्यापारसुषसत्यकरिजांन्योहै॥कोनउस
 जोगपाईसदगुरुसोभेदअईउनउपदेसदेकेभीतर
 कूंआन्योहै॥भीतरकैआवतहिबुधिकोप्रकासअयो
 हुकोनदेहकोनजगतकिनमांनोहै॥सुंदरविचारत
 योउपज्योअद्वैतज्ञानआपकोअधंडब्रह्मएकपहि

५॥ न्योहै ॥ ११ ॥ ॥ हंसालुछंद ॥ ॥ सकल संसार वि
 स्तार कर वरणीयो सर्ग पाताल मतिपुरी भ्रम होहै ॥
 एक ते गीन तगीन तजाई ये सोल गै फेरी करि एक को ए
 कहि गहोहै ॥ एनही एनही एनहिरहें अवसेष सो वेद
 हूकहोहै ॥ सुंदर सही सो विचार कें आपन पो आप मे
 आप कूं आप हिलहोहै ॥ १२ ॥ एक तूं दोय तूं चार तूं पंच
 तूं तत्व ते जगत कियो ॥ नाम अस्तरूप होई बहत विधि
 विस्तरो तुम बिना और को उनहि बियो ॥ रावतूं रंक तूं
 दीन तूं दाइ तूं दोई करी मेल ते लियो दियो ॥ सकल एह
 तुम मांही उपजेष पे कहत सुंदर बडो विप्लव हीयो ॥
 १३ ॥ तोही मे जगत यह तूं ही हे जगत मांही तो मे अरु
 जगत में भिन्नता कहारही ॥ भोमी हीति भाजन अनेक
 विधि नाम रूप भाजन विचार देषे उहे एक हे मही जल
 ते तरंग फेन बुदबुदा अनेक भांति सो उतो विचार ऐक
 वहे जल हे सही ॥ जे ते महापुरुष हे सब को सिद्धांत ए
 क सुंदर अखिल ब्रह्म अंत वेद हे कही ॥ १४ ॥ जे से ईष
 रस की मिठाई भांति भांति भई फेर करी गारे इक्षर स
 हील हनु हे ॥ जे से घृत थो ज के डरा सो बंध जात पुनि

फेरपधरेतें वह ध्रतई रहतु हे ॥ जे से पानी जमी के प
 षांन हू सो देषीयत सो पषांन फेरि पां नी होय के व ह तु
 हे ॥ ते से ही सुंदर य ह जगत हे ब्रह्म मा ही ब्रह्म सो ज
 गत मय वेद सु कहतु हे ॥ १५ ॥ जे से काठ को रितामें पूत
 री बनाय राषी जो विचारी देषीये तो उ हे एक दार हे ॥ जे
 से माला सूत हू की मनी का हू सूत ही के भीतर हू पोयो
 पुनि सूत ही को तार हे ॥ जे से एक स मुद्र के जल ही को ले
 न भयो सो उ तो विचारे पुनि उ हे जल पार हे ॥ ते से ही सु
 दर य ह जगत सो ब्रह्म मय ब्रह्म सो जगत मय या ही नि
 रधार हे ॥ १६ ॥ जे से एक लोह के हथी पार नाना विध
 कीये आदी मध्य अंत एक लोह ई प्रमानीये ॥ जे से एक
 कंचन में भूषन अनेक भये आदी अंत मध्य एक कंच
 न ई जानीये ॥ जे से एक मेन के सवारे नर हाथी हय आ
 दी अंत मध्य एक मेन के बषांनीये ॥ ते से ही सुंदर य ह

॥ १७ ॥ ब्रह्म मे जगत य ह एसी विधि देषीयत जे सी
 विधि देषीयत फूलरी महीर में ॥ जे सी विधि गली म दु
 लीचे में अनेक मांति जे सी विधि देषीयत चूनी उच

॥ जेसी विधि कांगुरे उकोट परि देषीय त जेसी विधि देषी
यत बुद बुदानी रमें ॥ सुंदर कहत लीक हात परि देषीय
त जेसी विधि देषीय त सीतला सरीर में ॥ १८ ॥ ब्रह्म अरु
माया जे सें शिव अरु शक्ति पुनी पुर्ष प्रकृति दो उ कहौ
कें सुनाय हें ॥ पति अरु पतनी ईस्वर अरु ईस्वरी हुना
रायन लक्ष्मी द्वैवचन कहा एहे ॥ जे सें कोई अर्ध नारी
नाटे स्वरी रूप धरे एक बीज ही तें दो उ दालि नाम पाए हें
॥ ते सें ही सुंदर वस्तु ज्यों हे त्यों हिकर सउ मय प्रकार हो
ई आप ही दिया एहें ॥ १९ ॥ ॥ छंद इंद्र विजय ॥ ॥ ब्रह्म
निरीह निरामय निर्गुन नित्य निरंजन और न भासे ॥ ब्र
ह्म अपंडित हे अध उर्धवा ही रसीतर ब्रह्म प्रकासे ॥
ब्रह्म ही सूक्ष्म स्थूल जहां लग ब्रह्म ही साहीब ब्रह्म ही
दासे ॥ सुंदर और कछु मत जांस हू ब्रह्म ही देषत ब्रह्म
त मासे ॥ २० ॥ ब्रह्म हि माही विराजत ब्रह्म हि ब्रह्म वि
नाजिन और ही जानो ॥ ब्रह्म ही कुंजर कीट हू ब्रह्म ही
ब्रह्म ही रंकरु ब्रह्म ही रांनो ॥ काल ही ब्रह्म स्वभाव हू ब्र
ह्म ही कर्म हू जीवरु ब्रह्म बंधानो ॥ सुंदर ब्रह्म विना कछु
नाहीन ब्रह्म ही जानी सबे स्रम मानो ॥ २१ ॥ आदि हू तो

सोई अंतहि हे पुनि मध्य कहा कछू और कहावे ॥ कार
 न कार जना मधरे पुनि कारज कारन माही समावे ॥ कारज
 देषि भयो बिच विभ्रम कारन देषि विभ्रम बिलावे ॥ सुं
 दर या निश्चे अमि अंतर द्वैत गए फिरि द्वैत न आवे ॥ २२
 ॥ ॥ छंद मन हर ॥ ॥ ब्रह्म अरु माया के तो माथे नही
 शृंग है द्वैत करि देषे जब द्वैत ही दिषाई देत एक करि देषे
 तब उहे एक अंग हैं ॥ सूर्ज को देषे जब सूर्ज प्रकासर हो
 किर्ण को देषे तो किर्ण नाना रंग हैं ॥ भ्रम जब भयो तब मा
 या एसो नाम धर्यो भ्रम के गए तें एक ब्रह्म सर्व गहें ॥ सुं
 दर कहत या की द्रष्टि हू को फेर भयो ब्रह्म अरु माया के
 तो माथे नही शृंग है ॥ २३ ॥ ओत्र कछू और नाही नेत्र क
 छू और नाही नासा कछू और नाही रसनान और है ॥ त्व
 क कछू और नाही वाक् कछू और नाही हाथ कछू और
 नाही पावन की दोर है ॥ मन कछू और नाही बुधिकछू
 और नाही चित्त कछू और नाही अहंकार तोर है ॥ सुंद
 र कहत एक ब्रह्म विना और नाही आप ही में आप व्या
 पर हो सब ठोर है ॥ २४ ॥ ॥ इति अद्वैत ज्ञान को
 अंग समाप्तः ॥ ॥ अंग ३२ ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥

अथ जक्त तिथ्या को अंग प्रारंभः ॥ ॥ छंद मनोहर ॥
जगत को नाम सुनी जगत सुलायो हे कीयेन विचार क
छू मन कपरी हे कान धारी आई सुनिकरि डरि विषया
यो हे ॥ जे से को उ अ न छ तो अ से ही बुला दयत वार वीत
गई पर को उ न ही आयो हे ॥ वेद ह्रुवर निके जगत त रुठा
ढो कीयो अंत पुनि वेद जर मूल ते उठा यो हे ॥ ते से ही सुंद
रया को कोइ एक पावे से द जगत को नाम सुनि जगत सु
लायो हे ॥ १ ॥ अ से सोई अज्ञान कोई आय के प्रगट भयो दि
व्य द्रष्टि दूर गई देषे चाम द्रष्टि कौं ॥ जे से एक आर सी सटा
ई हाथ माहीर हे स सुषन देषे फेर फेर देषे प्रष्टि कौं ॥ जे
से एक व्यौं म पुनि वादर सौं छा यर त्यों व्यौं मन ही देषत
देषत बहू वृष्टि कौं ॥ ते से एक ब्रह्म ही विराज मान सुंदर
हे ब्रह्म कौं न देषे को उ देषे सब भृष्टि कौं ॥ २ ॥ अ न छ तो ज
गत अज्ञान ते प्रगट भयो जे से कोई बाल कवे ताल देषी
ड स्यो हे ॥ जे से कोई स्वपने में दाव्यो हे अथारे आया सु
ष ते न आवे बोल अ से सो दुःष प स्यो हे ॥ जे से अंधी पारी
रे न जे वरी न जनें ता ही आप ही ते साप मानी भय अति
क स्यो हे ॥ ते से ही सुंदर एक ज्ञान के प्रकास बिनु आप दुः

षपायआयआपपचिमस्योहे॥३॥ब्रह्मईजगतहो
 ईब्रह्मदूररह्योहेमृतकासमाईरहीभांजनकेरूपमां
 हीमृत्युकाकोनाममितिभाजनईगत्योहे॥कनकस
 माईत्योहीहोईरह्योआभूषनकनककहेनकोउआ
 भूषनकह्योहे॥बीजहूसमाईकरिव्रषहोईरह्योपुनि
 वृषहीकौंदेषीयतबीजनहीलह्योहे॥सुंदरकहतयह
 योहीकरिजांनोसबब्रह्मईजगतहोईब्रह्मदूरिरह्योहे
 ॥४॥कहतहेदेहमाहीजीवआईमिलिरह्योकहांदेह
 कहांजीववृथाचूकपस्योहे॥बूडवेकेडरतंतरनिकोउ
 पायकरेअसेंनहीजानेयहमृगजलभस्योहे॥जेवरी
 कोसापजेसेंसीपविषेरूपोजानीओरकोओरहीदेषी
 योहीभ्रमकस्योहे॥सुंदरकहतयहएकईअषंडब्र
 ह्मताहीकौंपलटकेजगतनामधस्योहे॥५॥ ॥

इतिजक्तमिथ्याकोअंगसमाप्तः॥॥अंग३३॥६॥
 ॥अथआश्वर्जकोअंगप्रारंभः॥॥छंदमनोहर॥
 ॥वेदकोविचारसोईसनकेसंतनसुःषआपहूविचा
 रकरिसोईधारियतुहे॥जोगकीजुगतिजांनिजग
 तेउदासहोईसंन्यमेंसमाधिलाईमनभारीयतुहे॥

असेअसेकरतकरतकेतेदिनबीतेसुंदरकहतअ
 जहूविचारीयतुहे॥ कारोहीनपीरोनतोतातोहीन
 सीरोकछूहाथनपरततातेहाथजारीयतुहे॥१॥म
 नकोंअगमअतिवचनयकीतहोतबुद्धिहूविचार
 करिबहूषंडियतुहें॥अवननसुनेताहीनेनहनदे
 पेताहीरसनाकोरससबरसछांडियतुहें॥तुकको
 स्पर्सनाहींध्रानकोनविषेहोईपगनिहूकरिजितति
 तहींडाईयतुहें॥सुंदरकहतअतिसूक्ष्मस्वरूपक
 छूहाथनपरततातेहाथमीडीयतुहे॥२॥गुफाकों
 संवारतहेआसनहूमारिकरिप्रानहीकौंधारधारना
 कसीठीयतुहें॥इंद्रनिकोंघेरकरिमनहूकोंफेरपुनी
 त्रकुटीमेंहेरहेरहीयोचीटीयतुहें॥सबछटिकाय
 पुनीसुन्यमेंसमायतहांसमाधिलगाईकरिआं
 षमीटीयतुहें॥सुंदरकहतहमओरउकीयेउपाए
 हाथनपरततातेहाथमीटीयतुहें॥३॥बोलेहीन
 मौनधरेबैठेहेनगौनकरेजागेहीनसोवेसोतोदूर
 हेनसीरोहे॥आवेहीनजाईनतोथिरअकुलातपु
 निभूषोईनघातकछूतातोहीनसीरोहे॥लेनहेन

देतकेछूहेतनकूंहेतपुस्यामहीनस्वेतपुनीरातो
 हीनपीरोहे॥दूवरोनमेढोकछुलांबोहीनछोटोता
 तेसुंदरकहेतकहाकाचहीनहीरोहे॥४॥भूमीही
 नआपनतोतेजहीनतापनतोवायूहीनव्योम
 नतोपंचकोपसारोहें॥हाथहीनपावनतोनेनवे
 नभावनतोरंकहीनरावनतोवृधहीनवारोहे॥
 पिंडहीनप्रांननतोजाननअजानतोबंधनिर्बान
 नतोहरबोनभारोहे॥द्वैतनअद्वैतनतोभीतन
 अभीतनातोसुंदरकह्योनजाईमिल्योहीनन्या
 रोहे॥५॥ ॥छंदद्वंद्वविजय॥ ॥पापनपुंन्य
 नस्थूलनसून्यनबोलेनमौननसोवेनजागे॥
 एकनदोईनपुरुषनजोईकहेकहाकोईनपी
 छेनआगे॥वृद्धनबालनकर्मनकालनद्रुस्व
 विलासनऊफेनभागे॥बंधनमोक्षअप्रोक्ष
 नप्रोक्षनसुंदरहेनअसुंदरलागे॥६॥तत्वअ
 तत्वकह्योनहीजातजुसुन्यअसुन्यउरेनपरेहे
 ॥जोतिअजोतिनजांनिसकेकोऊआदीनअंत
 जीवेनमरेहे॥रूपअरूपकछूनहिदीसतमेद

अमेदकरे नहरेहे ॥ सुद्ध असुद्ध कहै पुनि कौन जु
 सुंदर बोलै नमौ न धरेहे ॥ ७ ॥ षो जत षो जत षो
 जि गये पुनि षो जत हे अरु षो जि हे अने ॥ गावत
 गावत गाय गरहे बहू गावत हे अरु गाय हे गाने दे
 षत दे षत दे षिरहे सब दीसे नही कछू ठोर विकाने
 ॥ बूजत बूजत बूजिके सुंदर हेरत हेरत हेर हिराने
 ॥ ८ ॥ पिंड मे हे पुनि पिंड लिपे नही पिंड परे पुनि लौ
 हिर हावे ॥ श्रोत्र मे हे परि श्रोत्र सुने नही द्रष्टि मे हे
 परि द्रष्टि न आवे ॥ बुद्धि मे हे परि बुद्धि न जानत चि
 त्त मे हे परि चित्त न पावे ॥ वाब्द मे हे परि वाब्द थक्यो
 कहि राब्द हू सुंदर दूर बतावे ॥ ९ ॥ भोमी हू ते से ही
 आपहु ते से ही तेज हू ते से ही ते से ही पोना ॥ व्योम
 हू ते से ही आही अषंडित ते से ही ब्रह्म रत्यों परि
 भोना ॥ देह संजोग विजोग भयो तब आयो सो
 कौन गयो तोहि कौना ॥ जो कहीं ये तो कहै न बने
 कछू सुंदर जानी गही सुखे मोना ॥ १० ॥ एक ही ब्र
 ह्म रत्यों भर पूरितो दुसरो कौन बनावन हारो ॥ जो
 कोई जीव करे परमान तो जीव कहा कछू ब्रह्म तेन्या

सुंदरविलास

रो॥ जो कहें जीव मथो जगदीस ते तोर विमांही क
 हांको अंधे रो॥ सुंदर मोन गही यह जान के कोन
 हूमांतिन होत निधारी॥ ११॥ जो हम षोज करे अ
 षि अंतर तो ऊह षोज बुरे ही विरुवे॥ जो हम बा=
 हीर कौं उठि दोरत तो कछू बाहीर हाथ न आवे॥ जो
 हम काहू कौं पूछत हें पुनि सोई अगाध अगाध बत
 वे॥ ताही ते को उन जानि सके तिही सुंदर कोन ही ठो
 र बत आवे॥ १२॥ कोन कहें उस की सुषवाते नैन न वेन
 न चैन न आसन वासन स्वासन प्यासन याते॥ सी
 तन घां मन ठोर न ठामन पुर्षन वामन मातन ताते
 ॥ रूपन रेषन शेष अशेषन स्वैतन पीतन स्यां मन
 राते॥ सुंदर मोन गही सिध साधक कौन कहें उस
 की सुषवाते॥ १३॥ वेद थके कहीतं त्रथ के कहीग्रं
 थ थके नि स वा सर गाते॥ से श थ के सब ग्रंथ थ के
 पुनि षोज कीयो बहूमांति विधाते॥ पीर थ के पुनि
 मीर थ के पुनि धीर थ के बहूबोल गिराते॥ १४
 न गही सिध साधक कौन कहें उस की सुषवाते॥ १५
 ॥ जो गिथ के कही जैन थ के ऋषिताप सथ किरहे

फलपाते॥ न्यासीथकेवनवासिथकेजुउदासी
 थकेवहूफेरफिराते॥ शेषमसार्द्धकओरउला
 र्द्धकथाकीरहेमनमेसुसकाते॥ सुंदरमोनगही
 सिधसाधककोनकहेउसकीसुःखवाते॥ १५॥
 ॥ इतिआश्वजकोअंगसमाप्तः॥ ॥ अंग ३५॥
 ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥
 इतिश्रीसुंदरदासजीकृतसुंदरविलासग्रंथस
 माप्तः॥ श्रीलुणार्पणमस्तु॥ ॥ शुभंभवतु॥

॥ सुंदरविलासका अंग और सब संवैया की टीप ॥

अंग संवैया	अंग संवैया	अंग संवैया	अंग संवैया
१ अंग २७	१० अंग ५	१९ अंग ६	२८ अंग ४
२ अंग ३६	११ अंग २६	२० अंग ३१	२९ अंग ३२
३ अंग २६	१२ अंग २३	२१ अंग १३	३० अंग १४
४ अंग ११	१३ अंग ६	२२ अंग ३०	३१ अंग ४
५ अंग १३	१४ अंग १४	२३ अंग १८	३२ अंग ५
६ अंग १२	१५ अंग ८	२४ अंग ३७	३३ अंग २४
७ अंग १३	१६ अंग ७	२५ अंग १२	३४ अंग ५
८ अंग ५	१७ अंग ४	२६ अंग २६	३५ अंग १५
९ अंग ६	१८ अंग १०	२७ अंग २१	१०३
१४९	१०३	१९४	
		एकंदर	संख्या ५५९

मंबई मो डोसाभाई होर मोजीवाडियाये ओं यापो
तनारामवाडी आगलनाज्ञानसागरछापखाना

